'ग्यारहवां अंक—2022'

आकाशवाणी समाचार
ALL INDIA RADIO NEWS

आकाशवाणी समाचार भारती

भीकाजी कामा

बादल गुप्ता

बेनॉय कृष्णा बसु

मातंगिनी हाजरा

तिरोत सिंह

लक्ष्मी सहगल

आजादी के भूले-बिसरे नायक

अनुराग सिंह ठाकुर
ANURAG SINGH THAKUR

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
सूचना एवं प्रसारण और
युवा कार्यक्रम व खेल
भारत सरकार
MINISTER
INFORMATION & BROADCASTING AND
YOUTH AFFAIRS & SPORTS
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी, नई दिल्ली हिंदी गृह पत्रिका 'आकाशवाणी समाचार भारती' के 11 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

वैसे तो प्रभाग 'आजादी का अमृत महोत्सव' पर कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है, लेकिन उन कार्यक्रमों को गृह पत्रिका के माध्यम से शब्दांकित करने का प्रयास भी किया जाए, ताकि इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह गए स्वतंत्रता सेनानियों को वर्तमान पीढ़ी से अवगत कराया जा सके।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

(अनुराग सिंह ठाकुर)

आत्मनिर्भर भारत

MAKE IN INDIA

KHELO INDIA

गौरव द्विवेदी आई.ए.एस.
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

Gaurav Dwivedi IAS
Chief Executive Officer

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती | PRASAR BHARATI

संदेश

यह अत्यंत सुखद है कि समाचार सेवा प्रभाग अपनी गृह पत्रिका 'आकाशवाणी समाचार भारती' के 11वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

हम आज़ादी के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं, मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका में सुरूचिपूर्ण एवं उत्कृष्ट पठनीय सामग्री के साथ-साथ गुमनाम सेनानियों की गाथा की जानकारी भी उपलब्ध होगी।

राजभाषा के सतत प्रचार-प्रसार एवं विकास में समाचार सेवा प्रभाग की अहम भूमिका रही है। निःसंदेह पत्रिका में विविध रचनाओं का संकलन रचनाधर्मिता दर्शाता है। मैं आशा करता हूँ कि 'आकाशवाणी समाचार भारती ' पत्रिका हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में सहायक होगी और कर्मचारियों अधिकारियों को प्रेरित करेगी। मैं पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस प्रकाशन हेतु बधाई देना चाहूंगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(गौरव द्विवेदी)

मयंक कुमार अग्रवाल आईआईएस
महानिदेशक
Mayank Kumar Agrawal, IIS
Director General

सत्यमेव जयते

दूरदर्शन
Doordarshan

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि समाचार सेवा प्रभाग हिंदी गृह पत्रिका 'आकाशवाणी समाचार भारती' के 11वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक हिंदी ने अनेक महत्वपूर्ण पड़ाव पार किए हैं । हिंदी को भारतीय चिंतन और संस्कृति का वाहक भी माना गया है। हिंदी जन आंदोलनों की भाषा रही है अर्थात हिंदी एक महत्वपूर्ण संपर्क भाषा है।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी पत्रिका में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' की कड़ी में उन स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन को उजागर करने का प्रयास किया गया है, जिनका आज़ादी की लड़ाई से तो गहरा नाता था, परंतु वे इतिहास के पन्नों में कहीं सिमट कर रह गए।

प्रभाग की इस पत्रिका में उन्हें शामिल करना एक प्रशंसनीय प्रयास है ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं ।

मयंक
(मयंक कुमार अग्रवाल)

आकाशवाणी

MASK-UP INDIA

डॉ० वसुधा गुप्ता
महानिदेशक (समाचार)

DR. VASUDHA GUPTA
DIRECTOR GENERAL (NEWS)

सत्यमेव जयते

समाचार सेवा प्रभागः आकाशवाणी

News Services Division: All India Radio

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

संदेश

इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के कारण सम्पूर्ण विश्व में पलक झपकते ही सूचनाओं का प्रसार हो जाता है। आकाशवाणी का समाचार सेवा प्रभाग भी देश-विदेश की सूचना देश के दूर-दराज स्थित लोगों तक पहुंचाता है और अपने देश की जानकारी विभिन्न बुलेटिनों द्वारा विदेशों में स्थित भारतीयों तक भी पहुंचाता है। प्रभाग अपने हिंदी बुलेटिनों द्वारा अपने श्रोताओं को करंट अफेयर्स, विशिष्ट अतिथियों से वार्ता तथा विभिन्न उपलब्धियों से अवगत कराता है। समाचार सेवा प्रभाग हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं व बोलियों में प्रसारित बुलेटिनों के माध्यम से लोगों तक अद्यतन सूचनाएं उपलब्ध कराता है। प्रभाग हिंदी समाचारों द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार वर्षों से करता आ रहा है। गृह पत्रिका 'आकाशवाणी समाचार भारती' का प्रकाशन इसी दिशा में बढ़ते कदम हैं। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर प्रभाग द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को पत्रिका में कलमबद्ध किया गया है और देश में हुई प्रगति के सोपान भी प्रस्तुत किए गए हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

(डॉ. वसुधा गुप्ता)

आकाशवाणी

भारत का लोक सेवा प्रसारक | India's Public Service Broadcaster

इस अंक में

1.	आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश : जनभागीदारी से सही दिशा में सार्थक कदम - संजीव शर्मा	8
2.	डिजिटल इंडियाः डिजिटली सशक्त समाज और अर्थव्यवस्था - मुकेश कुमार	10
3.	क्रांतिकारी वैचारिकी के सूत्रधार लाला हरदयाल - उमेश चतुर्वेदी	13
4.	स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास से	15
5.	मनगोबिंद चक्रवर्ती	16
6.	बाल गंगाधर तिलक	16
7.	सुभाष चन्द्र बोस	17
8.	कन्हैयालाल मानेकलाल मुंशी	18
9.	बाबू गेनू सैद	18
10.	रानी गैडिनल्यू	19
11.	डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद	19
12.	लाल बहादुर शास्त्री	20
13.	दीनबंधु सर छोटूराम	21
14.	आशापूर्णा देवी	21
15.	मधुलिमये	22
16.	केशबचंद्र सेन	22
17.	हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानी	22
18.	ज्ञानांजन नियोगी	23
19.	विजय ढोंढो पंत तेंदुलकर	23
20.	भदंत आनंद कौसल्यायन	24
21.	भारतेंदु हरिश्चंद्र	24
22.	वीरा पांडिया कट्टाबोम्मन	25

23.	बरींद्र कुमार घोष	25
24.	मौलाना मोहम्मद अली जौहर	26
25.	जोसेफ चेल्ला दुरई कुमारप्पा	26
26.	सावित्री बाई फुले	27
27.	अनंत लक्ष्मण कान्हेरे	27
28.	अश्विनी कुमार दत्ता	28
29.	ठाकुर कवि केसरी सिंह बारहठ	28
30.	देशबंधु गुप्ता	29
31.	इंदिरा प्रियदर्शिनी गांधी	29
32.	वल्लीयप्पन ओलगनाथन चिंदबरम	30
33.	बटुकेश्वर दत्त	30
34.	लाला लाजपत राय	31
35.	विनोबा भावे	31
36.	करतार सिंह सराभा, विष्णु गणेश पिंगले, बख्शीश सिंह, जगत सिंह, सुरैन सिंह, ईशर सिंह और हनुमान सिंह	32
37.	पीलू मोदी	33
38.	बिरसा मुंडा	33
39.	नमक्कल कविग्नार	34
40.	अनंतराव भालेराव	34
41.	मिंजुर भक्तवत्सलम	35
42.	कलोजी नारायण राव	35
43.	पंडित मदन मोहन मालवीय	36
44.	विष्णु दत्तात्रेय चितले	37
45.	गोलमेज सम्मेलन इवेंट	37

46.	मौलाना अबुल कलाम आज़ाद	38
47.	सुरेंद्रनाथ बनर्जी	39
48.	चिदंबरम सुब्रमण्यम	39
49.	पुष्पलता दास	40
50.	पेरिया मारुथु और चिन्ना मारुथु	40
51.	रामेश्वरी नेहरू	41
52.	मंगल दास पकवासा	41
53.	बिपिन चंद्रपाल	42
54.	फिरोज शाह मेहता	42
55.	चितरंजन दास	43
56.	दिल्ली स्टेटमेंट	43
57.	वासुदेव बलवंत फड़के	44
58.	हज़ारा सिंह	44
59.	महेंद्र लाल सरकार	45
60.	जयदेव कपूर	45
61.	क्रांतिकारी साप्ताहिक 'हिंदुस्तान गदर'	46
62.	आचार्य जे बी कृपलानी	46
63.	रानी चेन्नम्मा	47
64.	गणेश घोष	47
65.	वेलिक्काकथु शंकरन अच्युतानंदन	48
66.	निर्मला देशपांडे	48
67.	भूलाभाई देसाई	49
68.	बद्रीदत्त पांडेय कुर्मांचल केसरी	50
69.	कैप्टन अब्बास अली	50
70.	अन्नपूर्णा महाराणा	51
71.	सागरमल गोपा	51
72.	कमला देवी चट्टोपाध्याय	52
73.	जतिंद्र नाथ दास	52
74.	सिस्टर निवेदिता	53
75.	गणेश शंकर विद्यार्थी	54
76.	तेलंगा खड़िया	55
77.	अकबर खान	55
78.	सचिंद्रनाथ सान्याल	56
79.	जाकिर हुसैन	56
80.	दुर्गा देवी वोहरा	57
81.	राममनोहर लोहिया	58
82.	पृथ्वी, पानी, प्रकृति, पर्यावरण अस्तित्व के संरक्षक - रवींद्र कौल 'रवि'	59
83.	डिजिटल इंडिया - गौरव पटवाल	66
84.	प्राकृतिक खेती में अग्रसर हिमाचल प्रदेश -संजीव सुन्द्रियाल	68
85.	गीत रामायणः आकाशवाणी की कालजयी प्रस्तुति - सुनील डबीर	70
86.	भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम : वो शुरुआती दिन - राधाकांत अंथवाल	74
87	कहाँ से लाते हो इतना तेज़, सौंदर्य और अहसास...अमलतास!! - संजीव शर्मा	76
88	उत्तराखंड के बढ़ते कदम - ललिता जोशी	79

आकाशवाणी समाचार भारती

समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी की वार्षिक गृह पत्रिका
'11वां अंक-2022'

संपादकीय विवरण

संरक्षक

डॉ. वसुधा गुप्ता

मार्गदर्शन

श्रीमती मौसुमी चक्रवर्ती

मुख्य संपादक

श्री विवेक गौड़

संपादक

श्रीमती ललिता जोशी

कवर डिजाईन

श्री नीतेश सिंह

सहयोग

श्रीमती नरेश कुमारी

मुद्रक एवं सज्जा

सोनू प्रिंटिंग प्रेस पी लिमिटेड

एस–217, मुनिरका,
नई दिल्ली, 110067

निः शुल्क

आंतरिक वितरण हेतु

संपादकीय

इस वर्ष हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना कर अमृत काल में प्रविष्ट कर चुके हैं। हम इस अमृतकाल के साक्षी बने हैं, क्योंकि हमारी पुरानी पीढ़ियों और पुरखों ने आज़ादी के संघर्ष में स्वयं को होम कर दिया था। तब कहीं जाकर हमें अमूल्य आज़ादी प्राप्त हुई। आज़ादी के इन सिपाहियों को स्वयं की प्रसिद्धी की कोई चाहना ना थी। ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी ने अपने कार्यक्रमों के माध्यम से शब्दाजंलि अर्पित की। इन्होंने निश्छल त्याग की भावना से आज़ादी का संघर्ष किया। इस संघर्ष में अनेकों अनेक सेनानियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इनमें से कुछ के नाम तो इतिहास के पन्नों में सदा के लिए अमर हो गए, लेकिन कुछ ऐसे भी थे जिन्हें कम याद किया गया और कम याद किए जाने वाले सेनानियों में से भी कुछ सेनानी ऐसे रह गए हैं जिनका उल्लेख हमें कहीं मिलता ही नहीं है, लेकिन ये सभी हमारे लिये उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि ख्याति प्राप्त सेनानी। ऐसे महापुरुषों ने भारत के हर कोने, हर गांव में इस संघर्ष के लिए अलख जगाए रखी। माननीय प्रधानमंत्री जी ने लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा कि ''75 साल की हमारी ये यात्रा अनेक उतार-चढ़ाव से भरी हुई है। सुख-दुख की छाया मंडराती रही है और इसके बीच भी हमारे देश वासियों ने उपलब्धियां प्राप्त की हैं। पुरुषार्थ किया है, हार नहीं मानी है, संकल्पों को ओझिल नहीं होने दिया है........ यह हिन्दुस्तान की मिट्टी है। इस मिट्टी में वो सामर्थ्य है जो शासकों से भी भरे सामर्थ्य का एक अंतरप्रवाह लेकर जीता रहा है......उसी का परिणाम है हमने क्या कुछ नहीं झेला। आज देश का सौभाग्य देख रहा हूं कि भारत का जनमन आकांक्षित जन-मन है। ..... 75 साल में संजोए हुए हमारे सपने अपनी ही आंखों के सामने पूरा करने के लिए वो लालायित हैं, उत्साहित हैं।"

अमृतकाल का युवा आज आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रयास कर रहा है। आज हज़ारों युवाओं ने अपने-अपने स्टार्टअप्स के द्वारा स्वयं को और औरों को रोजगार उपलब्ध कराया है। डिजिटल इंडिया, नई शिक्षा नीति, री-न्यूएबल एनर्जी भी देश को नई दिशा देने में प्रयासरत हैं। यह सभी परिणाम हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से ही संभव हुए हैं।

प्रकाशित रचनाओं में विचारों/तथ्यों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश : जनभागीदारी से सही दिशा में सार्थक कदम

संजीव शर्मा, भोपाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत की रणनीति के अनुरूप मध्य प्रदेश देश का पहला राज्य है, जिसने अपना रोडमैप तैयार किया है। 'आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश रोडमैप-2023' तैयार करने के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मुख्य रूप से चार विषयों को शामिल किया। इनमें भौतिक अधोसंरचना, सुशासन, स्वास्थ्य एवं शिक्षा और अर्थव्यवस्था एवं रोजगार शामिल हैं। इनसे संबंधित सुझावों के लिए मध्य प्रदेश में वेबिनार आयोजित किए थे। इनमें नीति आयोग के प्रतिनिधि, सुशासन, स्वास्थ्य, शिक्षा और अर्थव्यवस्था से जुड़े विषय-विशेषज्ञों से चर्चा की गई थी। इन वेबिनार में मिले सुझावों के आधार पर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित प्रशासनिक अधिकारियों की टीम ने 'आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश रोडमैप-2023' की कार्य योजना तैयार की।

आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश का रोडमैप इतना आसान भी नहीं था। छह महीने के लंबे मंथन के बाद राज्य सरकार ने आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश का रोडमैप 2023 तैयार किया है तभी तो रोडमैप जारी करते समय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इसे चुनौती को अवसर में बदलने का रोडमैप बताते हुए कहा कि इससे किसानों की आय दोगुनी होगी और रोजगार के मौके भी बढ़ेंगे। श्री चौहान ने बताया कि आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश को अमलीजामा पहनाते समय निवेश को बढ़ावा देने के साथ कृषि को प्रसंस्करण से जोड़ा जाएगा। आत्मनिर्भर रोडमैप के क्रियान्वयन को लेकर हर तीस दिन में विभागों को रिपोर्ट देनी होगी। इसी तरह, सरकार दीनदयाल उपाध्याय समितियों के माध्यम से रोडमैप के क्रियान्वयन पर गांव-गांव में नजर रखेगी।

आत्मनिर्भर रोडमैप की मुख्य बातों पर नजर डालें तो इसमें चंबल में बनने वाले अटल प्रोग्रेस वे और नर्मदा एक्सप्रेस को विकास का पथ वाहक बनाया जायेगा। इनके दोनों ओर औद्योगिक पार्क विकसित किए जाएंगे। इसी तरह, भोपाल-इंदौर एक्सप्रेस वे को भी आदर्श बनाया जाएगा। आत्मनिर्भरता के इस रोडमैप को क्रियान्वित करने के लिए मध्य प्रदेश के बजट को भी इसी दिशा में केन्द्रित किया जा रहा है। यही कारण है कि बजट में जिसकी जितनी आबादी, उसकी उतनी हिस्सेदारी का फार्मूला धीरे-धीरे लागू किया जा रहा है। सरकार स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण पर भी खास ध्यान दे रही है। राज्य सरकार इस प्रदेश को अपने पैरों पर खड़ा करने और युवाओं के लिए आत्मनिर्भरता के मार्ग प्रशस्त करने के लिए मानसून में पर्यटन को बढ़ाने के लिए बफर में सफर को बढ़ावा देने और अमरकंटक, रामायण सर्किट, तीर्थंकर सर्किट, नर्मदा परिक्रमा, ग्रामीण सर्किट जैसी थीम पर पर्यटन सर्किट विकसित करने की योजना भी बना रही है।

गौरतलब है कि मध्य प्रदेश ने अपनी छः दशक से अधिक की यात्रा के दौरान कई पड़ाव देखे हैं। कभी बीमारू राज्य कहे जाने वाले प्रदेश ने पिछले 15 वर्षों में विकास की करवट ली है। देखा जाए तो मध्य प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने का बीज करीब 15 वर्ष पहले ही रोपित कर दिया था। प्रदेश में हुए सकारात्मक बदलाव और अधोसंरचना के निर्माण प्रदेश अपनी बीमारू राज्य की पहचान से मुक्ति पाकर विकासशील और विकासशील से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है।

आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश का रोडमैप तैयार करने के लिए सबसे पहले सभी वर्गों से जुड़े लोगों की पंचायतें मुख्यमंत्री निवास पर बुलाईं और उनकी समस्याओं को करीब से समझा गया। इसके आधार पर किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण, मेधावी विद्यार्थी योजना, लाडली लक्ष्मी, कन्या विवाह और संबल जैसी योजनाएं लागू कीं गयीं । प्रदेश में महिलाओं और बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान के लिये योजनाएं बनाईं गयी । महिलाओं के पोषण और सुरक्षा पर काम किया। महिलाओं को स्व-सहायता समूह से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया गया । इसका परिणाम यह हुआ कि आज प्रदेश में 3 लाख से अधिक महिला स्व-सहायता समूह कार्य कर रहे हैं, इनमें 38 लाख से अधिक महिलायें जुड़ी हुई हैं और कदम-दर-कदम आत्मनिर्भर हो रही हैं। इन महिलाओं द्वारा तैयार किए गये उत्पादों को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने की समुचित व्यवस्था भी लगातार की जा रही है। इस वित्तीय वर्ष में इन महिलाओं को उनके स्व-सहायता समूहों के माध्यम से 2 हजार 550 करोड़ रुपये का ऋण उपलब्ध कराया जायेगा,

जिसमें 600 करोड़ रुपये का ऋण उन्हें प्रदान किया जा चुका है। प्रदेश में अन्नदाता को आत्मनिर्भरता के रोडमैप का आधार बनाया गया है और खेती को लाभ का व्यवसाय बनाने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। पहले उन्हें 18 प्रतिशत पर मिलने वाले ऋण को घटा कर 0 प्रतिशत पर उपलब्ध कराया गया । कोरोना के संकटकालीन समय में भी राज्य सरकार ने एक लाख 49 हजार 670 करोड़ रुपये की राशि किसानों के खातों में डाली गयी । गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों को पूरा सम्मान देते हुए किसानों के खाते में प्रतिवर्ष 6 हजार रुपये किसान सम्मान निधि के रुप में देने प्रारंभ किये हैं । इसमें मध्य प्रदेश सरकार ने किसान कल्याण योजना के माध्यम से 4 हजार रुपये प्रतिवर्ष जोड़कर कुल 10 हजार रुपये प्रति वर्ष की राशि देना प्रारंभ किया है। इसके अंतर्गत प्रदेश के 74 लाख 50 हजार किसानों को वर्ष 2020-2021 एवं 2021-2022 में मिलाकर लगभग 4500 करोड़ रुपये दिये गए हैं। एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड में 938.84 करोड़ रुपये की राशि हितग्राहियों के खाते में वितरित कर मध्य प्रदेश राशि व्यय करने में भी प्रथम स्थान पर है।

आज मध्य प्रदेश जैविक खेती के मामले में नंबर वन स्थान पर है देश में 40% से अधिक जैविक खेती मध्य प्रदेश में हो रही है। वर्तमान में प्रदेश में 17.31लाख हेक्टेयर में जैविक खेती की जा रही है। जैविक खेती के प्रोत्साहन के लिए 99 हजार हेक्टेयर में भारतीय प्राकृतिक कृषि के क्लस्टर भी क्रियान्वित किए जा रहे हैं। खाद्यान्न फसलें, दलहन, तिलहन, सब्जियाँ तथा बागान वाली फसलों के उत्पादन को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश की एक अन्य धुरी राज्य के छोटे और फुटपाथ पर व्यवसाय करने वाले व्यापारी हैं जो अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में अहम भूमिका निभाते हैं। यह वर्ग कोरोना संक्रमण काल में खासतौर पर प्रभावित रहा है इसलिए उन्हें उनके पैरों पर खड़ा करने के लिए प्रदेश के 6 लाख 20 हजार शहरी एवं ग्रामीण पथ व्यवसायियों को 10-10 हजार रुपये का ब्याज मुक्त ऋण उनकी आजीविका के लिये दिया गया । इन पथ व्यवसायियों के खातों में कोरोना काल में भी एक-एक हजार की आर्थिक सहायता अलग से दी गई है।

आत्मनिर्भर राज्य की कदम बढ़ाते समय नागरिकों की सेहत का ध्यान रखना भी उतना ही जरूरी है जितना कि अर्थव्यवस्था की नब्ज़ पकड़े रहना इसलिए प्रदेश में आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत गरीबों को निःशुल्क इलाज उपलब्ध कराया जा रहा है। इस योजना में प्रदेश में 2 करोड़ 55 लाख से अधिक नागरिकों के आयुष्मान कार्ड बन चुके हैं। सबसे उल्लेखनीय बात यह है आयुष्मान कार्ड बनाने में मध्य प्रदेश पूरे देश में पहले स्थान पर है। इसी दौरान प्रदेश में 20 मेडिकल कॉलेज स्थापित हो चुके हैं। जननी एक्सप्रेस एवं निःशुल्क 108 जैसी सुविधायें भी आम लोगों का सहारा बन रही हैं। कोरोना संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए जनभागीदारी मॉडल के माध्यम से प्रभावी नियंत्रण किया। इस मॉडल से मिले सुखद परिणामों का नतीजा है कि अन्य राज्यों ने भी जनभागीदारी मॉडल को अपनाया। प्रदेश में अब तक कोविड वैक्सीन की 12 करोड़ से ज्यादा डोज लगायी जा चुकी हैं।

देश में पहली बार मध्य प्रदेश ने लोक सेवा गारंटी योजना शुरू की। इसका उद्देश्य नागरिकों को समयबद्ध तरीके से बेहतर सुविधाओं का लाभ प्रदान करना है। मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी से मिले सुखद परिणामों के बाद अन्य राज्यों ने भी इस मॉडल को अपनाया।

आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करना भी किसी भी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी । मध्य प्रदेश में 9 हजार 200 सीएम राइज स्कूल शुरू करने का निर्णय लिया गया है । प्रदेश के प्रमुख मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस की सीटें भी युक्तियुक्त ढंग से बढ़ाई जा रही हैं ।

प्रदेश के युवाओं को रोज़गार देने की दिशा में भी अनेक कदम उठाये गए हैं। प्रदेश में उद्योगों में वर्ष 2019-20 की तुलना में वर्ष 2021 में 40 प्रतिशत अधिक रोज़गार सृजित हुये हैं। पिछले 17 महीने में 880 नई औद्योगिक इकाई प्रारंभ हुई हैं जिनमें 16 हजार 700 करोड़ रुपये का पूंजी निवेश हुआ है तथा 47 हजार से अधिक लोगों को रोज़गार प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार से प्रदेश में 1 हजार 893, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम प्रारंभ हुए हैं, जिनमें 40 हजार लोगों को रोज़गार मिला है। प्रदेश में 13 नये क्लस्टर प्रारंभ होंगे, जिनमें लगभग 25 हजार लोगों को रोज़गार प्राप्त होगा। रोजगार सेतु पोर्टल के माध्यम से युवाओं एवं श्रमिकों के लिये रोज़गार की समुचित व्यवस्था की गयी है। इन सभी प्रयासों का एकमात्र उद्देश्य जनभागीदारी से मध्य प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाना है । उम्मीद ही नहीं विश्वास है कि इन तमाम उपायों से मध्य प्रदेश न केवल आत्मनिर्भर राज्यों में अग्रणी बनेगा बल्कि स्वच्छता की तरह अन्य प्रदेशों के लिए मिसाल भी कायम करेगा।

******

डिजिटल इंडियाःडिजिटली सशक्त समाज और अर्थव्यवस्था

मुकेश कुमार

भारत सरकार द्वारा संचालित, डिजिटल इंडिया देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए शुरू किया गया एक अभियान है। इस अभियान का उद्देश्य सरकारी सेवाओं को उन्नत करके कागजी

कामकाज को कम करना है। डिजिटल भारत के अन्तर्गत करीब ढ़ाई लाख पंचायतों को इससे जोड़ने की योजना है।

डिजिटल भारत कार्यक्रम भारत को समृद्ध करने की दिशा में भारत सरकार की नई पहल है। इसका प्रमुख उद्देश्य देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नये कीर्तिमान गढ़ना है। इस पहल से देश को डिजिटल रुप से सशक्त करना एकमेव लक्ष्य है। वर्तमान युग में आज वही देश आगे है जिसने विज्ञान और तकनीकी को अपने देश की उन्नति का माध्यम बना लिया है। आमतौर पर इसके गुण-दोष को लेकर मंत्रणाएं होती रहती हैं।

डिजिटल भारत के नौ स्तंभ

1) ब्रॉडबैंड सुविधा

डिजिटल भारत के अन्तर्गत करीब ढ़ाई लाख पंचायतों को इससे जोड़ने की योजना है। बीस हजार करोड़ की अनुमानित राशि से ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क को देश भर में फैलाने की योजना वर्ष 2016-2017 में बनाई गयी थी।

2) घर-घर में फोन

भारत में मोबाइल फोन उपयोग करने वाले लोगों ने वर्ष 2014 में 58 करोड़ 10 लाख की संख्या को पार कर लिया था और पिछले एक दशक में मोबाइल फोन उपयोग करने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। ई-मार्केटर के एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में वर्ष 2019 में मोबाइल फोन उपयोग करने वालों की संख्या 80 करोड़ से अधिक आंकी गई थी।

3) सार्वजनिक इंटरनेट उपलब्धता कार्यक्रम - राष्ट्रीय ग्रामीण इंटरनेट मिशन

सार्वजनिक इंटरनेट उपलब्धता कार्यक्रम-राष्ट्रीय ग्रामीण इंटरनेट अभियान के द्वारा सामान्य सेवा केन्द्रों को ग्राम-पंचायतों के माध्यम से सेवा वितरण के लिए बहुआयामी अंत-बिंदुओं के माध्यम से सबके अनुकूल बनाया गया है। सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के माध्यम से लगभग 4,750 करोड़ रुपये की लागत से करीब 1,30,000 से 2,50,000 गांवों तक सार्वजनिक इन्टरनेट सेवा पहुँचाने का लक्ष्य है। साथ ही डाक-घरों को भी बहु-सेवा केंद्र बनाने की योजना है।

4) ई-गवर्नेंस : प्रौद्योगिकी के माध्यम से सुधार

सरकार सरलीकरण और कटौती, ऑनलाइन अनुप्रयोगों, विभागों के बीच विकासशील इंटरफ़ेस, स्कूल प्रमाणपत्र और मतदाता पहचान-पत्र, सेवाओं और प्लेटफार्म के एकीकरण जैसे ऑनलाइन संग्रह का उपयोग सहित लेनदेन में सुधार करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके पेमेंट गेटवे, मोबाइल प्लेटफॉर्म आदि के माध्यम से कारोबारी प्रक्रिया की पुनर्रचना (बीपीआर) करेगी।

5) ई-क्रांति : सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी

इस योजना के अंतर्गत नियोजन, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय समावेशन, न्याय-व्यवस्था और सुरक्षा के क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है। कृषि क्षेत्र में, किसानों के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करके वास्तविक समय की जानकारी, निवेश के ऑनलाइन ऑर्डर (जैसे उर्वरक) और ऑनलाइन नकदी, ऋण, राहत-भुगतान के साथ-साथ मोबाइल बैंकिंग के विकास में बदलेगा।

6) सभी के लिए सूचना

'सभी के लिए सूचना' स्तंभ का उद्देश्य ऑनलाइन जानकारी प्रदान करना और वेबसाइट और दस्तावेजों का निर्माण करना

शामिल होगा। यह सामान्य रूप से खुलेमुक्त डेटा प्लेटफार्म के विकास के साथ-साथ जनता द्वारा और जनता के लिए सूचना की एक आसान और स्वतंत्र पहुंच के रूप में होगा।

7) इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण : 2020 तक नेट ज़ीरो आयात लक्ष्य

भारत में इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा संरचना को मजबूत करने की आवश्यकता है। आने वाले दिनों में इस क्षेत्र में 'नेट जीरो आयात' का लक्ष्य रखा गया है। यह एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य होगा, जिसमें कराधान, प्रोत्साहन, बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था जैसे कई मोर्चों पर समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता होगी और लागत पर होने वाले नुकसान को समाप्त करने का लक्ष्य शामिल होगा।

8) आईटी नौकरियां

इस स्तंभ का उद्देश्य सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नौकरियों के लिए छोटे शहरों और गांवों में लोगों को प्रशिक्षित करना है।

9) प्रारंभिक फसल कार्यक्रम

इसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत सी योजनाएं कार्यान्वित हो रही हैं। इंटरनेट के माध्यम से ग्राम स्तर पर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने की योजना है। फसलों की शीघ्र कटाई कार्यक्रम में सरकारी मंच के द्वारा शुभकामनाएं भेजना, केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों के कर्मचारियों की बायोमैट्रिक उपस्थिति दर्ज कराना अनिवार्य किया गया है।

डिजिटल इंडिया क्या है?

अब प्रश्न यह उठता है कि डिजिटल इंडिया क्या है? डिजिटल इंडिया का अर्थ '**डिजिटल भारत**' होता है। **डिजिटल इंडिया कार्यक्रम** भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक पहल है जिसका उद्देश्य सभी छोटे और बड़े सरकारी विभागों को **डिजिटल** रूप देकर उनकी गति को और तेज करना है।

डिजिटल इंडिया अभियान का उद्देश्य

महत्वाकांक्षी '**डिजिटल इंडिया**' कार्यक्रम भारत को **डिजिटल** सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए निर्धारित किया गया है। डिजिटल इंडिया की प्रकृति रूपांतरकारी है व इससे सुनिश्चित होगा कि सरकारी सेवाएं नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध हों।

शुरुआत

इस अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 1 जुलाई 2015 को की गयी। डिजिटल इंडिया अभियान के 1 जुलाई, 2021 को 6 वर्ष पूरे होने पर इसकी अब तक कि यात्रा, सफलता और संघर्ष से जुड़े तमाम मुद्दों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिये अपनी बात रखी। प्रधानमंत्री ने इस योजना का लाभ उठाने वाले देश के अलग-अलग राज्यों में रहने वाले लाभार्थियों से उनके अनुभव भी जाने।

प्रधानमंत्री मोदी के संवाद की प्रमुख बातें:

श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि डिजिटल इंडिया यानी पारदर्शी, भेदभाव रहित और भ्रष्टाचार पर चोट है। मोदी ने कहा कि शिक्षा का डिजिटल होना आज समय की मांग है। अब हमारी कोशिश है कि गांव में सस्ती और अच्छी इंटरनेट कनेक्टिविटी मिले। सस्ते मोबाइल और दूसरे माध्यम उपलब्ध हों ताकि गरीब से गरीब बच्चा भी अच्छी पढ़ाई कर पाएं।

डिजिटल इंडिया ने वन नेशन, वन एमएसपी की भावना को भी साकार किया है। ये दशक, डिजिटल टेक्नॉलॉजी में भारत की क्षमताओं को, ग्लोबल डिजिटल इकॉनॉमी में भारत की हिस्सेदारी को बहुत ज्यादा बढ़ाने वाला है। इसलिए बड़े-बड़े एक्सपर्ट्स इस दशक को 'भारत के टैकेड' के रूप में देख रहे हैं।

डिजिटल इंडिया के बारे में श्री मोदी ने कहा कि डिजिटल इंडिया यानी पारदर्शी, भेदभाव रहित और भ्रष्टाचार पर चोट। डिजिटल इंडिया यानि समय, श्रम और धन की बचत। डिजिटल इंडिया यानि तेजी से लाभ और पूरा लाभ। डिजिटल इंडिया यानि न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन।

कोरोनाकाल

कोरोनाकाल में डिजिटल इंडिया अभियान देश के कितना काम आया है, ये भी हम सभी ने देखा है। जिस समय बड़े-बड़े समृद्ध देश, लॉकडाउन के कारण अपने नागरिकों को सहायता राशि नहीं भेज पा रहे थे, भारत में हजारों करोड़ रुपये, सीधे लोगों के बैंक खातों में भेजे जा रहे थे।

किसान और डिजिटल इंडिया

किसानों के जीवन में भी डिजिटल लेनदेन से अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत 10 करोड़ से ज्यादा किसान परिवारों को 1 लाख 35 करोड़ रुपये सीधे बैंक अकाउंट में जमा किए गए हैं।

कोविन ऐप

आरोग्य सेतु ऐप के माध्यम से कोरोना संक्रमण को रोकने में बहुत मदद मिली है। टीकाकरण के दौरान दुनिया के कई देश कोविन ऐप में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। वे चाहते हैं कि उनके देश में भी इस योजना का लाभ मिले।

कोविड काल और डिजिटल इंडिया

प्रधानमंत्री ने कहा कि कोविड काल में हमने अनुभव किया कि डिजिटल इंडिया ने हमारे काम को कितना सरल बना दिया। कल्पना कीजिए कि अगर डिजिटल कनेक्टिविटी नहीं होती तो कोरोना में क्या स्थिति होती। डिजिटल इंडिया मतलब सबको अवसर, सबको सुविधा, सबकी भागीदारी।

बलरामपुर उत्तर प्रदेश की सुहानी साहू ने शेयर किया दीक्षा प्रोग्राम

सुहानी से प्रधानमंत्री ने पूछा दीक्षा प्रोग्राम के बारे में कैसे पता चला? कक्षा पाँचवीं में पढ़ने वाली सुहानी ने बताया कि उसे यह जानकारी वाट्सऐप लिंक से मिली।

प्रधानमंत्री ने सुहानी की शिक्षक प्रतिमा से पूछा-दीक्षा उपयोग कैसे कर रही हैं? शिक्षक ने बताया कि बिना नेटवर्क के भी कंटेंट्स को डाउनलोड करके इसका देश में कहीं भी इस्तेमाल कर सकते हैं। अगर लिंक नहीं मिला, तो पाठ्य पुस्तकों में क्यूआर कोड के जरिये भी स्कैन कर सकते हैं। दीक्षा पर 3200 कोर्स हैं। इसमें हेल्प और सपोर्ट के लिए एक ऑप्शन है, जिससे समस्या का समाधान हो जाता है।

प्रधानमंत्री ने महाराष्ट्र के हिंगोली के रहने वाले प्रह्लाद बोरघड़ से बात की। प्रह्लाद ने डिजिटल इंडिया के जरिये किसानों को मिली सुविधाओं के बारे में बताया। प्रधानमंत्री ने कहा, "ई-नाम पोर्टल इसलिए बनाया गया है ताकि किसान देश की सभी मंडियों में अपनी फसल का सौदा कर सके। इस पोर्टल पर किसान और व्यापारी बड़ी संख्या में जुड़ रहे हैं।"

प्रधानमंत्री ने बिहार में चम्पारन के रहने वाले शुभम कुमार और उनकी दादी से बातचीत की। यह गांव नेपाल सीमा पर है। शुभम ने बताया कि ई संजीवन ऐप के जरिये वे इलाज के लिए किसी भी डॉक्टर से परामर्श ले पाते हैं। इससे पहले उन्हें अपनी दादी को लखनऊ ले जाना पड़ता था। शुभम ने बताया कि उनके गांव में इंटरनेट तकनीक में काफी सुधार हुआ है।

प्रधानमंत्री ने ई-संजीवनी जैसे टेलीमेडिसिन को लेकर लखनऊ के रहने वाले डॉक्टर भूपेंद्र से भी बात की। भूपेंद्र ने बताया कि जब कोरोना काल आया, तब उन्हें लगा था कि शायद वे मरीजों की सेवाएं नहीं कर पाएंगे। लेकिन ई-संजीवनी ने यह समस्या दूर की। अब वे दूरदराज गांवों के भी मरीजों को देख पा रहे हैं। देश में आज 50 हजार से अधिक बीपीओ खुल गए हैं। आने वाले समय में देश के घर-घर तक, गांव-गांव तक डिजिटल सेवाएं मिलेंगी। 6 साल डिजिटल इंडिया के पूरे हो गए। गरीबों के बैंक खाते खोले गए। कल्याणकारी योजनाओं के पैसे सीधे गरीबों के बैंक खाते में डाले हैं। आज डिजिटल कृषि के जरिए किसान अपनी फसल बेच रहे हैं।

अंत में हम यह कहेंगे कि सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से सार्वजनिक सेवाओं की पूरी व्यवस्था को बदलने के लिए, भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया कार्यक्रम सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए जारी किया है। लोगों के बेहतर विकास और वृद्धि के लिए बदले हुए भारत के लिए **डिजिटल इंडिया** बहुत ही प्रभावी योजना है। सुशासन और अधिक नौकरियों के लिए भारत को **डिजिटल** विस्तार देना योजना का लक्ष्य है। **डिजिटल इंडिया** के तहत सभी सरकारी सुविधाओं को इंटरनेट से जोड़ने का काम शुरू किया गया है।

****

क्रांतिकारी वैचारिकी के सूत्रधार लाला हरदयाल

उमेश चतुर्वेदी

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास की कुछ घटनाओं को न तो वैसा प्रचार मिला, ना ही वैसी पहचान मिली, जिसकी वे अधिकारी थीं। स्वाधीन भारत में उनको वैसा महत्व भी नहीं दिया गया, जितनी वे महत्वपूर्ण थीं। अमेरिकी धरती पर गदर पार्टी की स्थापना मामूली बात नहीं थी। लेकिन ना सिर्फ यह घटना, बल्कि इसके संस्थापक लाला हरदयाल भारतीय इतिहास की उपेक्षा का शिकार रहे। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में कांग्रेस के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। बेशक स्वाधीनता उसकी ही अगुआई में हासिल हुई। भारतीय इतिहास के सामान्य विद्यार्थी भी जानते हैं कि कांग्रेस ने 1929 में पहली बार पूर्ण स्वाधीनता की मांग लाहौर में की थी। रावी नदी के किनारे हुए उस कांग्रेस सम्मेलन में जवाहर लाल नेहरू पार्टी के अध्यक्ष चुने गए थे। इसके पहले तक कांग्रेस औपनिवेशिक स्वाधीनता की ही मांग कर रही थी। औपनिवेशिक स्वाधीनता कुछ वैसी ही, जैसी कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की है। जिनका राष्ट्रप्रमुख ब्रिटेन के मुकुट यानी राजा या रानी द्वारा चुना जाता है। जबकि अपनी सरकारें चुनने के लिए वे राज्य स्वाधीन हैं। कांग्रेस ने इसी अधिवेशन में पहली बार पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया था।

लेकिन कितने लोग जानते हैं कि भारत की पूर्ण स्वाधीनता की मांग इससे सोलह साल पहले विदेशी धरती पर किसी भारतीय रणबांकुरे ने की थी। तब उस नौजवान की उम्र महज 29 साल थी। अमेरिका की सैन फ्रांसिस्को के एस्टोरिया पर लाला हरदयाल ने सोहन सिंह भाकना के साथ मिलकर 15 जुलाई 1913 को की थी। इस पार्टी का उद्देश्य भारतीय धरती से ब्रिटिश शासन को जड़ से उखाड़ फेंकना था। इस पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष सरदार सोहन सिंह भाकना थे, जबकि केसर सिंह थथगढ़ को उपाध्यक्ष बनाया गया। इस पार्टी के महामंत्री 29 साल के नौजवान लाला हरदयाल थे। जबकि लाला ठाकुर दास धुरी, संयुक्त सचिव और पण्डित कांशी राम मदरोली कोषाध्यक्ष बनाए गए थे। इस पार्टी को बनाने वालों के दिलों में भारत की स्वाधीनता के प्रति कैसी आग थी, इसे समझने के लिए इस पार्टी के ध्येय वाक्य को देखना चाहिएः

सुरा सो पहचानिये, जो लड़े दीन के हेत।
पुर्जा-पुर्जा कट मरे, कभू न छाड़े खेत॥

यानी वही देवता है, जो दुखियों के लिए लड़े, इस लड़ाई में उसका अंग-अंग भले कट जाए, लेकिन अपने जीते-जी मैदान नहीं छोड़े।

अंग्रेजी राज के विरुद्ध हथियार उठाना गदर पार्टी की नजर में गद्दारी नहीं, महायुद्ध था। गदर पार्टी का कहना था कि वह विदेशी राज के आज्ञाकारी नहीं, घोर दुश्मन है। गदर पार्टी ने गदर शब्द की अद्भुत परिभाषा दी थी। उसका कहना था कि गदर यानी विदेशी राज की घोर दुश्मनी अंग्रेजों की नजर में गद्दारी है। सोहन सिंह भाकना और लाला हरदयाल की अगुआई में गदर पार्टी ने 15 जुलाई 1913 को एस्टोरिया की आरा मिलों में एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें कहा गया कि गदर पार्टी हथियारबंद क्रांति की मदद से अंग्रेज़ी राज से भारत को आज़ाद कर गणतंत्र कायम करेगी।

ऐसी सोच वाले लाला हरदयाल को भारतीय इतिहास ने उस तरह याद नहीं रखा, जैसे उन्हें रखा जाना चाहिए था। गदर पार्टी 'हिंदुस्तान गदर' नाम से उर्दू और पंजाबी में अखबार भी प्रकाशित करती रही। उसके मुख पृष्ठ पर लिखा रहता था, अंग्रेजी राज का कच्चा चिट्ठा। इस पत्र के तेवर का अंदाजा इसी बात से लगाया जाता है कि इसमें प्रकाशित लेखों ने अंग्रेजी राज के खिलाफ बम जैसा प्रभाव डाला। गदर पार्टी के मुख्यालय का नाम युगांतर आश्रम था। भारतीय इतिहास के जानकारों का कहना है कि युगांतर आश्रम से निकले पर्चों ने अंग्रेजी राज को हिलाकर रख दिया। बाद में भारत में सशस्त्र क्रांति के जरिए आजादी प्राप्त करने के लिए भगत सिंह जैसे नौजवान प्रेरित हुए, उनकी प्रेरणा की वजह लाला हरदयाल और श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे नेताओं के ही कार्य रहे।

इतिहासकार मानते हैं कि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को लाला हरदयाल और श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे क्रांतिकारियों के तीन योगदान हैं। इन तीनों योगदानों पर गंभीरता से ना सिर्फ अध्ययन किया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें पाठ्यक्रमों के जरिए विद्यार्थियों को पढ़ाया जाना चाहिए, ताकि वे जान सकें कि जिस आजाद भारत में वे सांस ले पा रहे हैं, सोशल मीडिया के जरिए कुछ भी लिख-बोल रहे हैं, उस आजादी के लिए श्याम जी कृष्ण वर्मा और लाला हरदयाल जैसे क्रांतिकारियों ने कैसा बलिदान दिया है? इतिहासकारों की नजर में विदेशी धरती से भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की अलख जलाने वाले इन क्रांतिकारियों के योगदान हैं,

1. क्रांतिकारी वैचारिकी को पुष्ट करना। इन क्रांतिकारियों ने

अपने कार्यों और साहित्य से भारतीय क्रांति को एक सैद्धांतिक आधार दिया। जिस पर आगे चलकर भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जैसे अनेक क्रांतिकारी प्रेरित हुए और अंग्रेजी राज व्यवस्था के खिलाफ अभियान चलाया।

2. क्रांतिकारियों ने विदेशी धरती पर क्रांति के लिए शक्ति और पूंजी जुटाने का काम किया। लाला हरदयाल ने जर्मनी से दो जहाजों में बंदूकें भर कर बंगाल भेजी थीं, ताकि बंगाल के क्रांतिकारी इसका इस्तेमाल कर सकें। यह बात और है कि मुखबिरी के चलते ये सारी बंदूकें अंग्रेज सरकार ने जब्त कर ली थीं।

3. विदेशी धरती से अंग्रेजी सत्ता को चुनौती इन्हीं क्रांतिकारी नेताओं ने ही दी। वहां से साहित्य छापकर उन्होंने अंग्रेजी राज के अत्याचार को दुनियाभर में पहुंचाया। तब जाकर उस दौर की कथित सभ्य समझी जाने वाली अंग्रेजी सभ्यता के बारे में यूरोप और अमेरिका को पता चल सका।

लाला हरदयाल पढ़ने में बेहद तेज थे। दिल्ली की एक अदालत में उनके पिता रीडर थे। दिल्ली के गुरूद्वारा शीशगंज के पीछे स्थित चीराखाना में उनका जन्म हुआ था। बचपन से ही विद्या व्यसनी लाला हरदयाल ने सेंट स्टीफेंस कॉलेज से संस्कृत में बीए करने के बाद लाहौर विश्वविद्यालय से एमए किया। इसी दौरान उन्हें ऑक्सफोर्ड में पढ़ाई के लिए दो सौ पौंड की छात्रवृत्ति मिली और वे ऑक्सफोर्ड चले गए। लेकिन वहां उनकी भेंट श्याम जी कृष्ण वर्मा, विनायक दामोदर सावरकर और मैडम भीकाजी कामा से हुई और फिर तो उनका विचार बदल गया। विचार बदला तो कैरियर बनाने की बजाय उनकी जिंदगी का ध्येय ही बदल गया। अब वे भारतीय आजादी के रणबांकुरे बन चुके थे। इसी सोच को लेकर वे 1908 में लाहौर लौट आए। हालांकि इसके पहले वे क्रांतिकारी अमीरचंद गुप्त की क्रांतिकारी संस्था में काम करने लगे थे। श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा लंदन में स्थापित इंडिया हाउस में भी उनका आना-जाना हुआ। गांधीजी ने 1920 में हिंदुस्तान में असहयोग आंदोलन शुरू किया। लेकिन यह भी अल्पज्ञात है कि लंदन में देशभक्त समाज बनाकर लाला हरदयाल ने 1907 में ही असहयोग आंदोलन का प्रचार करना शुरू कर दिया था।

बहरहाल भारत लौटने के बाद वे अंग्रेजी दैनिक पंजाबी का संपादन करने लगे। उसमें प्रकाशित लेखों के बाद युवा आकर्षित होने लगे तो उनके खिलाफ अंग्रेजी सरकार ने दमन चक्र चलाया। इसके बाद वे फिर विदेश चले गए। उन्होंने पेरिस में जाकर वंदेमातरम पत्र का संपादन करना शुरू कर दिया। वे पेरिस को अपना केंद्र बनाना चाहते थे। लेकिन वहां पर्याप्त सहयोग नहीं मिला तो वहां से पहले अल्जीरिया गए और फिर भाई परमानंद की प्रेरणा से अमेरिका के होनोलुलू में जाकर वहां से भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के लिए लिखना-पढ़ना शुरू कर दिया और क्रांतिकारी वैचारिकी को बढ़ावा देने में अपना योगदान देने लगे। इसके बाद भाई परमानंद के कहने पर ही कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में जाकर हिंदू धर्म और दर्शन पर व्याख्यान देने लगे। इसके बाद 1912 में वे अमेरिका के स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में हिंदू दर्शन और संस्कृत के ऑनरेरी प्रोफेसर नियुक्त हुए। इसके बाद वे सिखों के बीच जाने लगे और उन्हें भारत लौटकर स्वाधीनता आंदोलन के लिए प्रेरित करने लगे। इससे नाराज अंग्रेज सरकार ने अमेरिका पर दबाव बनाया और उनकी गिरफ्तारी के लिए अमेरिकी पुलिस उन्हें खोजने लगी। लेकिन पुलिस के हत्थे चढ़ने के पहले ही वे स्विटजरलैंड निकल गए। उसके बाद वहां रहकर जर्मनी के साथ मिलकर भारत की स्वाधीनता के आंदोलन में हिस्सेदारी करने लगे। बाद में वे स्वीडन चले गए और वहां के बाद 1927 में फिर लंदन लौट आए। लंदन में ही उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण रचना डॉक्ट्रिन ऑफ बोधिसत्व लिखी, जिस पर लंदन विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि दी। इस बीच उन्हें भारत लौटने के लिए अंग्रेज सरकार पर दबाव बढ़ने लगा। फिर वे अमेरिका चले गए। इस बीच 1938 में अंग्रेज सरकार ने उन्हें भारत लौटने की अनुमति दे दी। लेकिन जब तक वे लौटते, चार मार्च 1939 को फिलाडेल्फिया में कुर्सी पर बैठे-बैठे ही उनकी मृत्यु हो गई। भारत माता सोसायटी के संस्थापक हनुमंत लाल का मानना था कि लाला हरदयाल को जहर दिया गया था।

क्रांतिकारी वैचारिकी के अप्रतिम विचारक लाला हरदयाल ने कई पुस्तकें लिखीं। लेकिन उनकी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक मानी जाती है, हिंट फॉर सेल्फ कल्चर। उनकी प्रमुख पुस्तक युगांतर सर्कुलर को तो एक तरह से अंग्रेज सरकार बम ही मानती रही। उन्होंने शिक्षा पर थॉट्स ऑन एजूकेशन जैसी गंभीर और गवेषणापूर्ण किताब लिखी। ट्वेल्व रिलिजन्स एंड मॉडर्न लाइफ भी उनकी अद्भुत पुस्तक है।

क्रांतिकारी वैचारिकी के सूत्रधार होने के साथ ही लाला हरदयाल खुद भी क्रांतिकारी थे। उनके अंदर संत भी था, लेकिन भारत को आजाद कराने की आग उनमें इतनी गहरी थी कि अंदर का वह संत अकसर पीछे छूट जाता था। भारतीय आजादी का बड़ा श्रेय भले ही अहिंसक आंदोलन को जाता हो, लेकिन यह भी सच है कि अगर लाला हरदयाल जैसे लोगों ने भारत में अंग्रेजी लूट और अत्याचार को दुनिया के सामने नहीं रखा होता तो अंग्रेजी सरकार पर नैतिक दबाव नहीं पड़ता और वह आसानी से भारत को छोड़कर नहीं जाने वाली थी।

******

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास से

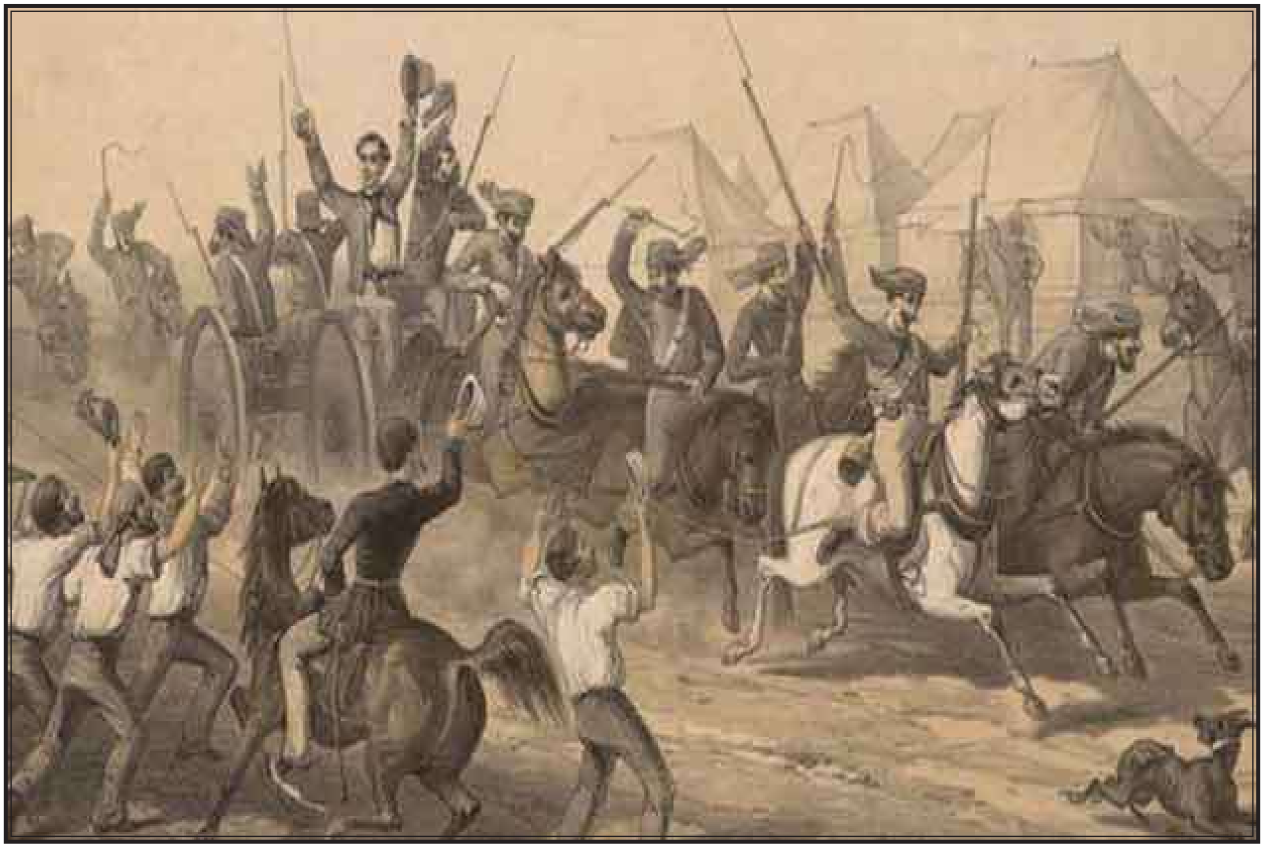

गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए हमारे पुरखों ने मातृभूमि के लिए स्वयं का बलिदान कर दिया। उनके इस बलिदान के कारण आज हम अमृत महोत्सव और अमृत काल के साक्षी बने हैं। ऐसे कई स्वतंत्रता सेनानी इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह गए जिन्हें वो प्रसिद्धी प्राप्त नहीं हो पाई जिसके वे हकदार थे । ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को आजादी के अमृत महोत्सव पर समाचार सेवा प्रभाग ने अपने कार्यक्रमों के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की।

मनगोबिंद चक्रवर्ती

असम के स्वतंत्रता सेनानी मनगोबिंद चक्रवर्ती का जन्म धुबरी जिले के सुदूर सत्रसाल गांव में 21 अप्रैल 1893 को हुआ था। उन्होंने 1921 में महात्मा गांधी के आह्वान पर, अपनी कानून की पढ़ाई छोड़ दी और असहयोग आंदोलन में शामिल हो गये।

मनगोबिंद एक छात्र कार्यकर्ता के रूप में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े। 1919 में कलकत्ता से ग्रैजुएशन करने के बाद वे असम लौटे और अपने गांव में शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में निर्धनों और महिलाओं के उत्थान के लिये काम करने लगे। 1921 में असहयोग आंदोलन से जुड़ने के बाद मनगोबिंद ने कलकत्ता की गलियों में विदेशी वस्त्रों को जलाने का अभियान चलाया और खुद खादी पहनने की शुरुआत की, जिसे उन्होंने आजीवन जारी रखा। स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के कारण उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा।

मनगोबिंद पत्नी के साथ

आजादी के बाद मनगोबिंद ने पिछड़े क्षेत्रों के उत्थान के लिये काम किया। उनके अथक प्रयासों से धुबरी जिले में नौ स्कूल, चार सरकारी औषधालय और दो डाकघरों की स्थापना हुई। मनगोबिदं चक्रवर्ती का निधन 20 अप्रैल 1973 को धुबरी मे हुआ । देश के तत्कालीन राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद उनके दुखी परिवार को टेलीग्राम से संवेदना संदेश भेजने वाले लोगों में पहले थे। महान स्वतंत्रता सेनानी मनगोबिंद चक्रवर्ती को हमारा शत-शत नमन।

******

बाल गंगाधर तिलक

23 जुलाई लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जयंती होती है। अंग्रेजों ने उन्हें "भारतीय अशांति का जनक" कहा। महात्मा गांधी उन्हें "आधुनिक भारत का निर्माता" कहते थे। "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा" यह प्रसिद्ध नारा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने दिया था ।

तिलक का जन्म 1856 में महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में हुआ था। तिलक ने होम रूल आंदोलन, स्वराज और स्वदेशी पर बल दिया। वे इन पहले नेताओं में थे जिन्होंने भाषाई राज्यों के गठन की कल्पना की।

****

सुभाष चंद्र बोस

18 अगस्त, 1945 में समाचार मिला कि नेताजी जिस विमान से जा रहे थे वह ताइवान में ताइहोकु हवाई अड्डे के निकट दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उन्होंने नजदीकी जापानी सैन्य अस्पताल में चोट के कारण दम तोड़ दिया।

सुभाष चंद्र बोस को प्यार से नेता जी कहा जाता था। उनका जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक में हुआ था। उन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से 1919 में स्नातक शिक्षा प्राप्त की और 1921 में इंडियन सिविल सर्विसेज परीक्षा उत्तीर्ण की। कहा जाता है कि बाघ को लंबे समय तक पिंजरे में कैद नहीं रखा जा सकता।

आज़ाद ख्याल सुभाष चंद्र बोस ने चितरंजन दास से प्रभावित होकर सिविल सर्विसेज से त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने अंग्रेजों की दासता करने के बजाय अपने देश की आज़ादी के लिये कार्य करने का रास्ता चुना।

बोस ने स्वराज का समर्थन किया। उनका विचार था कि आज़ादी दी नहीं जाती बल्कि ली जाती है। इसलिए उन्होंने अपनी मातृभूमि को विदेशियों के चंगुल से मुक्त कराने की रणनीति बनाई। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

1939 में दूसरा विश्व युद्ध शुरू होने के बाद नेता जी ने जन आंदोलन शुरू किया। इसके तहत उन्होंने देशभर के लोगों को एकजुट करना शुरू कर दिया। बोस की अपील पर लोगों ने जबरदस्त उत्साह दिखाया इसलिए अंग्रेजों ने उन्हें तुरंत गिरफ्तार कर लिया। उन्हें घर में नजरबंद कर दिया गया। इस दौरान बोस ने नाटकीय ढंग से वहां से निकलने की योजना बनाई। उन्होंने दाढ़ी बढ़ा ली और पठान के वेश में घर से निकल गए ताकि अंग्रेज उन्हें पहचान न सकें। 19 जनवरी, 1941 की रात बोस पहले बिहार गए और वहां से पेशावर के रास्ते काबुल, मास्को और रोम होते हुए आखिरकार जर्मनी पहुंच गए। जर्मनी में उनकी मुलाकात हिटलर से हुई। उन्होंने बर्लिन में फ्री इंडिया सेंटर की स्थापना की और आज़ाद हिंद रेडियो की शुरुआत की।

बोस 1943 में दक्षिण पूर्व एशिया के लिए निकल गए और आज़ादी का संघर्ष जारी रखा। उन्होंने आज़ाद हिंद फौज को नया रूप दिया। नेताजी ने गांधी, नेहरू और मौलाना आज़ाद के नाम पर आज़ाद हिंद फौज की रेजिमेंट के नाम रखे। आज़ाद हिंद फौज में एक रेजिमेंट ऐसी भी थी जिसमें केवल महिलाएं थीं। इसका नाम झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के नाम पर रखा गया। नेताजी के नेतृत्व में आज़ाद हिंदी फौज में युद्ध बंदी और हजारों आम नागरिक शामिल हुए।

बोस जापानी सेना की सहायता से ब्रिटिश साम्राज्य से लड़कर भारत को आज़ाद कराना चाहते थे। जब ब्रिटिश सेना ने मलय प्रायद्वीप पर कब्जा कर लिया तो बोस ने समर्पण नहीं करने का फैसला किया और सोवियत संघ के समर्थन के साथ मंचूरिया से लड़ाई जारी रखने की योजना बनाई। मंचूरिया जाते समय ही उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ।

बोस की मृत्यु के बारे में विवाद है । जिस जापानी विमान में नेताजी सवार थे, वह 18 अगस्त, 1945 को दुर्घटनाग्रस्त हो गया और कहा जाता है कि उसमें लगी आग में बोस भी जल गए थे और नजदीकी जापानी अस्पताल में उनका निधन हो गया। माना जाता है कि उनका अंतिम संस्कार किया गया और उनकी अस्थियां तोक्यो रेकोजी मंदिर में रखी गई। हालांकि इस बारे में भी विवाद है कि मंदिर में रखी अस्थियां नेताजी की है या नहीं। इसके कारण कई तरह की धारणाएं बनीं और माना गया कि शायद बोस इस हादसे में बच गए हों। गांधीजी ने बोस को ''देशभक्तों का देशभक्त'' कहा था। सच्चाई कुछ भी हो लेकिन नेताजी की आवाज आज भी लोगों के दिलों में देशभक्ति का संचार कर देती है।

*****

कन्हैयालाल मानेकलाल मुंशी

हम स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद् कन्हैया लाल मानेक लाल मुंशी को भी याद कर रहे हैं, जिनका जन्म 30 दिसंबर 1887 को गुजरात के भरूच, में हुआ था। उन्होंने महात्मा गांधी के आशीर्वाद से 1938 में प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान भारतीय विद्याभवन की स्थापना की।

कन्हैयालाल मानेक लाल मुंशी एक प्रतिभाशाली छात्र थे और उन्होंने बीए तथा एलएलबी परीक्षा में टॉप किया था। वह स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए क्रांतिकारी नेता श्री अरबिंदो घोष से प्रभावित थे। बॉम्बे में वकालत करते हुए, वह एनीबेसेंट की होमरूल लीग में शामिल हो गए और उस समय के कई प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों जैसे सुरेंद्रनाथ बनर्जी और महात्मा गांधी से मिले। 1927 में, वह बॉम्बे विधानसभा के लिए चुने गए लेकिन बारडोली सत्याग्रह के बाद, उन्होंने इस्तीफा दे दिया। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी भाग लिया और दो बार जेल गए। कन्हैया लाल मानेक लाल मुंशी 1937 के बॉम्बे प्रेसीडेंसी चुनाव में फिर से चुने गए और बॉम्बे प्रेसीडेंसी के गृहमंत्री बने। उन्होंने राज्य में सांप्रदायिक दंगों को शांत करने में मदद की।

स्वतंत्रता के बाद, मानेक लाल मुंशी को भारत की संविधान सभा का सदस्य चुना गया और उन्होंने मसौदा समिति, सलाहकार समिति, मौलिक अधिकारों पर उप-समिति और अगस्त 1947 में भारत के ध्वज का चयन करने वाली तदर्थ ध्वज समिति सहित कई समितियों में काम किया। कन्हैया लाल मानेक लाल मुंशी 1971 में अपनी मृत्यु तक, राष्ट्र के लिए प्रतिबद्ध रहे। इस महान देशभक्त को नमन।

******

बाबू गेनू सैद

हम स्वाधीनता सेनानी बाबू गेनू सैद को भी स्मरण कर रहे हैं। गेनू बंबई की एक मिल में मजदूर थे। वे महात्मा गांधी के स्वदेशी आंदोलन की भावना से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने ब्रिटेन से आयात के विरोध में आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

12 दिसंबर, 1930 को मंचेस्टर का कपड़ा व्यापारी जॉर्ज फ्रेजिय़र फोर्ट रीजन में अपनी दुकान से विदेश में बने कपड़े मुंबई बंदरगाह ले जा रहा था। फ्रेजिय़र के आग्रह पर उसे पुलिस सुरक्षा दी गई थी। कार्यकर्ताओं ने ट्रक को चलाने से रोकना चाहा लेकिन पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को बलपूर्वक पीछे धकेल दिया कलबादेवी रोड पर भांगवाड़ी के निकट बाबू गेनू ट्रक के सामने खड़े हो गए और महात्मा गांधी की प्रशंसा में नारे लगाने लगे। पुलिस अधिकारी ने ट्रक चालक को आदेश दिया कि ट्रक बाबू गेनू पर चढ़ा दिया जाए लेकिन ट्रक चालक भारतीय था और उसने गाड़ी आगे बढ़ाने से मना कर दिया। उसके बाद ब्रिटिश पुलिस अधिकारी खुद ट्रक चलाने लगा और बाबू गेनू पर ट्रक चढ़ा दिया। ट्रक से कुचलने पर बाबू गेनू की मृत्यु हो गई। इससे पूरी मुंबई में लोगों का गुस्सा फूट पड़ा, हड़ताल हुई और विरोध प्रदर्शन हुए। मुंबई की उस सड़क का नाम शहीद बाबू गेनू के सम्मान में उन्ही के नाम पर रखा गया है। शहीद बाबू गेनू को शत शत नमन

******

रानी गैडिनल्यू

नगा आध्यात्मिक और स्वतंत्रता सेनानी रानी गैडिनल्यू (Gaidinliu) की मृत्यु 17 फरवरी, 1993 को हुई थी। रोंगमेई (Rongmei) जनजाति की **युवा महिला** गैडिनल्यू ने, मणिपुर,नगालैंड और असम में अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया था।

रानी गैडिनल्यू का जन्म 26 जनवरी, 1915 को मणिपुर के वर्तमान तामेंगलोंग जिले में हुआ था। 1927 में, 13 साल की उम्र में, गैडिनल्यू, अपने भाई हैपोजादोनांग के साथ, हेराका (Heraka) आंदोलन में शामिल हो गईं। इस आंदोलन का उद्देश्य नगा जनजातीय धर्म को पुनर्जीवित करना और ब्रिटिश शासन को समाप्त कर लोगों के शासन की स्थापना करना था। 1932 में मात्र 16 वर्ष की आयु में अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई। 1932 और 1947 के बीच, इस नगा स्वतंत्रता सेनानी को पूर्वोत्तर भारत की कई जेलों में रखा गया था।

1947 में रिहा होने के बाद गैडिनल्यू ने समुदाय की भलाई के लिए काम करना जारी रखा। जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें 'पहाड़ियों की बेटी' के रूप में वर्णित किया और उनके साहस के लिए उन्हें 'रानी' की उपाधि दी। **1982 में** उन्हें पद्मभूषण से भी नवाजा गया। इस महान स्वतंत्रता सेनानी को नमन।

******

डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद

28 फरवरी 1963 को स्वाधीनता सेनानी और सार्वभौम भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद की पुण्यतिथी होती है। राजेंद्र बाबू को अंग्रेजों ने नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किया था। 1947 में स्वतंत्रता मिलने पर राजेंद्र प्रसाद को भारत की संविधान सभा का अध्यक्ष चुना गया। 1950 में वे भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने और उन्होंने भारत में शिक्षा के विकास को प्रोत्साहन दिया। 1957 में उन्हें पुनः राष्ट्रपति बनाया गया। डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद लगभग 12 वर्ष राष्ट्रपति के पद को सुशोभित करते रहे। उनके कार्यकाल के दौरान तय किए गए दिशानिर्देशों का आज भी पालन किया जा रहा है।

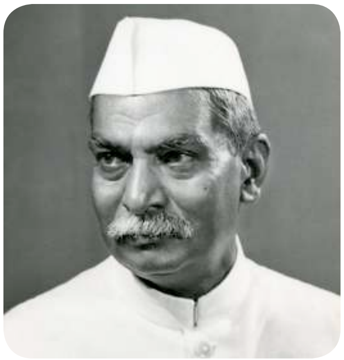

राजेंद्र प्रसाद के निधन पर सम्पूर्ण राष्ट्र शोक की लहर में डूब गया। लोगों की सेवा के लिए पूरी तरह समर्पित राजेंद्र प्रसाद के निस्वार्थ जीवन को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष हुकुम सिंह ने कहा थाः "महान स्वाधीनता सेनानी और उत्साही देशभक्त, संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने धैर्य और दूरदर्शिता के साथ मार्ग दर्शन किया। वे अत्याधिक मुश्किल और रचनात्मक दौर में भारत के प्रथम राष्ट्रपति रहे। प्रबुद्धता और मानवता के गुणों से समृद्ध राजेंद्र प्रसाद ने गरीबों के लिए कार्य और उनसे प्रेम किया तथा उनकी परेशानियों को समझा। पद की गरिमा बनाए रखते हुए भी सादगीपूर्ण और समर्पित जीवन व्यतीत किया। उन्होंने राष्ट्र के संवैधानिक प्रमुख की आधारशिला रखी और गरिमामयी परंपराएं कायम कीं।" राज्यसभा में तत्कालीन सभापति डॉक्टर एस राधाकृष्णन ने राजेंद्र बाबू के बारे में कहा, कहा जा सकता है कि राजेंद्र प्रसाद किसी अन्य की तुलना में कहीं अधिक सम्पूर्ण सज्जन, भारतीय जीवन में श्रेष्ठता से रचे-बसे और अच्छे भारतीय के सच्चे प्रतीक थे।' राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाएं पहले ही इतिहास में दर्ज हो चुकी हैं। भारत की इस महान विभूति डॉक्टर राजेंद्र बाबू को नमन।

****

लाल बहादुर शास्त्री

स्वतंत्रता सेनानी और देश के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का निधन 11 जनवरी 1966 को हुआ था। लाल बहादुर शास्त्री पर स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और एनी बेसेंट का गहरा प्रभाव था। वे महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में 1920 के दशक में स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए थे। 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान उन्होंने देश का नेतृत्व किया और भारतीयों को 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया।

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म उत्तरप्रदेश में वाराणसी के निकट हुआ था। बचपन से ही अध्ययन में रुचि रखने वाले शास्त्रीजी, जूतों के बिना कई मील पैदल चलकर वाराणसी में अपने स्कूल जाते। गर्मियों में धूप से तपती गलियों से भी वे नंगे पांव गुजरते। उम्र बढ़ने पर स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी रुचि भी बढ़ी। मात्र 11 वर्ष की आयु में ही वे महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित थे। जनवरी 1921 में जब लाल बहादुर शास्त्री 10वीं कक्षा में थे और उनकी फाइनल परीक्षा में केवल तीन महीने बाकी थे, उन्होंने बनारस में महात्मा गांधी और पंडित मदनमोहन मालवीय की जनसभा में भाग लिया। विद्यार्थियों से सरकारी स्कूल छोड़ने और असहयोग आंदोलन में शामिल होने के महात्मा गांधी के आह्वान से प्रेरित होकर शास्त्री जी ने अगले दिन से ही स्कूल छोड़ दिया और असहयोग आंदोलन से जुड़ गए। बाद में उन्होंने वाराणसी में काशी विद्यापीठ में अध्ययन किया। यहां वे महान बौद्धिक जन और राष्ट्रभक्तों के संपर्क में आए।

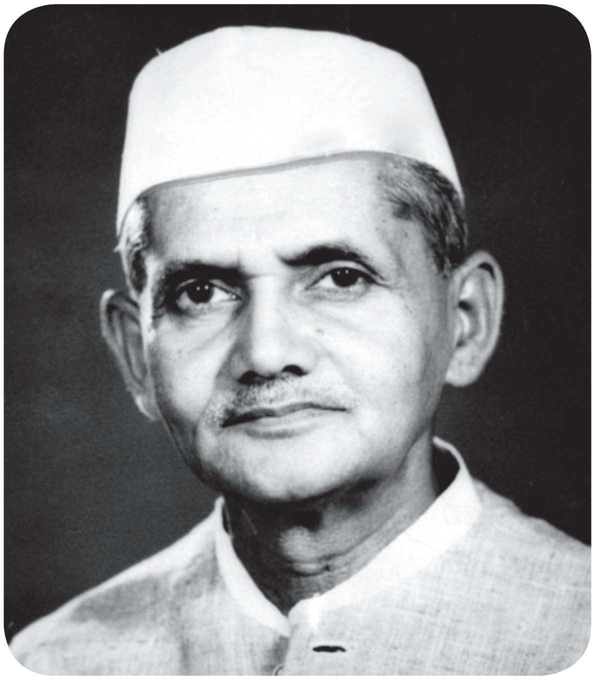

लाल बहादुर शास्त्री लोक सेवक मंडल से आजीवन सदस्य के रूप में जुड़े। इसे लाला लाजपत राय ने स्थापित किया था। लोक सेवक मंडल के तहत उन्होंने बिहार के मुजफ्फरपुर में महात्मा गांधी के निर्देश पर तथाकथित पिछड़ी जातियों के कल्याण के लिए काम शुरू किया। नागरिक अवज्ञा आंदोलन के दौरान लालबहादुर शास्त्री ने अनेक अभियानों का नेतृत्व किया और सात वर्ष का समय ब्रिटिश सरकार की जेलों में बिताया।

1946 में जब कांग्रेस सरकार की स्थापना हुई तो लाल बहादुर शास्त्री को शासन में रचनात्मक भूमिका निभाने को कहा गया। उन्हें उनके गृह राज्य उत्तरप्रदेश में संसदीय सचिव बनाया गया और जल्दी ही वे गृहमंत्री के पद तक पहुंच गए। 1951 में वे नई दिल्ली आ गए और केंद्रीय मंत्रिमंडल में विभिन्न विभागों के मंत्री रहे।

पंडित जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद शास्त्री जी 9 जून 1964 को देश के प्रधानमंत्री बने।

प्रधानमंत्री के रूप में शास्त्री जी की सबसे कठिन परीक्षा थी 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध। उन्होंने राजनीतिक नेताओं, नौकरशाही और सशस्त्र सेनाओं के समर्थन से पूरी दृढता, ठोस संकल्प और कुशाग्र नीति के साथ पाकिस्तान की हरकतों का खूब जवाब दिया। भारत-पाकिस्तान युद्ध समाप्त होने पर उन्होंने राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था कि पाकिस्तान की किसी भी हरकत का समुचित जवाब दिया जाएगा।

11 जनवरी 1966 को उज्बेकिस्तान के ताशकंद में शास्त्री जी का निधन हो गया। इसके एक दिन पहले ही उन्होंने 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध की समाप्ति के शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये थे। लाल बहादुर शास्त्री की सफलता व्यापक विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मति से निर्णय लेने की क्षमता में निहित थी। इस महान नेता को हमारा नमन।

****

दीनबंधु सर छोटूराम

दीनबंधु सर छोटूराम का निधन 9 जनवरी 1945 को हुआ था। उन्होंने ब्रिटिश भारत काल में किसानों की पीड़ा और यातना को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया।

छोटूराम उस क्षेत्र के एक ऋण ग्रस्त परिवार से थे जो अब हरियाणा में पड़ता है। यह क्षेत्र अकसर सूखे और बाढ़ से त्रस्त रहता जिससे किसानों को विवश होकर उधार देने वालों पर निर्भर रहना पड़ता। सर छज्जूराम के संरक्षण में छोटूराम ने आगरा से कानून में डिग्री ली 1916 में वे कांग्रेस में शामिल हो गये और 1920 तक रोहतक जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्ष रहे। 1923 में उन्होंने फजल-ए-हुसैन और सर सिकंदर हयात खान के साथ मिलकर यूनियनिस्ट पार्टी बनायी। इस पार्टी ने 1936 में पंजाब में आम चुनाव जीता तथा कांग्रेस और अकाली दल के साथ गठबंधन सरकार बनायी। छोटूराम राजस्व मंत्री बनाये गये।

विभाजन से पहले पंजाब विधानपरिषद के मंत्री के रूप में उनकी पहली प्रमुख उपलब्धि थी पंजाब भू राजस्व संशोधन अधिनियम, 1929 पारित होना, जो आज तक ऐतिहासिक सामाजिक विधान बना हुआ है। पंजाब लेखा विनियमन अधिनियम 1930 से लेकर अनेक उपायों के जरिये महाजन और साहूकारों द्वारा किसानों के शोषण का अंत हुआ। पंजाब कृषि उत्पाद बाजार अधिनियम 1939 में बनाया गया जिसके तहत अधिसूचित क्षेत्रों में बाजार समितियों के गठन का प्रावधान था। इनसे किसानों को शोषण से मुक्ति दिलाने में मदद मिली। होल्डिंग एकीकरण अधिनियम,1936 पारित होने के बाद भूमि होल्डिंग का एकीकरण किया गया। इस अधिनियम को 1945 में संशोधित किया गया। छोटूराम ने न केवल इन कानूनों को पारित कराया बल्कि इन्हें लागू किया जाना भी सुनिश्चित किया।

कृषि के उत्थान में असाधारण योगदान के लिये किसानों ने छोटूराम को दीनबंधु और रहबर-ए-आजम की उपाधि से नवाजा। ब्रिटिश सरकार ने भी उन्हें 1937 में सर की उपाधि प्रदान की। इस राष्ट्रवादी और किसान हितैषी महान नेता को हमारा नमन।

******

आशापूर्णा देवी

विख्यात राष्ट्रवादी और नारी अधिकारों के लिये आवाज उठाने वाली सशक्त लेखिका आशापूर्णा देवी का जन्म 8 जनवरी 1909 को कलकत्ता में हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन के राजनीतिक उथल–पुथल के दौर में बड़ी हो रही आशापूर्णा में बचपन से ही देशभक्ति की भावना विकसित हो रही थी। आशापूर्णा देवी की तीन सशक्त कृतियों – प्रथम प्रतिश्रुति, सुबर्णलता और बकुल कथा में औपनिवेशिक भारत से स्वतंत्र भारत तक महिला मुक्ति का जीवंत चित्रण है।

आशापूर्णा देवी की कृतियां स्त्री-पुरुष भेदभाव को उजागर करती हैं। उनकी लघुकथाओं और उपन्यासों में बंगाल की मध्यवर्गीय महिलाओं की स्थिति का वर्णन है। इनमें महिलाओं के शोषण, दमन, आक्रोश, बढ़ती जागरुकता और अंततः विद्रोह का चित्रण है।

साहित्य विशेषकर महिला साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिये उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने 1976 में उन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया। 13 जुलाई 1995 को आशापूर्णा देवी का निधन हो गया। उनकी रचनाओं का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। ये विभिन्न स्कूली पाठ्यक्रमों में भी शामिल हैं। इस महान नारीवादी लेखिका को नमन।

*****

मधुलिमये

विख्यात राष्ट्रवादी मधुलिमये का निधन 1995 में 8 जनवरी को हुआ था। मधुलिमये का जन्म 1 मई 1922 को पुणे में हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 1938 से 1948 तक वे इंडियन नेशनल कांग्रेस और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से जुड़े रहे। 1955 में उन्होंने गोवा मुक्ति आंदोलन में भी भाग

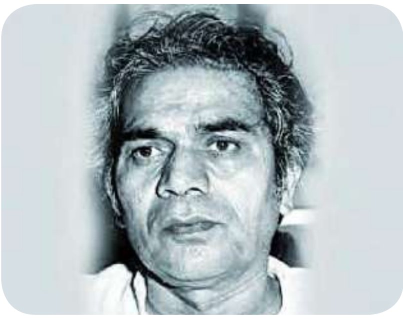

लिया और जेल गये। 19 महीने से भी अधिक समय तक वे पुर्तगाली कारावास में रहे। राम मनोहर लोहिया के अनुयायी मधुलिमये 1970 के दशक में जे पी आंदोलन में सक्रिय रहे। इस महान राष्ट्रवादी को नमन।

*****

केशबचंद्र सेन

महान दार्शनिक और समाज सुधारक केशबचंद्र सेन का निधन 1884 में 8 जनवरी को हुआ था। बंगाल के एक जाने – माने ब्रह्म समाजी नेता के रूप में उन्होने एक नये विश्व धर्म – नब बिधान की स्थापना की। नब बिधान यानि नया धर्म जिसका उद्देश्य भारतीय परम्पराओं के साथ पश्चिमी आध्यात्मिकता के सर्वोत्तम विचारों को शामिल करना था।

एक युवा के रूप मे भी केशब की प्राथमिक चिंता एक विश्व धर्म की तलाश करना था। 1857 में कॉलेज जीवन में ही उन्होंने विद्यार्थियों के लिये एकेश्वरवादी धार्मिक सोसायटी 'गुडविल फ्रैटर्निटी' की स्थापना की। इस संगठन की एक बैठक में केशब की मुलाकात पहली बार विख्यात ब्रह्म समाजी नेता देबेन्द्रनाथ टैगोर से हुई। वेदांतवाद से प्रभावित केशब 1857 में ब्रह्म समाज में शामिल हो गये और 1858 तक इसके प्रमुख नेता बन गये। केशब ने नये विचारों और नयी गतिविधियों को शामिल कर ब्रह्म समाज संगठन को एक नया रूप दिया।

1862 में धर्म समाज आचार्य बनाये जाने के बाद केशब ने जातिप्रथा, छुआछूत और बाल विवाह जैसे प्रचलनों को त्यागने की अपील की तथा विधवा विवाह और अंतर्जातीय विवाह के प्रबल प्रचारक बन गये। स्त्री शिक्षा केशब की सबसे बड़ी चिंताओं में एक थी। उन्होंने बाम बोधिनी सभा के शिक्षा संबंधी प्रयासों का सक्रियता से समर्थन किया।

देबेन्द्रनाथ टैगोर के साथ कुछ मतभेदों के बाद केशब चंद्र सेन ने 1866 में भारत वर्षीय ब्रह्म समाज नाम से एक नयी सोसायटी गठित की। 1881 में केशब ने पूरब और पश्चिम के सामंजस्य पर आधारित एक नये समन्वयवादी धर्म नब बिधान की आधिकारिक रूप से स्थापना की। भारत के इस महान समाज सुधारक को नमन।

******

हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानी

हरियाणा में गुरुग्राम जिले के बड़का निवासी तीन वीरों चंडूमेव के पुत्र खुशीराम, मुबारकमेव के पुत्र आमिर और मलखानमेव के पुत्र रणबाजमेव ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। उन्हें अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया और राजद्रोह का मुकदमा चलाया। तीनों को मौत की सजा सुनाई गई और वे 6 जनवरी, 1858 को शहीद हो गए। माँ भारती के महान सपूतों को शत - शत नमन।

******

ज्ञानांजन नियोगी

7 जनवरी को स्वाधीनता सेनानी और समाज सुधारक ज्ञानांजन नियोगी की जयंती होती है। उनका जन्म 7 जनवरी, 1891 को हुआ था। ज्ञानांजन पर ब्रह्म समाज के आदर्शों का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने इन आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। जब 1905 में बंगाल का विभाजन किया गया तो ज्ञानांजन स्वाधीनता आंदोलन की तरफ आकर्षित हुए।

1909 में ज्ञानांजन नियोगी ने कलकत्ता वर्किंग मेन्स इन्स्टीट्यूशन बनाया। शैक्षिक और प्रशिक्षण गतिविधियों के अतिरिक्त वह संस्थान झुग्गी बस्तियों में रहने वाले गरीबों के लाभ के लिए मेडिकल सहायता और विकास कार्यों का आयोजन भी करता था। उन्होंने बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों की गहन यात्रा की और गरीबों तथा समाज के अशिक्षित वर्गों में जागरूकता फैलाने के लिए मैजिक लैंटर्न यानी जादुई लालटेन का उपयोग करना आरंभ किया।

स्वदेशी चीजों के उपयोग को प्रोत्साहन देने के लिए ज्ञानांजन ने स्वदेशी मेलों का आयोजन किया। 1930-31 के दौरान जब नेताजी सुभाषचंद्र बोस कोलकाता के महापौर थे तो उन्होंने ज्ञानांजन से स्वदेशी अभियान चलाने का आग्रह किया था।

स्वतंत्रता के उपरांत जब पूर्वी पाकिस्तान से शरणार्थी आए तो ज्ञानांजन नियोगी ने जी-जान से पुनर्वास कार्य किया। 13 फरवरी, 1956 को ज्ञानांजन की आत्मा श्री चरणों में विलीन हो गई।

******

विजय ढोंढो पंत तेंदुलकर

विजय ढोंढो पंत का जन्म 6 जनवरी, 1928 को महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था। उन्होंने पढ़ाई छोड़कर 14 वर्ष की उम्र में 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। वे नाटकों, फिल्मों और टेलीविजन के लिए पटकथाओं तथा प्राथमिक रूप से मराठी भाषा में पत्रकारिता के लिए अग्रणी योद्धा के रूप में जाने जाते हैं।

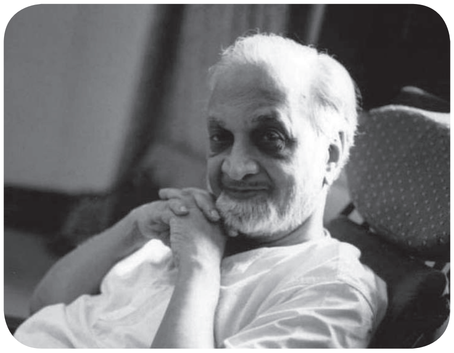

तेंदुलकर नाटक देखकर ही बड़े हुए। 11 वर्ष की उम्र में उन्होंने पहला नाटक लिखा, निर्देशित किया और उसमें अभिनय भी किया। वे शांताता! कोर्ट चालू आहे, घासीराम कोतवाल और सखाराम बाइंडर के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। उनके नाटकों के मुख्य विषय आधुनिक व्यक्ति के अलगाव से लेकर समकालीन राजनीति, सामाजिक व्यक्तिगत तनावों से लेकर मानवीय चरित्र की जटिलताएं, पुरुष-महिलाओं के अन्वेषण से लेकर ऐतिहासिक घटनाओं की पुनः व्याख्या तक विस्तृत है।

उनके ज्यादातर नाटकों में वास्तविक जीवन की घटनाओं या सामाजिक उथल-पुथल से प्रेरणा ली गई है जो कटु वास्तविकताओं पर स्पष्ट प्रकाश डालते हैं। उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। महान व्यक्तित्व को सादर नमन।

******

भदंत आनंद कौसल्यायन

स्वतंत्रता सेनानी, बौद्ध साधु और लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन को नमन। उनका जन्म 5 जनवरी, 1905 को अंबाला जिले के सोहना गांव में हुआ था। उन्होंने अपने मित्र और मार्गदर्शक भदंत राहुल सांकृत्यायन के साथ भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। कौसल्यायन को 20वीं सदी के महान कार्यकताओं में शामिल किया जाता है। वे बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर से बहुत प्रभावित थे।

भदंत आनंद कौसल्यायन मुंबई के दादर में 7 दिसंबर, 1956 को बाबा साहेब के अंतिम संस्कार समारोह में मुख्य आधिकारिक प्रीस्ट थे। उन्होंने घोषित किया कि डॉ. अंबेडकर ने निर्वाण प्राप्त कर लिया है। उनके मार्गदर्शन में ही बाबासाहेब का अंतिम संस्कार समारोह किया गया। बाबा साहेब की मृत्यु के उपरांत भदंत कौसल्यायन ने अंबेडकर के संदेश के प्रचार-प्रसार का दायित्व संभाला और महाराष्ट्र के बौद्ध धर्मावलंबियों का मार्गदर्शन करने के लिए यात्रा करने लगे। उन्होंने आम लोगों के हित में डॉ. अंबेडकर के महत्वूपर्ण कार्य ''द बुद्धा एंड हिज धम्मा'' का हिंदी में अनुवाद किया। उन्होंने पालि त्रिपिटिक और अन्य बौद्ध साहित्य को खोजा और मूल स्रोत एकत्र किए जो डॉ. अंबेडकर नहीं कर पाए थे। 22 जून, 1988 को भदंत कौसल्यायन का निधन हो गया। महान राष्ट्रवादी को विनम्र नमन।

******

भारतेंदु हरिश्चंद्र

स्वाधीनता सेनानी तथा हिंदी साहित्य और हिंदी रंगमंच के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र का निधन 6 जनवरी, 1885 को हुआ था।

भारतेंदु की उम्र मात्र सात वर्ष की थी जब स्वतंत्रता के लिए प्रथम संग्राम लड़ा गया। बालक हरिश्चंद्र के मन पर इस संग्राम का गहरा प्रभाव पड़ा। भारतेंदु हिंदी पुनर्जागरण के अग्रदूत थे। हिंदी देशी राष्ट्रवाद का श्रेय भारतेंदु को ही दिया जाता है। उन्होंने ऐसा जन आंदोलन चलाया जिसकी परिणति लोकप्रिय नारे हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान के रूप में हुई।

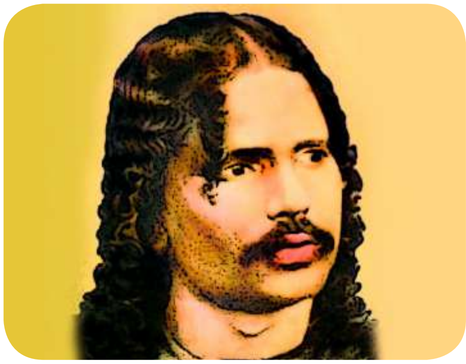

उनकी पत्रिकाओं में ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों की कड़ी आलोचना की जाती थी। हरिश्चंद्र ने लोगों की दुर्दशा, देश की गरीबी, पराधीनता, अमानवीय शोषण, मध्यमवर्ग के असंतोष और देश की प्रगति के लिए ललक का प्रतिनिधित्व किया। उनके अंधेर नगरी नाटक का मूल सार अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा है जो अतार्किक और निरंकुश ब्रिटिश सरकार पर व्यंग्य है।

भारतेंदु ने जनता की राय को दिशा देने के लिए नए मीडिया विशेषकर प्रकाशनों का उपयोग किया। उन्होंने देश में पहला हिंदी आंदोलन आरंभ किया। खड़ी बोली में लिखे उनके नाटक, कविताएं, गद्य और पत्रिकाएं उत्तर भारत में व्यापक रूप से वितरित किए जाते थे।

खड़ी बोली को पहले आंतरिक बोली माना जाता था लेकिन भारतेंदु की पत्रिकाओं के माध्यम से वह देशभर में शिक्षित जनता तक पहुंची।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय हिंदी जनसंचार में मूल लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए 1983 से भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार प्रदान करता रहा है। महान भारतीय राष्ट्रवादी को शत - शत नमन।

****

वीरा पांडिया कट्टाबोम्मन

स्वाधीनता सेनानी वीरा पांडिया कट्टाबोम्मन का जन्म 3 जनवरी, 1760 को तमिलनाडु के तूतुकुड़ी जिले में हुआ था। वीरा पांडिया के पिता जगवीरा कट्टाबोम्मन पलयाकरार यानी गवर्नर थे जिनकी नियुक्ति नायका साम्राज्य ने की थी। जब वीरा पांडिया 30 वर्ष के हुए तो उन्होंने 47वें पलयाकरार का पद संभाला।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने सभी पलयाकरारों से कर एकत्र करने के अधिकार आर्कोट क्षेत्र के नबाव से प्राप्त कर लिए। वीरा पांडिया को छोड़कर अन्य सभी पलयाकरार कंपनी का आदेश मानने लगे। फलस्वरूप ब्रिटिश सेना ने 1799 में वीरा पांडिया पर हमला कर दिया। वीरा पांडिया को अपने खबरी के जरिए हमले की खबर मिल गई और वे पहले ही इसके लिए तैयार थे। वीरा पांडिया को बिना शर्त समर्पण के लिए कहा गया तो वे दहाड़ उठे *"हम इस माटी के सपूत हैं। हम प्रतिष्ठा और आत्म सम्मान से जीते हैं। हम अपनी मातृभूमि की प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए प्राण न्योछावर कर देंगे। हम विदेशियों के आगे नहीं झुकेंगे। हम अंतिम सांस तक लड़ेंगे।"*

वीरा पांडिया और उनके साथियों ने बहादुरी से ब्रिटिश सेना से मोर्चा लिया। बाद में नजदीकी पुदुकोट्टई के राजा की सहायता से अंग्रेजों ने 1799 में वीरा पांडिया को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें सब के सामने फांसी की सजा सुनाई गई। वीरा पांडिया कट्टाबोम्मन 16 अक्टूबर, 1799 को शहीद हुए। महान स्वाधीनता सेनानी को नमन।

******

बरींद्र कुमार घोष

क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी बरींद्र कुमार घोष बरीन घोष के नाम से लोकप्रिय थे। उनका जन्म 5 जनवरी, 1880 को हुआ था। बरीन, श्री अरबिंदो घोष के छोटे भाई थे। बरींद्र अपने भाई से अत्यधिक प्रभावित हुए और क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गए। उन्होंने जाने-माने स्वाधीनता सेनानी जतिंद्रनाथ बनर्जी के साथ सक्रिय रूप से कार्य किया।

1906 में बरींद्र कुमार ने बांग्ला साप्ताहिक जुगांतर प्रकाशित किया। बाद में उन्होंने बंगाल में फिटनेस क्लब के तहत खुफिया क्रांतिकारी समूह जुगांतर बनाया। उन्होंने बाघा जतिन के साथ मिलकर युवा क्रांतिकारियों की भर्ती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मजिस्ट्रेट डगलस किंग्स फोर्ड की हत्या के प्रयास के बाद पुलिस की गहन जांच में 2 मई, 1908 को बरींद्र और अरबिंदो गिरफ्तार कर लिए गए । उनके साथ अन्य स्वाधीनता सेनानियों को भी पकड़ा गया। अलीपुर बम केस में बरींद्र घोष और उल्लासकर दत्त को मौत की सजा सुनाई गई। लेकिन देशबंधु चितरंजन दास के हस्तक्षेप के बाद उनकी सजा घटाकर आजीवन कारावास कर दी गई। 1909 में बरींद्र कुमार को अंडमान की सेलुलर जेल भेज दिया गया। 1920 में आम माफी के दौरान बरींद्र को रिहा किया गया और वे कोलकाता लौटकर पत्रकारिता करने लगे। उन्होंने अपने संस्मरण प्रकाशित कराए जिसका नाम है "द टेल ऑफ माई एग्जाइल – ट्वेल्व इयर्स इन अंडमान्स"

बरींद्र 1923 में पाण्डिचेरी गए और अरबिंदो से प्रभावित होकर आध्यात्मिकता और साधना में लीन हो गए। 1929 में वे कोलकाता लौटे और पत्रकारिता करने लगे। 1933 में उन्होंने अंग्रेजी साप्ताहिक द डॉन ऑफ इंडिया शुरू किया। वे समाचार पत्र द स्टेट्समैन से भी जुड़े रहे। 1950 में बरींद्र बांग्ला अखबार दैनिक बसुमति के संपादक बन गए। 18 अप्रैल, 1959 को उनका निधन हो गया। महान भारतीय राष्ट्रवादी को नमन।

****

मौलाना मोहम्मद अली जौहर

राष्ट्रवादी मौलाना मोहम्मद अली जौहर का निधन 4 जनवरी, 1931 को हुआ था। मौलाना का जन्म 10 दिसंबर, 1878 को वर्तमान उत्तरप्रदेश के रामपुर में हुआ था। जौहर भारत की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे और खिलाफत आंदोलन के अगुवा भी। उन्होंने 1920 में खिलाफत आंदोलन के लिए लंदन गए प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया था। इंग्लैंड से वापसी पर जौहर ने 1920 में अलीगढ़ में जामिया मिलिया इस्लामिया की स्थापना की जो बाद में दिल्ली स्थानांतरित कर दी गई।

जौहर शुरू में मुस्लिम लीग के सदस्य थे लेकिन 1919 में इंडियन नेशनल कांग्रेस में शामिल हो गए। 1923 में वे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। 1930 में जौहर ने खराब सेहत के बावजूद गोल मेज सम्मेलन में भाग लिया। वहां उन्होंने यह प्रसिद्ध वक्तव्य दिया, *"मुझे आजादी दो या मेरी कब्र के लिए दो गज जमीन दो। मैं गुलाम देश में वापस नहीं जाना चाहता।"*

ये शब्द सत्य सिद्ध हुए और 4 जनवरी, 1931 को लंदन में ही उनकी मृत्यु हो गई। उनके पैतृक कस्बे में मौलाना मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय की स्थापना रामपुर के उस महान सपूत को सच्ची श्रद्धांजलि है।

******

जोसेफ चेल्ला दुरई कुमारप्पा

गांधीवादी स्वाधीनता सेनानी और अर्थ शास्त्री जोसेफ चेल्ला दुरई कुमारप्पा का जन्म 4 जनवरी, 1892 को तंजावुर में हुआ था। अर्थशास्त्री के रूप में कुमारप्पा का विश्वास था कि मानव धन सृजन का एजेंट मात्र नहीं है बल्कि वह राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों के साथ अनिवार्य रूप से समाज का सदस्य है। उनके निबंधों ने महात्मा गांधी का ध्यान आकर्षित किया जिन्होंने कुमारप्पा को रचनात्मक कार्यकर्ता बना दिया।

1931 में कांग्रेस के कराची अधिवेशन में कुमारप्पा को ब्रिटेन और भारत के बीच वित्तीय दायित्वों के विस्तृत अध्ययन के लिए प्रवर समिति का संयोजक चुना गया। जब गांधीजी दूसरे गोल मेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए इंग्लैंड गए तो कुमारप्पा ने उनके समाचार पत्र यंग इंडिया का संपादन संभाला। कुमारप्पा के लेखों के लिए उन्हें ढाई वर्ष के सश्रम कारावास की सजा हुई। जेल से रिहा होने पर कुमारप्पा ने 1934 में बिहार में भूकंप राहत कार्य के दौरान वित्तीय सलाहकार के रूप में डॉ. राजेंद्र प्रसाद और जमनालाल बजाज की सहायता की। 1942 में कुमारप्पा के लेख स्टोन फॉर ब्रेड के लिए उन्हें पुनः जेल भेज दिया गया। 1946 में कुमारप्पा ने स्वावलंबन के सिद्धांतों के आधार पर ग्रामीण उत्थान के लिए विस्तृत योजना तैयार की। 1948 में जब महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई तो कुमारप्पा को इतना गहरा सदमा लगा कि उनकी दोनों आंखों की रोशनी चली गई। सौभाग्य से कुछ दिन के बाद उनकी आंखें फिर ठीक हो गई। स्वतंत्रता के उपरांत कुमारप्पा ने राष्ट्रीय हित में विभिन्न मिशन्स पर दुनिया भर की यात्रा की। बाद में वे राजनीतिक जीवन से सेवानिवृत्त हो गए और मदुरै जिले के गांधी निकेतन में बस गए। 30 जनवरी, 1960 को कुमारप्पा का निधन हो गया। महान राष्ट्रवादी को विनम्र नमन।

******

सावित्री बाई फुले

आधुनिक भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के छोटे से गाँव नायगाँव में हुआ था। वे जीवनभर भारत में महिलाओं के अधिकारों की मशाल प्रज्ज्वलित करने में अग्रणी रही। उन्हें प्रायः भारतीय महिलावाद की जननी कहा जाता है।

बाल अवस्था में ही सावित्री बाई में गजब की जिज्ञासा और महत्वाकांक्षा थी। नौ वर्ष की उम्र में ही 1840 में उनका विवाह ज्योतिराव फुले से कर दिया गया। सावित्री बाई के सीखने के उत्साह से प्रभावित होकर ज्योतिराव ने उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया। सावित्री बाई ने शिक्षक का प्रशिक्षण लिया। वे1847 में प्रशिक्षित शिक्षिका बन गई। देश में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध ज्योतिराव के साथ सावित्री बाई ने 1848 में पुणे में बालिकाओं के लिए विद्यालय खोला। वह भारत की प्रथम महिला शिक्षिका बनी।

देश में विधवाओं की दुर्दशा से सहानुभूति रखते हुए सावित्री बाई ने 1864 में बेसहारा महिलाओं के लिए आश्रय स्थल भी बनाया। सावित्री बाई ने सत्य शोधक समाज को दिशा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसकी स्थापना महात्मा ज्योतिबा फुले ने की थी। 1873 में सावित्री बाई ने सत्यशोधक विवाह कराने आरंभ किए जहां विवाह करने वाले जोड़े शिक्षा और समानता की शपथ लेते थे। 1890 में ज्योतिराव फुले का निधन हो गया। सभी सामाजिक मान्यताओं को दरकिनार करते हुए सावित्री बाई ने उनकी चिता को अग्नि दी।

उन्होंने ज्योतिराव की विरासत को आगे बढ़ाया और सत्यशोधक समाज की भी जिम्मेदारी संभाली। जब 1890 के दशक में महाराष्ट्र में खतरनाक प्लेग फैला तो सावित्री बाई ने पुणे में प्लेग पीड़ितों के लिए क्लीनिक खोला। 10 वर्ष के प्लेग रोगी को स्वयं क्लीनिक ले जाते समय सावित्री बाई को भी प्लेग ने जकड़ लिया। 10 मार्च, 1897 को सावित्री बाई फुले का निधन हो गया।

सावित्री बाई का जीवन और कार्य समाज सुधार और भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण के प्रमाण हैं। वे आज के दौर में अनेक महिला अधिकार कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा बनी हुई हैं। महान भारतीय समाज सुधारक को शत शत नमन।

******

अनंत लक्ष्मण कान्हेरे

स्वाधीनता सेनानी अनंत लक्ष्मण कान्हेरे ने 21 दिसम्बर, 1909 को ब्रिटिश अधिकारी और नासिक के कलेक्टर ए एम टी जैकसन की गोली मारकर हत्या कर दी थी। जैकसन पर अभिनव भारत सोसायटी की गतिविधियों की जासूसी कराने का संदेह था। नासिक के लोगों ने विजयानंद थियेटर में जैकसन का विदाई समारोह आयोजित किया था और उनके सम्मान में नाटक का मंचन किया जाना था। जब जैकसन नाटक देखने पहुंचे तो अनंत लक्ष्मण कान्हेरे ने उनके सामने छलांग लगा दी और उन पर चार गोलियां दागी। जैकसन ने तुरंत दम तोड़ दिया। अनंत कान्हेरे ने गिरफ्तारी से बचने के लिए जहर खाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हो सके और पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इस सनसनीखेज हत्या को नासिक षड़यंत्र केस कहा गया। अभिनव भारत सोसायटी के 27 सदस्यों को दोषी ठहरा कर दंडित किया गया। अनंत कान्हेरे पर बंबई हाई कोर्ट में मुकदमा चलाया गया और 19 अप्रैल, 1910 को ठाणे जेल में उन्हें फांसी दे दी गई। मात्र 18 वर्ष की उम्र में प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी स्वाधीनता सेनानी को नमन।

****

अश्विनी कुमार दत्ता

स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद् अश्विनी कुमार दत्ता ने 7 नवंबर, 1923 को हमें अलविदा कह दिया था। दत्ता को बंगाल विभाजन ने स्वदेशी आंदोलन की ओर आकर्षित किया और उन्होंने स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए स्वदेश बंधव समिति की स्थापना की। 1908 में, नवगठित पूर्वी बंगाल और असम की सरकार ने स्वदेश बंधव समिति पर प्रतिबंध लगा दिया और दत्ता को लखनऊ में जेल में डाल दिया।

1921 में महात्मा गांधी इस महान नेता के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए बारीसाल गए थे। इस देशभक्त को सलाम जिसने अपने जीवन के अंत तक भारतीय जनता के लिए अथक प्रयास किया।

******

ठाकुर कवि केसरी सिंह बारहठ

महान स्वाधीनता सेनानी, क्रांतिकारी और कवि केसरी सिंह बारहठ का जन्म 21 नवंबर, 1872 को राजस्थान के शाहपुरा में हुआ था। केसरी ने राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता पर अनेक कविताएं लिखीं। 1891 से केसरी सिंह ने अपने पिता कृष्ण सिंह बारहठ के साथ मेवाड़ के महाराणा के यहां कार्य शुरू किया। प्रशासन में अंग्रेजों के बढ़ते राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण केसरी सिंह ने 1893 में नौकरी छोड़ दी। उनका विश्वास था कि सामान्य सैनिकों, राजपूतों, चारणों और राजपूताना की अन्य लड़ाकू जातियों को संगठित करके सेना बनाई जाए तो राजपूताना ब्रिटिश शासन से मुक्त हो जाएगा और इस प्रकार क्रांति की ज्वाला शेष भारत में भी फैल जाएगी। वे रास बिहारी बोस और सचींद्र नाथ सान्याल जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। केसरी सिंह रिवोल्यूशनरी पार्टी में शामिल हो गए। 1910 में केसरी सिंह ने वीर भारत सभा की स्थापना की। वे सशस्त्र क्रांति की तैयारी के लिए विश्व युद्ध की शुरुआत से ही इस कार्य में जुट गए। उन्होंने बनारस के क्रांतिकारियों को कारतूस का पार्सल भेजा और रियासतों एवं ब्रिटिश सेना के सैनिकों से संपर्क किया।

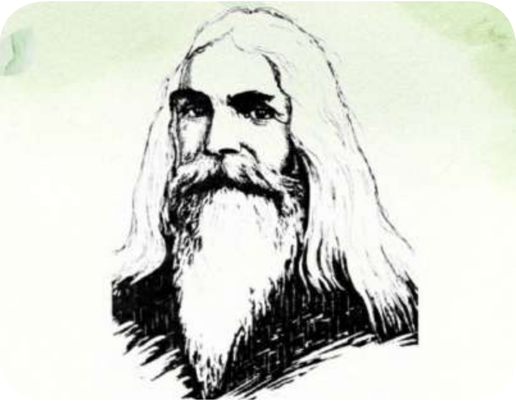

ब्रिटिश सरकार ने राजद्रोह षडयंत्र और हत्या के आरोप में केसरी सिंह को 21 मार्च 1914 को शाहपुरा में गिरफ्तार कर लिया और बिहार में हजारीबाग केंद्रीय कारागार भेज दिया। अप्रैल 1920 में रिहाई के बाद केसरी सिंह वर्धा गए जहां उन्होंने साप्ताहिक अखबार "राजस्थान केसरी" की शुरुआत की। 1919 में ठाकुर केसरी सिंह बारहठ ने गांधीजी से मुलाकात की और उनकी सलाह पर वर्धा में "राजस्थान सेवा संघ" की स्थापना की। वे अगले वर्ष उसे अजमेर ले गए। 14 अगस्त, 1941 को ठाकुर केसरी सिंह बारहठ का निधन हो गया।

*****

देशबंधु गुप्ता

21 नवम्बर को क्रांतिकारी, स्वाधीनता सेनानी, पत्रकार और विधायक देशबंधु गुप्ता की पुण्य तिथि होती है। उनका जन्म 1901 में पानीपत में हुआ था। उनका नाम रति राम गुप्ता था। स्वामी श्रद्धानंद और महात्मा गांधी ने उन्हें देशबंधु की उपाधि दी। वे आर्य समाज के सदस्य थे। किशोरावस्था में वे प्रायः सड़कों पर विरोध प्रदर्शन में शामिल होते थे। इंडियन नेशनल कांग्रेस में शामिल होने के बाद वे लाला लाजपत राय और महात्मा गांधी जैसे पार्टी के बड़े नेताओं के करीब आए। लाला लाजपत राय ने उन्हें करनाल में कांग्रेस समितियां गठित करने की जिम्मेदारी सौंपी। गुप्ता संविधान सभा के सदस्य थे।

वे स्वतंत्र प्रेस के बड़े पक्षधर थे। वे राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली को विधानसभा का दर्जा देने के हिमायती थे। उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद के साथ 'रोजाना तेज' समाचार पत्र शुरू किया। मशहूर पत्रकार रामनाथ गोयनका के साथ मिलकर उन्होंने चेन्नई में द इंडियन न्यूज क्रॉनिकल शुरू किया। 21 नवंबर, 1951 को गुप्ता का निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद रामनाथ गोयनका ने उस अखबार का नाम 'द इंडियन एक्सप्रेस' कर दिया।

*****

इंदिरा प्रियदर्शिनी गांधी

19 नवम्बर को स्वाधीनता सेनानी और भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री और जवाहर लाल नेहरू की पुत्री इंदिरा प्रियदर्शिनी गांधी की जयंती होती है। उनका जन्म 19 नवंबर, 1917 को उत्तर प्रदेश के इलाहबाद में हुआ था। इंदिरा गांधी का बचपन स्वतंत्रता संघर्ष में ही बीता क्योंकि उनका पूरा परिवार इस संघर्ष में सक्रिय रूप से शामिल था। वे अकसर अपने दादा मोती लाल नेहरू को जेल जाते देखती थी । इसी तरह उनके पिता भी स्वाधीनता आंदोलन के लिए 15 वर्ष से अधिक समय जेल में रहे। 1930 में इंदिरा ने कांग्रेस पार्टी की सहायता करने के लिए बच्चों की वानर सेना बनाई। सितंबर 1942 में

इंदिरा गांधी को जेल भेजा गया। उन्होंने गांधीजी के मार्गदर्शन में 1947 में दिल्ली के हिंसा ग्रस्त क्षेत्रों में काम किया। बाद में प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने 1971 में बांग्लादेश की मुक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रधानमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान इंदिरा गांधी ने 18 मई, 1974 को पोखरन में शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण किया। उन्होंने गरीबों के कल्याण के लिए अनेक कार्यक्रम शुरू किए। खाद्य उत्पादन में भारत की आत्मनिर्भरता में हरित क्रांति का बड़ा योगदान है जिसे शुरू करने का श्रेय भी इंदिरा गांधी को ही हासिल है। उन्हें 1972 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

****

वल्लीयप्पन ओलगनाथन चिंदबरम

18 नवम्बर को महान स्वाधीनता सेनानी और कवि वल्लीयप्पन ओलगनाथन चिंदबरम की पुण्यतिथि होती है। उन्हें वी ओ सी भी कहा जाता था। वे कप्पालोट्टिया तमिझन या द तमिल हेल्समैन के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। वे प्रसिद्ध वकील, मजदूर संघ के नेता और इंडियन नेशनल कांग्रेस के नेता भी थे। चिदंबरम ने कोयला मिलों के मजदूरों को एकजुट किया और इस तरह स्वदेशी आंदोलन के सामाजिक आधार का विस्तार किया। कठिन परीक्षा से गुजरने के बाद उन्होंने ब्रिटिश इंडिया स्टीम नैविगेशन कंपनी के एकाधिकार को चुनौती देने के लिए 1906 में स्वदेशी स्टीम नैवीगेशन कंपनी स्थापित की। तूतिकोरिन 20वीं सदी के आरंभिक वर्षों में स्वाधीनता संघर्ष का गढ़ बन गया था। वी ओ चिदंबरम ने स्वदेशी और बहिष्कार के सिद्धांत के साथ राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के बीज बोए। अंग्रेजों ने उन पर राजद्रोह के आरोप लगाए और आजीवन कारावास की सजा दी। उनका बैरिस्टर का लाइसेंस भी वापस ले लिया गया। तूतिकोरिन में इंडियन नेशनल कांग्रेस के कार्यालय में 18 नवंबर 1936 को वी ओ सी का निधन हो गया।

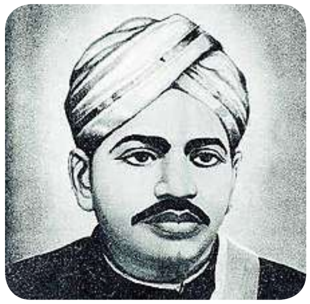

****

बटुकेश्वर दत्त

महान स्वाधीनता सेनानी और क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त का जन्म 18 नवंबर 1910 को पश्चिम बंगाल के बर्धमान जिले में हुआ था। दत्त का बचपन उत्तर प्रदेश के कानपुर में बीता और वहीं उन्होंने पढ़ाई की। क्रांतिकारी के रूप में उनका जीवन किशोरावस्था से भी पहले शुरू हो गया था। जब उन्होंने कानपुर की मॉल रोड पर अंग्रेजों को एक भारतीय बच्चे की बेरहमी से पिटाई करते देखा। वह बच्चा सड़क पर घूम रहा था जो भारतीयों के लिए प्रतिबंधित थी। इस घटना ने बटुकेश्वर दत्त पर गहरा प्रभाव डाला और उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया। प्रताप के संपादक सुरेशचंद्र भट्टाचार्य के माध्यम से दत्त सचींद्रनाथ सान्याल जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आए जो हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सह-संस्थापक थे। बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह उसी समय रिवॉल्यूशनरी पार्टी में शामिल हुए। कानपुर में रहने के दौरान उनकी दोस्ती गहरी होती गई। दत्त ने बांग्ला भाषा सीखने में भी भगतसिंह की सहायता की और काजी नजरुल इस्लाम की कविता से उनका परिचय कराया जिसे वे अकसर गाते थे।

8 अप्रैल, 1929 को जब ट्रेड डिस्प्यूट्स और पंजाब सेफ्टी बिल्स के विरोध में बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह ने सेंट्रल असैंबली में धुएं के बम फेंके तो उन्होंने निर्भीकता से इंकलाब जिंदाबाद और साम्राज्यवाद का नाश हो जैसे नारे लगाए। बटुकेश्वर दत्त को असैम्बली बम केस में आजीवन कारावास की सजा हुई और अंडमान की सेलुलर जेल भेज दिया गया। वहां उन्होंने राजनीतिक कैदियों के अधिकारों के लिए दो बार भूख हड़ताल की। बाद में 1937 में उन्हें सेलुलर जेल से हजारीबाग जेल भेज दिया गया। वहां से दत्त को दिल्ली जेल और अंत में पटना जेल भेजा गया।

दत्त को 8 सितंबर 1938 को रिहा किया गया क्योंकि कई बीमारियों के कारण उनकी हालत बिगड़ने लगी थी। दत्त को इस शर्त पर रिहा किया गया कि वे किसी तरह की हिंसक राजनीतिक गतिविधि में शामिल नहीं होंगे या हिंसा को बढ़ावा देने वाले किसी राजनीतिक संगठन से नहीं जुड़ेंगे। रिहा होने पर उनकी सेहत ठीक होने लगी तो दत्त फिर क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे। बटुकेश्वर दत्त ने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें 1947 में रिहा किया गया। 20 जुलाई, 1965 को दिल्ली में कैंसर से बटुकेश्वर दत्त की मृत्यु हो गई। भगतसिंह की 85 वर्ष की माताजी अकसर अस्पताल में बटुकेश्वर दत्त को देखने जाती थीं । दत्त की अंतिम इच्छा के अनुसार भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू के स्मारक के पास दत्त का अंतिम संस्कार किया गया।

****

लाला लाजपत राय

स्वाधीनता संघर्ष के नायक और महान क्रांतिकारी लाला लाजपत राय की पुण्यतिथि 17 नवम्बर को होती है। पंजाब केसरी के नाम से लोकप्रिय लालाजी लाल बाल पाल की मशहूर तिकड़ी के एक स्तंभ थे। लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल को लाल बाल पाल के नाम से भी जाना जाता है। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी, 1865 को पंजाब के ढुंडिके में हुआ था। 1886 में वे हिसार चले गए और वकालत करने लगे। उन्होंने पत्रकारिता शुरू की और द ट्रिब्यून जैसे कई अखबारों में लेख लिखे। 1914 में लाला जी ने वकालत छोड़ दी और भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल हो गए।

लाला लाजपत राय ने न्यूयार्क में इंडियन होम रुल लीग की स्थापना की और मासिक पत्रिका यंग इंडिया की शुरुआत की। उन्होंने हिंदुस्तान इन्फोर्मेशन कांग्रेस का भी प्रकाशन किया। इंडियन नेशनल कांग्रेस में शामिल होने और पंजाब में राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने के कारण लाला लाजपत राय को 1907 में मुकदमा चलाए बिना ही बर्मा के मांडले से निष्कासित कर दिया गया। जब वायसराय लॉर्ड मिंटो विध्वसंक गतिविधियों के लिए उनकी हिरासत और बढ़ाने के लिए सबूत जुटाने में नाकाम रहे तो लालाजी उसी वर्ष भारत आ गए। उन्होंने लाहौर में ब्रादलॉफ हॉल में नेशनल कॉलेज की स्थापना की और विद्यार्थी के रूप में भगतसिंह का नामांकन किया। 1920 में लाला लाजपत राय इंडियन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण वे 1921 से 1923 तक जेल में रहे। रिहाई के बाद वे विधान सभा के लिए चुने गए। 1928 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में संवैधानिक सुधारों पर चर्चा के लिए साइमन कमीशन का गठन किया। जब 30 अक्टूबर, 1828 को कमीशन लाहौर आया तो लाला लाजपत राय ने अहिंसक विरोध शुरू कर दिया क्योंकि आयोग का कोई भी सदस्य भारतीय नहीं था।

पुलिस सुपरिंटेंडेंट जेम्स ए स्कॉट ने प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज का आदेश दिया और व्यक्तिगत रूप से लालाजी पर प्रहार किया। लालाजी के सिर में गंभीर चोट आई। अडिग रहते हुए लालाजी ने कहा, "मैं घोषित करता हूं कि आज मुझ पर पड़ी लाठी भारत में ब्रिटिश शासन के ताबूत में अंतिम कील साबित होगी। "उनकी चोट ठीक नहीं हुई और हृदय गति रुकने के कारण 17 नवंबर, 1928 को उनका निधन हो गया।

****

विनोबा भावे

15 नवम्बर को स्वाधीनता सेनानी और समाज सुधारक विनोबा भावे की पुण्यतिथि होती है। अप्रैल 1951 में उन्होंने भूदान आंदोलन शुरू किया जिसके तहत समृद्ध जमींदारों से अपनी जोत का छठा हिस्सा भूमिहीन लोगों को दान करने का आग्रह किया गया ताकि वे फसल उगा सकें। उन्होंने इसे प्रेम के माध्यम से क्रांति बताया। ऐच्छिक रूप से भू-सुधार आंदोलन तेलंगाना के पोचमपल्ली में शुरू हुआ। विनोबा दान में मिली अनेक एकड़ भूमि जुटाने में सफल रहे। उन्होंने वह जमीन उड़ीसा भूदान बिल के तहत वितरित कर दी जिसे राज्य सरकार ने 26 जुलाई, 1953 को पारित कराया।

वह उड़ीसा ही था जिसने इस आंदोलन को ग्रामदान के नए रूप में अपनाया। विनोबा ने अपने दम पर 15 लाख एकड़ से अधिक जमीन जुटाई जिसे गरीबों को दान कर दिया गया। 1982 में विनोबा अत्यधिक बीमार हो गए और खाना-पीना तथा दवा लेनी भी बंद कर दी। 15 नवंबर 1982 को 87 वर्ष की उम्र में भावे का निधन हो गया। उन्हें मरणोपरांत 1983 में भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया गया।

*****

करतार सिंह सराभा, विष्णु गणेश पिंगले, बख्शीश सिंह, जगत सिंह, सुरैन सिंह, ईशर सिंह और हनुमान सिंह

16 नवंबर को सात स्वाधीनता सेनानियों की पुण्यतिथि होती है जिन्हें 1915 में लाहौर षड्यंत्र केस में उनकी भूमिका के लिए फांसी दी गई थी। ये हैं - करतार सिंह सराभा, विष्णु गणेश पिंगले, बख्शीश सिंह, जगत सिंह, सुरैन सिंह, ईशर सिंह और हनुमान सिंह। क्रांतिकारी और देशभक्त करतार सिंह सराभा तब मात्र 19 वर्ष के थे जब उन्हें अंग्रेजों ने फांसी दी। करतार सिंह का जन्म 24 मई, 1896 को लुधियाना के निकट सराभा गाँव में हुआ था। उन्होंने बेसिक शिक्षा लुधियाना में पूरी की। 1912 में करतार सिंह को उच्च शिक्षा के लिए अमरीका भेजा गया। सैन फ्रांसिस्को पहुंचने पर उन्होंने देखा कि सवाल पूछते समय भारतीयों के साथ बुरा बर्ताव किया जाता था जबकि अन्य देशों के नागरिकों को न्यूनतम औपचारिकताएं पूरी करने के बाद जाने दिया जाता था। इससे युवक सराभा क्रोधित हो गया और उन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन के अस्तित्व पर सवाल पूछने शुरू कर दिए। बर्कले में कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में भारतीय विद्यार्थियों के नालंदा क्लब के साथ जुड़ाव से सराभा में देशभक्ति की भावना और परवान चढ़ी।

1913 में जब गदर आंदोलन शुरू हुआ तो करतार सिंह उसके प्रमुख सदस्यों में शामिल हो गए। सराभा को गदर पार्टी के मुखपत्र गदर के पंजाबी संस्करण का प्रभारी बनाया गया। शीघ्र ही प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो गया और गदर पार्टी के सदस्यों ने फैसला किया कि मातृभूमि में पैर जमाने और देशवासियों को एकजुट करने के लिए यही सही समय है। 15 सितंबर, 1915 को करतार सिंह ने भारत के लिए प्रस्थान किया। वे बनारस में जाने माने क्रांतिकारी रास बिहारी बोस से मिले और उन्हें गदर पार्टी के 20 हजार सदस्यों और कार्यकर्ताओं के भारत आने की सूचना दी। उन्होंने क्रांति की योजना बनाई। दुर्भाग्य से अंग्रेजों को क्रांतिकारियों की योजना की भनक लग गई और उनकी धरपकड़ के लिए व्यापक अभियान शुरू किया गया। कई सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन इससे करतार सिंह योजना के अनुसार काम करने से नहीं रुके। वे क्रांति की तैयारी करने के लिए पंजाब चले गए। उन्होंने ब्रिटिश सेना में शामिल भारतीयों को एकजुट करने और उन्हें आंदोलन में शामिल करने पर ध्यान केंद्रित किया। 21 फरवरी, 1915 को विद्रोह करने की योजना बनाई गई। इसके तहत मियां मीर और फीरोजपुर छावनियों पर हमले की योजना बनी। इस बीच, अंग्रेजों ने तेजी से कार्रवाई की और अनेक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया।

हालांकि करतार सिंह अंग्रेजों की गिरफ्तारी से बचने में सफल रहे। लेकिन वायदे के अनुसार क्रांति फलीभूत नहीं हो सकी। लेकिन करतार सिंह ने हिम्मत नहीं हारी और 2 मार्च, 1915 को अंतिम प्रयास के तहत सरगोधा में भारतीय सैनिकों को प्रोत्साहित करने और सैन्य व्रिदोह के लिए मनाने का प्रयास किया। इस बार एक सैनिक ने करतार सिंह को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें मुकदमे के लिए गदर पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ लाहौर भेजा गया जिसे लाहौर षड्यंत्र केस का नाम दिया गया। करतार सिंह और कई अन्य पर फरवरी के षड़यंत्र में भूमिका के लिए अप्रैल 1915 में लाहौर षड्यंत्र केस में मुकदमा चला। षडयंत्र में भूमिका के बारे में सवाल पूछने पर सराभा ने कहा कि अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए भारतीयों को प्रोत्साहित करना उनका कर्तव्य है। 16 नवंबर, 1915 को लाहौर जेल में सराभा को फांसी दे दी गई। भारत अपने नायक शहीद करतार सिंह सराभा को सदैव याद रखेगा।

स्वाधीनता संघर्ष के हीरो विष्णु गणेश पिंगले को भी करतार सिंह और अन्य क्रांतिकारियों के साथ ही फांसी दी गई थी। गणेश ने 26 वर्ष की उम्र में ही देश पर प्राण न्योछावर कर दिए थे। उनका जन्म पुणे जिले के तालेगाँव धामधेरे गाँव में 2 जनवरी, 1889 को हुआ था। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद पिंगले वाशिंगटन चले गए और इलेक्ट्रोनिक इंजीनियरिंग की उपाधि ली। अमरीका में निवास के दौरान वे लाला हरदयाल, करतार सिंह सराभा और पंडित कांशीराम जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आए और गदर पार्टी के सक्रिय सदस्य बन गए। भारत आने पर उन्होंने पंजाब में क्रांतिकारी गतिविधियां शुरू कर दीं। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गदर पार्टी ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की योजना बनाई। पिंगले को 24 मार्च 1917 को मेरठ छावनी से गिरफ्तार कर लिया गया। उनके पास से 18 बम और अन्य विस्फोटक सामग्री बरामद हुई। 16 नवंबर, 1915 को लाहौर जेल में पिंगले को फांसी दे दी गई।

******

पीलू मोदी

14 नवंबर को पीलू मोदी की जयंती होती है। मोदी वास्तुविद, राजनेता और स्वतंत्र पार्टी के संस्थापक सदस्य थे। वे चौथी और पांचवी लोकसभा के लिए चुने गए। मोदी 1978 से मृत्यु तक राज्य सभा के सदस्य भी रहे।

मोदी की शिक्षा देहरादून के दून स्कूल में हुई थी। उच्च शिक्षा बर्कले की कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी से प्राप्त की जहां से उन्होंने वास्तुकला में स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि ली।

राजनीतिक जीवन में पीलू मोदी उदारवाद और स्वतंत्रता के पक्षधर थे। 1967 के आम चुनाव में उन्हें गुजरात की गोधरा सीट से लोकसभा के लिए चुना गया। 1971 में वे फिर से लोकसभा चुनाव जीते और मार्च 1977 तक लोकसभा सदस्य रहे। 1972 में उन्होंने वास्तुकला अधिनियम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1975 में भारत में आपातकाल के समय मोदी को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें आंतरिक सुरक्षा अनुरक्षण अधिनियम के तहत प्रदत्त विवादित अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए इंन्दिरा गांधी सरकार ने गिरफ्तार किया था।

10 अप्रैल, 1978 को मोदी राज्यसभा सदस्य बन गए और 1983 में मृत्यु तक राज्यसभा की सेवा की।

******

बिरसा मुंडा

15 नवम्बर को निडर स्वाधीनता सेनानी और आदिवासी नायक बिरसा मुंडा की जयंती होती है। उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को मौजूदा झारखंड के खुंती जिले के उलिहातु गाँव में हुआ था। बिरसा छोटा नागपुर क्षेत्र की मुंडा जनजाति से थे। उन्हें प्रेम से धरती अब्बा कहा जाता था। उन्होंने अपने अनुयायियों को जनजातीय जड़ों की तरफ लौटने और अपनी परंपराओं का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया। बिरसा को विश्वास था कि स्वशासन ही जनजातीय अधिकारों की रक्षा करने का एकमात्र रास्ता है। उन्होंने 'अबुआ राज सेतेर जना, महारानी राज तुंडु जना' का नारा दिया था जिसका मतलब है आओ महारानी का शासन समाप्त करें और अपना शासन कायम करें। यह नारा उस समय बहुत लोकप्रिय हुआ था। जिसने बिरसा की गुरिल्ला सेना को संगठित करने और छोटा नागपुर क्षेत्र के विभिन्न भागों में ब्रिटिश सेना पर हमले करने में सहायता की। 1890 के दशक के आखिर में बिरसा ने सामंतवादी शासन प्रणाली को उखाड़ने के लिए कमर कस ली थी जिसे अंग्रेजों ने आदिवासी वनभूमि के लिए शुरू किया था। इस प्रणाली के तहत अंग्रेजों ने अन्य राज्यों के लोगों को आदिवासियों की भूमि पर काम करने के लिए आमंत्रित किया और सारा मुनाफा खुद डकारने लगे। इस प्रकार जमीन के मूल मालिक लाचार हो गए और उनकी आजीविका पर बुरा असर पड़ा। मार्च 1900 में अंग्रेज और गुरिल्ला सेना की लड़ाई के बीच चक्रधरपुर में जामकोपई के जंगल में बिरसा को गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ महीने बाद हिरासत में ही उनका निधन हो गया। भारत के स्वतंत्रता संघर्ष का वह नायक 24 वर्ष की उम्र में 9 जून को शहीद हो गया। उनकी मृत्यु के लगभग एक दशक बाद अंग्रेज छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट लाए जिसके तहत आदिवासियों की जमीन गैर-आदिवासियों को देने पर रोक लगा दी गई। झारखंड राज्य का निर्माण वर्ष 2000 में बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर ही हुआ।

******

नमक्कल कविग्नार

19 अक्टूबर 1888 को, नमक्कल कविग्नार के नाम से विख्यात वी. रामलिंगम पिल्लई का जन्म, तमिलनाडु के नमक्कल जिले के मोहनूर में वेंकटरमण और अम्मानियाम्माल के घर हुआ था। उनके पिता पुलिस विभाग में कार्यरत थे। उन्होंने 1909 में त्रिची के बिशप हेबर कॉलेज से बीए की। प्रारंभ में उन्होंने नमक्कल तहसीलदार के कार्यालय में एक क्लर्क के रूप में काम किया और बाद में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक के रूप में सेवाएं दीं।

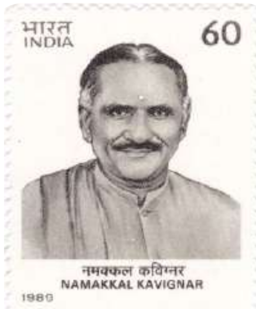

वी. रामलिंगम पिल्लई ने देशभक्ति के जोश से ओतप्रोत सैकड़ों कविताएँ लिखीं। उन्होंने 1930 में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ नमक सत्याग्रह में भी भाग लिया और एक साल जेल में रहे।

उनके उपन्यासों और गीतों ने तमिलनाडु के युवाओं को स्वतंत्रता आंदोलन और दुश्मन से लड़ने के गांधीवादी तरीकों के बारे में बताया।

प्यार से राष्ट्रवादी कवि कहे जाने वाले रामलिंगम पिल्लई ने, लिखा था- बिना तलवार और बिना रक्त के एक युद्ध छेड़ा जा रहा है, जो सत्य की अमरता में विश्वास करते हैं वे बिना किसी हिचकिचाहट के शामिल हो सकते हैं।

रामलिंगम पिल्लई के उपन्यास मलाइक्कलन पर स्वतंत्रता के बाद एक तमिल फिल्म बनाई गई थी और जो सुपरहिट हुई और इसे सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रपति पदक मिला था।

इस फिल्म को बाद में हिंदी में आजाद के नाम से बनाया गया।

एक भारतीय और तमिल होने के गौरव पर उनकी कविताओं और खादी पर उनके छंदों को आज भी तमिलनाडु में उद्धृत किया जाता है।

उन्हें 1971 में "पद्मभूषण" से अलंकृत किया गया।

****

अनंतराव भालेराव

मराठवाडा जन नेता अनंतराव भालेराव का जन्म 14 नवंबर, 1918 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद में हुआ था।

वे अन्ना के नाम से भी लोकप्रिय थे। अनंतराव ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने मूल्यों पर आधारित जीवन जिया। वे युवा अवस्था में हैदराबाद मुक्ति आंदोलन में शामिल हुए जिसके लिए उन्हें जेल भी हुई। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन किसानों, भूमिहीन खेती मजदूरों और समाज के सामान्य वर्ग के लोगों की आवाज उठाई।

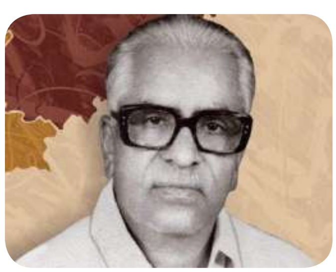

अनतंराव ने राष्ट्रीय विचारधारा के साथ एक स्कूल भी चलाया।

1944 में उन्होंने लगान की वसूली के विरोध में निजाम सरकार के विरुद्ध आंदोलन शुरू किया। अनंतराव ने वाघमारे के साथ मराठवाड़ा अखबार का संपादन भी किया। उन्होंने मराठवाड़ा अखबार के द्वार तक लोगों की शिकायतें प्रस्तुत करने का अवसर देकर लोगों के अधिकारों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अन्याय करने वालों को बेनकाब किया। परिणामस्वरूप लोगों ने सोचना शुरू कर दिया कि मराठवाड़ा अखबार क्षेत्र के लोगों की आवाज है। लोग अब अनंतराव को जननेता के रूप में देखने लगे थे। हैदराबाद में इस अखबार पर प्रतिबंध लगा दिया गया। 15 अगस्त, 1947 को लोगों से अपने घरों और सार्वजनिक स्थानों पर तिरंगा फहराने के माध्यम से सत्याग्रह की अपील की गई। इसके कारण निजाम की सशस्त्र पुलिस के साथ टकराव हुआ। हिल्स ऑफ पार्लर में जंगल सत्याग्रह के दौरान सात से आठ हजार लोग शामिल हुए। अनंतराव ने इन लड़ाइयों का नेतृत्व किया।

1948 में निजाम का शासन समाप्त होने के साथ मराठवाड़ा को फिर शुरू किया गया। अन्ना 1975 में आपातकाल के दौरान परीक्षा की घड़ी में एक बार फिर जेल गए।

26 अक्टूबर, 1995 को अनंतराव का निधन हो गया।

उन्हें महान जननेता और राष्ट्रवादी पत्रकार के रूप में आज भी याद किया जाता है।

*****

मिंजुर भक्तवत्सलम

मिंजुर भक्त वत्सलम का जन्म 9 अक्टूबर 1897 को मद्रास प्रेसीडेंसी में हुआ था। उन्होंने कानून का अध्ययन किया और मद्रास उच्च न्यायालय में वकालत की । वे छोटी उम्र में ही स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए थे।

भक्त वत्सलम स्नातक स्तर की पढ़ाई के दौरान ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भी शामिल हो गए और 1922 में मद्रास प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बने।

भक्तवत्सलम ने दैनिक समाचार पत्र 'इंडिया' शुरू किया और इसे 1933 तक चलाया। वेदारण्यम में नमक सत्याग्रह के दौरान वे घायल हो गए थे। उन्हें 1932 में भारत के स्वतंत्रता दिवस समारोह के आयोजन के लिए गिरफ्तार किया गया था और उन्होंने छह महीने जेल में बिताए थे। 1936 के नगर निकाय चुनावों में, भक्तवत्सलम मद्रास सिटी कॉरपोरेशन के लिए चुने गए और उन्होंने डिप्टी मेयर के रूप में कार्य किया। 40 साल की उम्र में, भक्तवत्सलम ने 1937 के चुनाव में तिरुवल्लूर सीट जीत कर मद्रास विधानसभा में प्रवेश किया।

भक्तवत्सलम ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और अंग्रेजों ने उन्हें जेल में डाल दिया।

उन्होंने 1950 के दशक के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व किया और 1963 से 1967 तक वर्तमान तमिलनाडु और तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी के मुख्यमंत्री रहे। 1967 के चुनावों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की हार के बाद, भक्तवत्सलम ने आंशिक रूप से राजनीति से संन्यास ले लिया।

13 फरवरी 1987 को 89 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

******

कलोजी नारायण राव

13 नवंबर कलोजी नारायण राव की पुण्यतिथि होती है। उनका जन्म 9 सितंबर 1914 को बीजापुर में हुआ था। कलोजी के व्यक्तित्व को निखारने में उनके बड़े भाई जो एक उर्दू के कवि थे, उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कलोजी नारायण राव ने हालाँकि छोटी उम्र से ही तेलुगु में पढाई की लेकिन उन्होंने मराठी, कन्नड़, हिंदी और उर्दू में भी कविताएँ लिखीं।

अपने छात्र जीवन के दौरान और बाद में भी वे उस समय के लोकप्रिय आंदोलनों- आर्य समाज, आंध्र महासभा से बहुत प्रभावित थे और उनकी गतिविधियों में भाग लेते थे।

एक समाज सुधारक होने के नाते, कलोजी ने अपनी कविताओं के माध्यम से तेलंगाना के लोगों में जागरूकता पैदा की। उन्होंने 'जन्म तुम्हारा है, मृत्यु तुम्हारी है लेकिन जीवन, देश के लिए है' का नारा दिया।

महात्मा गांधी और जयप्रकाश नारायण के एक उत्साही प्रशंसक, कलोजी ने सत्याग्रह और पुस्तकालय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। पुस्तकालय आंदोलन ने 1930 के दशक की शुरुआत से साहित्यिक और पढ़ने की संस्कृति को जनता के बीच बढ़ावा देने का काम किया था। अपने काव्य संग्रह ना गोदावायानी मेरा विरोध में, कलोजी ने अपने जीवन, साहित्य और सक्रियता को दर्शाया है।

कलोजी ने निजाम के निरंकुश शासन के खिलाफ भी जमकर लिखा। हैदराबाद राज्य के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए कलोजी को हैदराबाद के निज़ाम ने कैद कर लिया था।

कलोजी 1958-60 के दौरान आंध्रप्रदेश विधानसभा के सदस्य थे।

उन्हें 1992 में पद्म - विभूषण से सम्मानित किया गया था।

कलोजी ने लिखा था-"मैं आज की वास्तविकता, बीते कल का सपना और आने वाले कल की याद हूं। "2002 में कलोजी का निधन हो गया। उनकी इच्छा के अनुसार उनका शरीर अनुसंधान के लिए वारंगल के काकातीया मेडिकल कॉलेज को दान दे दिया गया था।

तेलंगाना सरकार ने कलोजी के जन्मदिन को तेलंगाना भाषा दिवस के रूप में घोषित कर उन्हें सम्मानित किया।

****

पंडित मदन मोहन मालवीय

12 नवंबर, प्रसिद्ध भारतीय शिक्षाविद् और स्वतंत्रता सेनानी पंडित मदन मोहन मालवीय की पुण्यतिथि होती है, जिन्हें 'महामना' भी कहा जाता है।

उनका जन्म 25 दिसंबर, 1861 को इलाहाबाद में हुआ था । उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में पढ़ाई की। फिर वह एक स्कूल शिक्षक और बाद में वकील तथा एक अखबार के संपादक बने। वह हिंदू महासभा के संस्थापक भी हैं।

असहयोग आंदोलन में मालवीय एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। हालाँकि, वे तुष्टीकरण की राजनीति और खिलाफत आंदोलन में कांग्रेस की भागीदारी के विरोधी थे।

मदन मोहन मालवीय 1928 में लाला लाजपत राय, जवाहरलाल नेहरू और कई अन्य लोगों के साथ साइमन कमीशन के विरोध में शामिल हुए, जिसे अंग्रेजों ने भारत के भविष्य पर विचार करने के लिए स्थापित किया था। जैसे ही इंग्लैंड में 'ब्रिटिश खरीदें' अभियान ने पैर पसारने शुरू किए मदन मोहन मालवीय ने 30 मई 1932 को एक घोषणा-पत्र जारी कर दिया, जिसमें भारत में 'भारतीय खरीदें' आंदोलन पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया गया था।

मालवीय 1931 में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में एक प्रतिनिधि थे। सरोजिनी नायडू की गिरफ्तारी के बाद 1932 में दिल्ली में कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त होने के कुछ ही दिनों बाद, सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, मालवीय को 25 अप्रैल 1932 को दिल्ली में 450 अन्य कांग्रेस स्वयंसेवकों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया । 1933 में, कलकत्ता में, उन्हें फिर से कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया।

मालवीय ने हमेशा हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए प्रयास किया। सांप्रदायिक सद्भाव पर उनके दो भाषण काफी प्रसिद्ध हैं। उन्होंने पहला 1922 में लाहौर में और दूसरा 1931 में कानपुर में दिया था। 1933 में कांग्रेस के कलकत्ता सत्र में अपने अध्यक्षीय भाषण में मदन मोहन मालवीय ने कहा था-मैं सभी हिंदुओं, मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों, पारसियों और अन्य देशवासियों से प्रार्थना करता हूं कि वे सभी सांप्रदायिक मतभेदों को भुला दें और सभी वर्गों के लोगों के बीच राजनीतिक एकता स्थापित करें"।

शिक्षा और समाज सेवा के अपने संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने 1911 में अपनी जमीजमाई वकालत छोड़ दी । जीवन भर संन्यास की परंपरा को निभाने के लिए, उन्होंने समाज सेवा के लिए जीवन समर्पित करने की घोषित प्रतिबद्धता का पालन किया। लेकिन जब चौरी-चौरा मामले में 177 स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी की सजा सुनाई गई, तो मदनमोहन मालवीय ने अपनी प्रतिज्ञा के बावजूद उनका मुकदमा लड़ा और 156 स्वतंत्रता सेनानियों को बरी कराया ।

एक प्रतिभाशाली वक्ता होने के नाते उन्होंने मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीय गिरमिटिया श्रमिकों की भर्ती पर प्रतिबंध और रेलवे के राष्ट्रीयकरण जैसे मुद्दों पर बहस में सक्रिय रूप से भाग लिया।

देश के शैक्षिक मानकों के उत्थान में गहरी दिलचस्पी रखने वाले मालवीय 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रमुख संस्थापक थे। उन्होंने 1919 से 1938 तक लगभग दो दशकों तक विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्य किया और मृत्युपर्यंत स्कूल में सक्रिय रहे।

जनता के प्रति मालवीय की चेतना ने उन्हें हिंदी भाषा के साप्ताहिक, अभ्युदय द लीडर ऑफ इलाहाबाद, अंग्रेजी भाषा के एक दैनिक और हिंदी मासिक *मर्यादा* के प्रकाशन के लिए प्रेरित किया । वह 1924 से लेकर भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति से एक साल पहले 1946 में मृत्यु तक हिंदुस्तान टाइम्स के निदेशक मंडल के अध्यक्ष रहे।

मदनमोहन मालवीय को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था।

****

विष्णु दत्तात्रेय चितले

स्वतंत्रता सेनानी विष्णु दत्तात्रेय चितले का जन्म 4 जनवरी, 1906 को महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था।

1940 में इंडियन नेशनल कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में चितले और के एम अशरफ ने मुख्य प्रस्ताव में संशोधन का प्रस्ताव किया जिसे स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की तुरंत शुरुआत कहा गया। इसमें ब्रिटिश सरकार के साथ किसी भी समझौते से इनकार किया गया था। 1955 में चितले ने पुर्तगाली नियंत्रण वाले गोवा के भारत में विलय की मांग करते हुए एक हजार से अधिक सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया। पुर्तगाली सेना ने गोलीबारी शुरू कर दी और कई साथियों के साथ चितले घायल हो गए। बाद में चितले 1957 से 1961 में मृत्यु तक बंबई विधानसभा के सदस्य रहे। महान राष्ट्रवादी चितले को शत–शत नमन।

******

गोलमेज सम्मेलन इवेंट

12 नवंबर 1930 को पहला गोलमेज सम्मेलन लंदन में शुरू हुआ था। 1919 में गांधीजी के नेतृत्व में किए गए असहयोग आंदोलन के साथ, स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था। इसी दौरान पारित भारत सरकार अधिनियम 1919 में भारतीयों की मांग के अनुरूप शासन की सभी शाखाओं में उनकी अधिक भागीदारी का प्रावधान नहीं किया गया था। ब्रिटिश राजव्यवस्था के एक खास वर्ग के बीच भी भारत को प्रभुत्व का दर्जा देने की मांग बढ़ रही थी, इसलिए भारत सरकार अधिनियम 1919 के कार्यान्वयन की जांच के लिए साइमन कमीशन नियुक्त किया गया था।

तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री रामसे मैकडोनाल्ड ने साइमन रिपोर्ट को नामुनासिब मानते हुए 1929 में लंदन में गोलमेज सम्मेलनों की एक श्रृंखला आयोजित करने का निर्णय लिया। ऐसे तीन सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

पहला गोलमेज सम्मेलन 12 नवंबर 1930 से 19 जनवरी 1931 तक आयोजित किया गया था। सम्मेलन से पहले, महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया था। नतीजतन, कांग्रेस ने इस सम्मेलन में भाग नहीं लिया लेकिन अन्य भारतीय दलों के प्रतिनिधि और कई शासक इसमें शामिल हुए। डॉ बी आर अम्बेडकर ने दलित वर्गों का मुद्दा उठाया और उनके लिए अलग निर्वाचक मंडल की मांग की। तेज बहादुर सप्रू ने अखिल भारतीय संघ के विचार को आगे बढ़ाया। मुस्लिम लीग ने भी इसका समर्थन किया था। रियासतें भी स्वतंत्रता के लिए आगे आईं, लेकिन शर्त रखी कि उनकी आंतरिक संप्रभुता बनी रहनी चाहिए।

पहले गोलमेज सम्मेलन के परिणाम खास नहीं रहे। भारत को एक संघ बनना था, रक्षा और वित्त के संबंध में सुरक्षा उपायों पर सहमति हुई थी, लेकिन इन सिफारिशों को लागू करने की दिशा में विशेष प्रयास नहीं किए गए और भारत में सविनय अवज्ञा जारी रही। ब्रिटिश सरकार ने महसूस किया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भारत में संवैधानिक सरकार का भविष्य तय करने में शामिल किए जाने की जरूरत है। ब्रिटिश भारत सरकार ने गांधीजी और लॉर्ड इरविन के बीच बातचीत के अनुकूल माहौल बनाने के लिए कांग्रेस के राजनीतिक नेताओं को रिहा कर दिया। पहले गोलमेज सम्मेलन की समाप्ति के बाद, तेज बहादुर सप्रू, सी.वाई. चिंतामणि और श्रीनिवास शास्त्री ने महात्मा गांधी को वायसराय लॉर्ड इरविन से बातचीत के लिए मनाने की कोशिश की। मार्च 1931 में वार्ता के बाद गांधी- इरविन समझौते पर हस्ताक्षर किए गए और गांधीजी सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करने तथा दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए सहमत हुए।

****

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

11 नवंबर को मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती होती है।

1888 में मक्का में जन्मे अबुल कलाम आजाद ने अपने पिता और अन्य शिक्षकों से कलकत्ता में घर पर पारंपरिक इस्लामी शिक्षा प्राप्त की। वे अरबी, अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी, फारसी और बंगाली जैसी कई भाषाओं के अच्छे जानकार और एक विख्यात विद्वान तथा कवि थे। उन्होंने धर्म और जीवन के संकीर्ण दृष्टिकोण से अपनी मानसिक मुक्ति के संकेत के रूप में उपनाम "आजाद" को अपनाया।

मौलाना अबुल कलाम आजाद छोटी उम्र से ही पत्रकारिता और राजनीति में सक्रिय हो गए थे। वह बंगाल के दो प्रमुख क्रांतिकारियों- अरबिंदो घोष और श्री श्याम सुंदर चक्रवर्ती से प्रेरित होकर ब्रिटिश शासन के खिलाफ क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गए। दो वर्षों के भीतर, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने पूरे उत्तर भारत और बॉम्बे में गुप्त क्रांतिकारी केंद्र स्थापित करने में मदद की। 1912 में मौलाना आजाद ने उर्दू में अल-हिलाल नाम से एक साप्ताहिक पत्रिका शुरू की। सरकार ने 1914 में अल-हिलाल पर प्रतिबंध लगा दिया। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने भारतीय राष्ट्रवाद और हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रचार के समान मिशन के साथ एक और साप्ताहिक अल-बालाग निकालनी शुरु की । 1916 में, सरकार ने इस पर भी प्रतिबंध लगा दिया और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद को कलकत्ता से निष्कासित कर दिया।

खिलाफत आंदोलन के दौरान मौलाना आजाद, महात्मा गांधी से मिले। उनके आदर्शों से प्रभावित होकर, वह 1920 में कांग्रेस में शामिल हो गए। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद 1923 में 35 वर्ष की आयु में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में सेवा करने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे। उन्हें 1920 और 1945 के बीच अलग-अलग आरोपों में कई बार जेल भेजा गया, जिसमें सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी भी शामिल थी। उन्होंने एक ऐसे भारत की परिकल्पना की थी जो विभाजन का कड़ा विरोध करते हुए हिंदू और मुस्लिम दोनों को गले लगाए।

मौलाना अबुल कलाम आजाद संविधान सभा में, विशेषकर शिक्षा से संबंधित चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। उनका मानना था कि एक राष्ट्र के रूप में भारत को उच्च शैक्षिक मानकों की आकांक्षा करनी चाहिए। 1947 से 1958 में अपनी मृत्यु तक देश के पहले शिक्षा मंत्री के रूप में, उन्होंने 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की हिमायत की, क्योंकि उनका मानना था कि शिक्षा सभी नागरिकों का अधिकार है। उन्होंने अशिक्षित वयस्कों के लिए शिक्षा की सुविधा के लिए 'वयस्क शिक्षा बोर्ड' की स्थापना की। उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय विज्ञान संस्थान तथा आईआईटी जैसे अन्य शिक्षण संस्थानों की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मौलाना अबुल कलाम आजाद ने 22 फरवरी 1958 को अंतिम सांस ली। उनकी आत्मकथा 'इंडिया विन्स फ्रीडम' 1959 में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई थी। उन्हें 1992 में मरणोपरांत 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था। शिक्षा के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के कारण 11 नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

****

सुरेंद्रनाथ बनर्जी

10 नवंबर, 1848 को कलकत्ता में जन्मे सुरेंद्रनाथ बनर्जी 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में भारतीय राष्ट्रवाद के प्रमुख प्रेरकों में से एक थे। वे उदारवादी तरीकों में विश्वास रखते थे और संविधान के तहत संवैधानिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध थे। सुरेंद्रनाथ बनर्जी भारत में अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद लंदन चले गए। 1869 में वे भारतीय सिविल सेवा प्रतियोगी परीक्षा में सफल होने वाले दूसरे भारतीय बने।

उन्हें उनकी गृह-भूमि सिलहट में नियुक्त किया गया था। हालांकि, 1874 में उन्हें एक छोटी सी और जाहिरा तौर पर अनजाने में हुई प्रक्रियात्मक त्रुटि के लिए बर्खास्त कर दिया गया था। बनर्जी ने महसूस किया कि उनके साथ भेदभाव किया गया क्योंकि वह भारतीय थे। 1875 में कलकत्ता लौटने पर, उन्होंने भारतीयों को संगठित करने और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए राजनीति में कदम रखा। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए उन्होंने 1876 में इंडियन एसोसिएशन की स्थापना की। इसने भारत में राजनीतिक एकता की नव- जागृत भावना की अधिक व्यावहारिक प्रस्तुति के लिए मंच तैयार किया था। इंडियन एसोसिएशन का पहला सत्र दिसंबर 1883 में कलकत्ता में आयोजित किया गया था। इस सत्र में भारत के विभिन्न हिस्सों से सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

बनर्जी 37 वर्षों तक अध्यापन में सक्रिय थे और इसे अपना मुख्य व्यवसाय मानते थे, हालांकि वे राजनीतिक गतिविधियों में भी भाग लेते रहे। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने अब विद्यासागर कॉलेज के रूप में जाने जाने वाले, तत्कालीन मेट्रोपॉलिटन इंस्टीट्यूशन में अंग्रेजी साहित्य पढ़ाया । बाद में उन्होंने रिपन कॉलेज में सेवाएं दीं जिसका नाम अब सुरेंद्रनाथ कॉलेज है।

1878 में वे अंग्रेजी भाषा के एक समाचार पत्र बंगाली के मालिक बने। उन्होंने इसके माध्यम से लगभग आधी सदी तक उदारवादी विचारों का समर्थन किया। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय से ही इसमें बड़ी भूमिका निभाई। वह 1895 और 1902 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे।

सुरेंद्रनाथ बनर्जी राजनीतिक आंदोलन, बैठकों, याचिकाओं और विधायी कार्रवाई के उदारवादी तरीकों में विश्वास रखते थे। अंग्रेजी भाषा के उनके ज्ञान और एक वक्ता तथा वादी के रूप में उनके कौशल ने उन्हें एक उत्कृष्ट सार्वजनिक वक्ता बना दिया। 1905 में बंगाल के विभाजन के विरोध में वे अपने राजनीतिक जीवन के शिखर पर पहुँचे। इन वर्षों के दौरान उन्हें अकसर "बंगाल का बेताज बादशाह" कहा जाता था।

1921 में सुरेंद्रनाथ बंगाल की सुधारित विधानपरिषद के लिए चुने गए, उसी वर्ष उन्हें नाइट की उपाधि दी गई। उन्होंने 1921 से 1924 तक स्थानीय स्वशासन मंत्री के रूप में पदभार संभाला। 1923 के चुनावों में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने 6अगस्त, 1925 को बैरकपुर में अंतिम सांस ली।

****

चिदंबरम सुब्रमण्यम

स्वतंत्रता सेनानी और भारत रत्न चिदंबरम सुब्रमण्यम की मृत्यु 7 नवंबर, 2000 को हुई थी। अपने कॉलेज के दिनों से ही वे अंग्रेजों के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलन के सक्रिय सदस्य थे और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जेल गए थे। बाद में उन्हें संविधान सभा के लिए चुना गया।

स्वतंत्रता के बाद, सुब्रमण्यम ने कई मौकों पर केंद्रीय मंत्री के रूप में सेवाएं दीं और बाद में महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में भी कार्य किया। केंद्रीय खाद्य और कृषि मंत्री के रूप में, उन्होंने भारतीय हरित क्रांति की शुरुआत करने में मदद की। उन्हें 1998 में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था। हम इस महान भारतीय राष्ट्रवादी को प्रणाम करते हैं।

****

पुष्पलता दास

9 नवम्बर को असम की स्वतंत्रता सेनानी पुष्पलता दास की पुण्यतिथि होती है। सिर्फ छह साल की उम्र में, वह लोगों के बीच खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए 'बानर सेना' में शामिल हो गईं और चक्र संघ का गठन किया। उन्होंने अपनी माँ से प्रेरित होकर, मातृभूमि को मुक्त करने का संकल्प लिया और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

14 साल की उम्र में भगत सिंह की फांसी का विरोध करने पर उन्हें हाई स्कूल से निकाल दिया गया था। 1940 के दौरान पुष्पा लता दास की पढ़ाई छूट गई जब उन्हें 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' के लिए जेल में डाल दिया गया।

वर्ष 1940 से 1942 तक वे राष्ट्रीय योजना समिति की महिला उप समिति की सदस्य के रूप में बॉम्बे में थीं। उस दौरान, उन्होंने विकास और रचनात्मक कार्यों के लिए मृदुला साराभाई और विजय लक्ष्मी पंडित के साथ काम किया। वर्ष 1942 में पुष्पलता दास ने ओमियो कुमार दास से विवाह किया, जो एक सच्चे गांधीवादी और सामाजिक कार्यकर्ता भी थे।

विवाह के बाद, पुष्पलता ने अपने सहकर्मियों के साथ तेजपुर में शांति वाहिनी और मृत्यु वाहिनी का आयोजन किया। पुष्पलता को गोहपुर थाना परिसर में राष्ट्रीय ध्वज लगाने के लिए जुलूस का नेतृत्व करना था लेकिन भाग्य ने अपना खेल खेला और जुलूस की कमान, पुष्पलता दास की बजाय कनकलता बरुआ ने संभाली और वे ब्रिटिश गोलियों का शिकार हो गईं। स्वतंत्रता के बाद पुष्पलता दास संसद सदस्य बनीं। उन्होंने एक प्रसिद्ध असमिया पत्रिका 'जयंती' की संपादक के रूप में भी काम किया।

पुष्पलता दास को स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रदान की गई सेवाओं के लिए भारत सरकार द्वारा ताम्रपत्र की पेशकश की गई थी, लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया। इस महान आत्मा ने 9 नवंबर 2003 को 88 वर्ष की आयु में हम से अलविदा ली।

*****

पेरिया मारुथु और चिन्ना मारुथु

पेरिया मारुथु और चिन्ना मारुथु का जन्म, मोक्का पलनीसामी थेवर और पोनथा के घर हुआ था। इनके पिता मोक्का पलनीसामी थेवर शिवगंगा साम्राज्य के दूसरे राजा बने थे, लेकिन मारुथु बंधु अधिक समय तक महल में नहीं रह पाए। ये दोनों 20 साल की उम्र ही पार कर पाए थे कि आर्कोट के नवाब ने ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों के साथ मिलकर राजा और रानी को मार डाला। मारुथु बंधु बच निकले, लेकिन कई वर्षों बाद वापस आए और भीषण युद्ध के बाद किले पर फिर दावा किया।

1857 के सिपाही विद्रोह से 50 साल से भी अधिक समय पहले, मारुथु पांडियार भाइयों ने अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ संघर्ष का नेतृत्व किया था। 16 जून, 1801 को इन्होंने तिरुचि किले से स्वतंत्रता की घोषणा जारी की और सभी जातियों तथा समुदायों के लोगों को यूरोपीय वर्चस्व के खिलाफ लड़ाई में एकजुट होने का आह्वान किया। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी पर ताबड़तोड़ हमले किए तो कंपनी ने अपना विशाल बल भेजकर दोनों भाइयों को पकड़ लिया और उनके सैकड़ों समर्थकों को मार डाला।

24 अक्टूबर, 1801 को पेरिया मारुथु और चिन्ना मारुथु को दक्षिणी तमिलनाडु के तिरुपुथुर किले में सार्वजनिक रूप से फांसी दे दी गई थी । उनके साथ उनके सभी साथी विद्रोहियों, सेनापतियों, सेवकों, उनके बेटों और यहां तक कि उनके पोतों को भी फांसी के फंदे पर लटका दिया गया । लगभग 500 लोगों को फांसी दी गई थी।

इस सामूहिक फांसी के साथ, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और उसके सहयोगियों ने भारत के दक्षिणी राज्यों के उस भीषण विद्रोह को दबाने में सफलता हासिल की, जिसका इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में बमुश्किल उल्लेख मिलता है।

मारुथु बंधु वायुगति विज्ञान में माहिर थे । उन्होंने भाले और वालारी के कई रूपों का भी आविष्कार किया। मारुथु बंधुओं ने उपनिवेशवाद के प्रारंभिक चरण के दौरान भारत में गुरिल्ला युद्ध रणनीति की भी शुरुआत की। उनके सम्मान में अक्टूबर 2004 में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया गया था। हर साल लोग अक्टूबर में कालयारकोविल मंदिर में मारुथु पांडियार गुरु पूजा करते हैं।

*****

रामेश्वरी नेहरू

8 नवंबर 1966, एक असाधारण महिला स्वतंत्रता सेनानी रामेश्वरी नेहरू की पुण्यतिथि होती है।

"माता जी" कहकर पुकारी जाने वाली रामेश्वरी ने महिलाओं को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारत में महिला आंदोलन के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी।

रामेश्वरी नेहरू का विवाह मोतीलाल नेहरू के भतीजे बृजलाल नेहरू से हुआ था ।

रामेश्वरी नेहरू ने अपनी इस भूमिका की शुरुआत प्रयागराज के आनंद भवन से की थी । यह भवन, महिलाओं के मुददों के लिए संघर्ष और मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए स्वतंत्रता सेनानियों की कर्मभूमि था।

रामेश्वरी नेहरू ने हिंदी में पहली महिला पत्रिका 'स्त्री दर्पण' की शुरुआत 1909 में इलाहाबाद से की थी। 'स्त्री दर्पण' के माध्यम से उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठाई।

रामेश्वरी नेहरू महिला भारत संघ और ऑल इंडिया वूमैन कांफ्रेंस की सक्रिय सदस्य थीं । उन्होंने वेश्यालयों से छुड़ाई गई महिलाओं को आश्रय देने के लिए नारी निकेतन शुरू किया था।

महिलाओं के, पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की हिमायत करने वाली रामेश्वरी ने कहा था "उस देश के लोग स्वराज हासिल नहीं कर सकते जिनकी आधी आबादी, पक्षाघात की स्थिति के समान निष्क्रिय कर दी गई हो। स्वराज की लड़ाई पुरुषों और महिलाओं को समान रूप से लड़नी होगी और जीतनी होगी।" आजादी के बाद, रामेश्वरी ने उन लोगों के पुनर्वास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो विभाजन के आघात के कारण पलायन कर गए थे।

1955 में भारत सरकार ने रामेश्वरी नेहरू को, विशेष रूप से विधवाओं, अनाथों, बच्चों और बुजुर्गों के पुनर्वास में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया। उन्हें 1961 में 'लेनिन शांति पुरस्कार' भी प्रदान किया गया।

रामेश्वरी नेहरू ने 8 नवंबर 1966 को अंतिम सांस ली।

******

मंगल दास पकवासा

स्वतंत्रता सेनानी मंगल दास पकवासा 6 नवंबर, 1968 को हमें छोड़ कर चले गए थे। स्वतंत्रता के बाद सामाजिक कार्यकर्ता और राजनेता के रूप में वह महात्मा गांधी के विश्वास पात्र थे और पहले पांच भारतीय राज्यपालों में से एक थे। उन्होंने मध्य प्रदेश, बॉम्बे और मैसूर के राज्यपाल के रूप में कार्य किया और 1953 से 1960 तक भारत स्काउट्स एंड गाइड्स के पहले अध्यक्ष थे।

मंगलदास पकवासा का जन्म 7 मई, 1882 को मुंबई में हुआ था। उन्होंने 1903 में बॉम्बे विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और हिंदू कानून में अर्नोल्ड छात्रवृत्ति पर कानून की पढ़ाई पूरी की। वह स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन से जुड़े और सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान दांडी मार्च में भाग लेने के लिए उन्होंने एक सफल वकील के रूप में अपने करियर को छोड़ दिया। उन्हें इस दौरान गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया था। मंगलदास अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ के एक प्रमुख सदस्य थे और उन्होंने इस के मानद कानूनी सलाहकार के तौर पर भी काम किया। भारत की स्वतंत्रता के बाद वे सामाजिक तथा राजनीतिक रूप से सक्रिय रहे और बॉम्बे विधान परिषद के सदस्य बने। 6 नवंबर, 1968 को मंगलदास का निधन हो गया, लेकिन वे अंतिम समय तक भारत के नागरिकों तक पहुंचने के लिए प्रतिबद्ध रहे। हम इस महान गांधीवादी के राष्ट्रवादी उत्साह को नमन करते हैं।

******

बिपिन चंद्रपाल

महानतम स्वतंत्रता सेनानियों में से एक बिपिन चंद्रपाल का जन्म 7 नवंबर, 1858 को ब्रिटिश भारत के सिलहट क्षेत्र में हुआ था जो अब बांग्लादेश में है। भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के शुरुआती नेता, बिपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय और बाल गंगाधर तिलक के साथ "लाल बाल पाल" की कड़ी में शामिल थे। ये तीनों नरम पंथियों द्वारा अपनाई जाने वाली याचिकाओं के तरीके पर सवाल उठाते थे और राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सीधी कार्रवाई के लिए तर्क देते थे। 1886 में बिपिन चंद्र पाल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए। उन्होंने भेद-भाव पूर्ण शस्त्र अधिनियम को निरस्त करने के लिए मजबूत दलील दी। 1905 के बंगाल विभाजन ने बिपिन चंद्रपाल को गहराई से झकझोर दिया। उन्होंने 1906 में *बंदेमातरम* पत्रिका की शुरुआत की, जिसमें अरबिंदो घोष जल्द ही संपादक के रूप में शामिल हो गए।

बिपिन चंद्रपाल को भारत में क्रांतिकारी विचारों के जनक के रूप में जाना जाता है। अरबिंदो घोष के साथ, उन्हें पूर्णस्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्शों वाले एक नए राष्ट्रीय आंदोलन के मुख्य प्रतिपादक के रूप में पहचाना जाता है।

बिपिन चंद्र पाल ने अनुशीलन समिति की स्थापना में भी मदद की, जिसने भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने में क्रांतिकारी हिंसा का समर्थन किया और साप्ताहिक कक्षाओं तथा बातचीत के माध्यम से युवाओं में राष्ट्रवाद की भावना पैदा की। असहयोग के रूप में होने वाले विरोध में उनका विश्वास नहीं था और इसी मुद्दे पर उनका महात्मा गांधी से मतभेद था। 1920 में, पाल उन वरिष्ठ नेताओं में से थे, जिन्होंने असहयोग पर गांधीजी के प्रस्ताव का विरोध इस तथ्य पर किया था कि यह स्व-सरकार को संबोधित नहीं करता।

बिपिन चंद्रपाल ने सामाजिक और आर्थिक बुराइयों को दूर करने के प्रयास किए। उन्होंने जातिप्रथा का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह की हिमायत की। अपनी पहली पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने एक विधवा से शादी की और ब्रह्मसमाज में शामिल हो गए। बिपिन चंद्रपाल एक बहुआयामी व्यक्तित्व थे। वे एक अच्छे नेता, शिक्षक, पत्रकार, वक्ता और लेखक थे। इस महान स्वतंत्रता सेनानी की राष्ट्रवादी भावना को नमन।

******

फिरोज शाह मेहता

बॉम्बे के शेर फिरोज शाह मेहता का जन्म 4 अगस्त, 1845 को बॉम्बे में हुआ था। उन्होंने 1864 में एलफिंस्टन कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। मेहता कानून की पढ़ाई के लिए लंदन गए। भारत वापस आने के बाद, उन्होंने बॉम्बे म्युनिसिपल गर्वनमेंट के सुधारों की आवश्यकता का मुद्दा उठाया और 1872 का बॉम्बे म्यूनिसिपल एक्ट तैयार किया। इसके लिए उन्हें "बॉम्बे नगर पालिका के जनक" की उपाधि मिली। वह 1873 में बॉम्बे नगर पालिका के नगर आयुक्त बनें और चार बार इसके अध्यक्ष बने।

मेहता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्य थे। 1890 में कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस सत्र के अध्यक्ष बने। उन्होंने बॉम्बे क्रॉनिकल प्रकाशित किया, जिसमें दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ व्यवहार का विवरण दिया गया। गांधीजी जब भारत पहुंचे, तो फिरोज शाह मेहता ने 12 जनवरी, 1915 को उनका स्वागत करने के लिए एक जनसभा की अध्यक्षता की। इसी वर्ष 5 नवम्बर को फिरोज शाह मेहता का बॉम्बे में निधन हो गया। भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के शुरुआती नेताओं में शामिल इस नेता को नमन।

******

चितरंजन दास

स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिक कार्यकर्ता, विद्वान और कवि चितरंजन दास का जन्म 5 नवंबर, 1870 को हुआ था। देशबंधु के नाम से लोकप्रिय चितरंजन दास महात्मा गांधी के करीबी सहयोगी और बंगाल में स्वराज पार्टी के संस्थापक-नेता थे।

चितरंजन दास ने लंदन में श्री अरबिंदो घोष, अतुल प्रसाद सेन, सरोजिनी नायडू तथा अन्य से मित्रता की और उनके साथ मिलकर ब्रिटिश संसद में दादा भाई नौरोजी को प्रवर्तित किया। 1894 में, एक आश्चर्यजनक कदम उठाते हुए चित्तरंजन दास ने वकालत छोड़ दी और ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। चित्तरंजन दास ने 1909 में अलीपुर बम मामले में शामिल होने के मामले में अरबिंदो घोष का सफलतापूर्वक बचाव किया।

अपने उत्तरपारा भाषण में श्री अरबिंदो ने कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार किया कि चित्तरंजन दास ने उन्हें बचाया। चित्तरंजन दास अनुशीलन समिति की गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे। 1919-1922 के असहयोग आंदोलन के दौरान वह बंगाल की एक मशहूर हस्ती माने जाते थे। उन्होंने अपने यूरोपीय कपड़े जलाकर और खादी धारण कर ब्रिटिश निर्मित कपड़ों के बहिष्कार की शुरुआत की।

1924 में चित्तरंजन दास कलकत्ता नगर निगम के पहले महापौर के रूप में चुने गए थे। वह राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए अहिंसा और संवैधानिक तरीकों में विश्वास रखते थे और हिंदू-मुस्लिम एकता, सहयोग और सांप्रदायिक सद्भाव की हिमायत करते थे। चित्तरंजन दास उस समय एक प्रतिष्ठित बांग्ला कवि के रूप में उभरे, जब राष्ट्रीय आंदोलन के मुश्किल दिनों के दौरान, उन्होंने 'मलंचा' और 'माला' नामक कविताओं के संग्रह के पहले दो खंड प्रकाशित किए। 1913 में उन्होंने "सागर संगीत" का प्रकाशन किया।

1925 में अधिक काम करने के कारण उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। चित्तरंजन अपनी सेहत ठीक करने दार्जिलिंग गए थे। वहां महात्मा गांधी उनसे मिलने गए और कुछ दिन उनके साथ रहे। चितरंजन दास का 16 जून 1925 को निधन हो गया।

कलकत्ता में उनकी अंतिम यात्रा का नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था। चित्तरंजन दास के निधन पर गांधीजी ने कहा था कि चितरंजन दास उन महान लोगों में से थे जिन्होंने सपना देखा और भारत की स्वतंत्रता की बात की उनका दिल हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कोई अंतर नहीं करता था ।

******

दिल्ली स्टेटमेंट

2 नवंबर, 1929 को महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय, सरदार पटेल और अन्य प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं ने एक सम्मेलन में लॉर्ड इरविन की घोषणा के जवाब में दिल्ली स्टेटमेंट जारी किया था। जिसे इरविन ने 31 अक्टूबर, 1929 को पेश किया था। इसी दौरान साइमन कमीशन भारत के दौरे पर था और हर जगह उसका विरोध हो रहा था।

जहां पूरे देश में भारतीयों ने सर्वसम्मति से साइमन कमीशन का बहिष्कार किया, वहीं लंदन में भी भारतीयों को रियायतें देने का विरोध हुआ और संसद में इस पर बहस हुई। इरविन की घोषणा ब्रिटिश नीति के अंतिम उद्देश्य में भारतीयों के विश्वास को बहाल करने का प्रयास था। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व को गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए राजी किया। गांधीजी ने बीच का रास्ता खोजने के प्रयास में दिल्ली वक्तव्य जारी किया। इसके मुख्य बिंदु – देश में शांत माहौल को प्रेरित करने, राजनीतिक कैदियों को आम माफी देने और प्रगतिशील राजनीतिक संगठनों के प्रतिनिधित्व को सुरक्षित करने के लिए सामान्य सुलह की नीति को अपनाने पर केंद्रित थे। बयान में यह भी रेखांकित किया गया कि देश की सरकार में अधिक उदार भावना का संचार किया जाना चाहिए।

हालाँकि, जब गांधीजी 23 नवंबर 1929 को इरविन से मिले, तो उन्होंने दिल्ली स्टेटमेंट में दिए गए प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया।

******

वासुदेव बलवंत फड़के

4 नवंबर को महान स्वतंत्रता सेनानी वासुदेव बलवंत फड़के की जयंती मनाई जाती हैं। 4 नवंबर, 1845 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के शिरधों गांव में जन्मे फड़के किसान समुदाय की दुर्दशा से विचलित हो गए थे। उनका मानना था कि स्वराज ही उनके कष्टों का एकमात्र उपाय है। वासुदेव बलवंत फड़के को 'भारतीय सशस्त्र विद्रोह के जनक' के रूप में जाना जाता है।

फड़के, पुणे में सैन्य वित्त कार्यालय के कर्मचारी थे इसके बावजूद, 1870 के दशक के मध्य में वहां की सड़कों पर थाली और करछुल के साथ घूमते थे उस दौरान वे कहा करते थे कि हमारा देश स्वतंत्र होना चाहिए और अंग्रेजों को बाहर किया जाना चाहिए। रविवार के दिन वह जनता को संबोधित करने के लिए पनवेल, पलासपे, तसगाँव और नरसोबाचीवाड़ी के आसपास के क्षेत्रों का दौरा करते थे। फड़के पहले भारतीय थे जिन्होंने अंग्रेजों को हटाने के लिए राजनीतिक जागरूकता के लिए इस प्रकार की यात्राएं कीं।

20 फरवरी, 1879 को फड़के और उनके सहयोगियों - विष्णुगर्दे, गोपालसाठे, गणेश देवधर और गोपाल हरिकर्वे ने पुणे से आठ मील उत्तर में लोनी के बाहर अपने 200 मजबूत सदस्यों वाले संगठन की घोषणा की। फड़के की टीम ने मुंबई के आसपास और बाद में कोंकण क्षेत्र में लूटपाट की साहसपूर्ण कार्रवाइयां कीं।

मई 1879 में फड़के ने ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी आर्थिक नीतियों की निंदा करने वाली अपनी प्रसिद्ध घोषणा जारी की। उद्घोषणा की प्रतियां राज्यपाल, कलेक्टरों और अन्य सरकारी अधिकारियों को भेजी गई थीं। 3 जून, 1879 को द टाइम्स, लंदन ने फड़के घटना पर एक लंबा संपादकीय प्रकाशित किया। बाद में, जब अंग्रेजों ने अपनी पकड़ मजबूत कर ली तो फड़के महाराष्ट्र से भाग गए और निजाम की सेना में रोहिल्ला और सिखों के साथ एक नई क्रांति को पुनर्गठित करने की कोशिश की, लेकिन 20 जुलाई, 1879 को उनकी गिरफ्तारी के साथ उनकी यह योजना विफल हो गई। फड़के को यमन में अदन की जेल भेज दिया गया क्योंकि अंग्रेजों को उनकी गिरफ्तारी पर भारतीय जनता की प्रतिक्रिया का डर था। 17 फरवरी, 1883 को भूख हड़ताल के दौरान फड़के की मृत्यु हो गई। फड़के का जब निधन हुआ तब उनकी आयु केवल 37 वर्ष थी। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए गठित सशस्त्र आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया।

******

हज़ारा सिंह

25 अक्टूबर स्वाधीनता सेनानी हज़ारा सिंह की पुण्यतिथि होती है। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध जंग छेड़ने के आरोप में उन्हें 25 अक्टूबर, 1944 को लाल किले में मृत्यु दंड दिया गया। हज़ारा सिंह पंजाब के होशियारपुर जिले के झां गिलाना गांव के निवासी थे। वे ब्रिटिश-भारतीय सेना की पंजाब रेजिमेंट में तैनात थे। जब आज़ाद हिंद फौज के नेता के रूप में सुभाष चंद्र बोस ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध का बिगुल फूंका तो हज़ारा सिंह भी आज़ाद हिंद फौज में शामिल हो गए। वे तीसरी गुरिल्ला रेजिमेंट में हवलदार रहे। हज़ारा सिंह ने बर्मा युद्ध में भाग लिया, जहां उन्हें अंग्रेजों ने पकड़ लिया। देश स्वाधीनता आंदोलन में हज़ारा सिंह जैसे बहादुर जवानों की निस्वार्थ सेवा का सदैव ऋणी रहेगा।

******

महेंद्र लाल सरकार

2 नवंबर को प्रसिद्ध चिकित्सक, समाज सुधारक और विज्ञान शिक्षा तथा अनुसंधान के प्रखर-प्रचारक महेंद्र लाल सरकार की जयंती होती है। उनका जन्म 2 नवंबर 1833 को बंगाल में हावड़ा जिले के पैकपारा गांव में हुआ था। वह भारत के पहले राष्ट्रीय विज्ञान संघ के संस्थापक थे, जिसका नाम 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस' था, जहां नोबेल पुरस्कार विजेता सी वी रमन और कई अन्य वैज्ञानिकों ने अपने वैज्ञानिक प्रयोग शुरू किए।

महेंद्र लाल सरकार ने यूरोपीय चिकित्सा पद्धति की पढ़ाई की थी बाद में जब उन्हें लगा कि पश्चिमी चिकित्सा पद्धति का महंगा इलाज भारतीय नहीं करा सकते थे तो होम्योपैथी और अन्य वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने की दिशा में जुट गए ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन की बंगाल शाखा की एक बैठक में, उन्होंने होम्योपैथी को उस समय की 'पश्चिमी चिकित्सा' से बेहतर घोषित किया, जिसके लिए उनका ब्रिटिश डॉक्टरों ने बहिष्कार किया। हालाँकि, वह भारत में एक प्रमुख होम्योपैथिक चिकित्सक बन गए और अपने करियर के दौरान, लेखक बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, तपस्वी योगी रामकृष्ण और त्रिपुरा के महाराजा सहित उन दिनों के कई उल्लेखनीय व्यक्तियों का उपचार किया।

सरकार एक मानवतावादी थे जो मानते थे कि विज्ञान, मानव की समृद्धि को बढ़ा सकता है और भारतीयों की गरीबी तथा अज्ञानता को दूर करने के लिए आधुनिक विज्ञान को बढ़ावा देना जरूरी है। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने 1876 में 'द इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस-आईएसीएस की स्थापना की। एसोसिएशन ने जनता के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए नियमित व्याख्यान आयोजित किए। सरकार ने महिलाओं की शिक्षा का भी समर्थन किया। उन्होंने आईएसीएस में शाम के व्याख्यान में स्वतंत्रता सेनानी सरला देवी चौधरानी की उपस्थिति की व्यवस्था की, ताकि वह भौतिकी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। 23 फरवरी, 1904 को महेंद्र लाल सरकार का निधन हो गया, लेकिन भारतीय नागरिकों तक पहुंचने और विज्ञान शिक्षा तथा अनुसंधान को लोकप्रिय बनाने की उनकी विरासत ने भारतीय समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी है। हम भारत के इस महान सपूत और मातृभूमि के प्रति उसके प्रेम को नमन करते हैं।

******

जयदेव कपूर

24 अक्तूबर को जयदेव कपूर की जयंती होती है। उनका जन्म 24 अक्तूबर 1908 को वर्तमान उत्तर प्रदेश के हरदोई में हुआ था। कानपुर के डीएवी कॉलेज में पढ़ाई के दौरान वे शिव वर्मा के साथ हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में शामिल हो गए। 1925 में जयदेव को बनारस में क्रांतिकारी नेटवर्क विकसित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। इसलिए उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में बी.एस.सी पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। वहां भगत सिंह उनके साथ कई दिनों तक लिम्बड़ी होस्टल में रहे।

जयदेव कपूर ने आगरा में बम बनाने का प्रशिक्षण लिया था। उन्होंने ट्रेड डिस्प्यूट बिल और पब्लिक सेफ्टी बिल के विरोध में असेम्बली में बम गिराने की घटना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जयदेव को गिरफ्तार कर लिया गया और अंडमान निकोबार की सेल्युलर जेल भेज दिया गया, जिसे कालापानी के नाम से जाना जाता था। जयदेव ने अपने अंतिम समय में भगत सिंह और अन्य साथियों से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी। भगत सिंह ने अपने नए जूते यह कहते हुए जयदेव को दिए थे कि पुलिस उन्हें छीन लेगी और कम से कम जयदेव तो उन्हें पहन सकेंगे। जयदेव ने उन जूतों को स्मृति के रूप में संभाल कर रखा। वे सेल्युलर जेल में 16 वर्ष रहे और स्वतंत्रता से कुछ वर्ष पहले रिहा किए गए।

****

क्रांतिकारी साप्ताहिक 'हिंदुस्तान गदर'

1 नवंबर का दिन भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में बेहद अहम है। इसी दिन 1913 में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को के युगांतर आश्रम से क्रांतिकारी साप्ताहिक 'हिंदुस्तान गदर' का प्रकाशन शुरू हुआ था। जिसका उद्देश्य था, ब्रिटिश सेना में तैनात भारतीय मूल के सिपाहियों पर विशेष ध्यान देना और उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ना। यह साप्ताहिक पहली बार उर्दू में प्रकाशित किया गया। बाद में 9 नवंबर से इसका पंजाबी संस्करण भी प्रकाशित किया जाने लगा। गदर पार्टी के विचारों को दूर-दूर तक पहुंचाने के लिए बाद में, इसे गुजराती, हिंदी, पश्तो, बांग्ला, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच आदि में भी प्रकाशित किया जाने लगा। पहले इसके अंक हस्तलिखित होते थे। बाद में इसे छोटे हैंड प्रेस के जरिए छापा जाने लगा। उन्हीं दिनों भारतीय प्रेस पर ब्रिटिश सरकार दबाव बनाने के लिए तमाम हथकंडे अपना रही थी। उस दौरान यह साप्ताहिक ब्रिटिश प्रचार का मुकाबला करने वाले महत्वपूर्ण प्रकाशन के रूप में उभरा। 'हिंदुस्तान गदर' में प्रकाशित होने वाले लेख शुरू में प्रसिद्ध क्रांतिकारी हरदयाल लिखते रहे। जब कि उसकी छपाई करतार सिंह सराभा के जिम्मे थी। जो उन दिनों यूसी बर्कले के छात्र थे। जिस जहाज से साप्ताहिक की प्रतियां भारत भेजी जाती थीं, वही ग़दर समर्थकों और अप्रवासियों को अमेरिका लाता था। बाद में ब्रिटिश सरकार ने इस के प्रकाशन को देशद्रोही करार देते हुए इस पर पाबंदी लगा दी। तब प्रकाशकों ने ग़दर समर्थकों को ब्रिटिश गुप्तचरों से बचाने के लिए काफी प्रयास किए। एक हज़ार से अधिक सदस्यों के नाम याद कर लिए गए थे,ताकि कोई भी सबूत ब्रिटिश सरकार के हाथों में न पड़ जाए। मार्च 1914 में, जब अमेरिकी सरकार ने हरदयाल को गिरफ्तार करना चाहा तो वे वहां का काम राम चंद्र, भगवान सिंह और मौलवी बरकतुल्लाह समेत अन्य सदस्यों के हवाले कर जर्मनी चले गए। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता से संबंधित जानकारी फैलाना जारी रखा और पाठकों को भारत में ब्रिटिश शासन के अत्याचारों की जानकारी दी। अन्य भारतीयों ने उस प्रेस की मदद की जो न केवल अखबार छापता था, बल्कि राष्ट्रवादियों की रचनाओं और पैम्फलेटों का संकलन भी करता था, जिनमें ग़दर दी गूंज, तलवार और अन्य प्रकाशन शामिल थे, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था।

****

आचार्य जे बी कृपलानी

11 नवंबर को गांधीवादी समाजवादी, पर्यावरणविद्, स्वतंत्रता कार्यकर्ता आचार्य जे बी कृपलानी की जयंती होती है।

आचार्य कृपलानी के नाम से विख्यात जीवतराम भगवानदास कृपलानी का जन्म 1888 में हुआ था। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में पूरी तरह से शामिल होने से पहले 1912 से 1927 तक, विभिन्न संस्थानों में शिक्षक के रूप में सेवाएं दीं।

1917 में चंपारण सत्याग्रह के दौरान उनकी मुलाकात गांधीजी से हुई। 1922 के आसपास जब वे महात्मा गांधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ में पढ़ा रहे थे, तो उन्होंने 'आचार्य' की उपाधि हासिल की । गांधीजी से प्रेरित होकर वे 1927 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और असहयोग आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।

आचार्य कृपलानी का विवाह उन्हीं के समान व्यक्तित्व की धनी गांधीवादी कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी - सुचेता कृपलानी, से हुआ था।

आचार्य जे बी कृपलानी संयुक्त प्रांत से संविधान सभा के लिए चुने गए। वह मौलिक अधिकारों पर उप-समिति के अध्यक्ष थे। उन्होंने संविधान सभा में प्रस्तावना पर अपने विचार व्यक्त किए।

1946 में उन्हें कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष चुना गया था, लेकिन कार्य समिति की भूमिका पर पार्टी के सदस्यों के साथ बढ़ते मतभेदों के कारण एक साल बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया। जल्द ही कृपलानी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कड़े आलोचक बन गए।

आचार्य कृपलानी का, 19 मार्च 1982 को 93 वर्ष की आयु में अहमदाबाद में निधन हो गया।

*****

रानी चेन्नम्मा

23 अक्तूबर 1778 को कित्तूर की रानी चेन्नम्मा की जयंती होती है। वे उन महिला शासकों में शामिल थीं, जिन्होंने 1824 में ईस्ट इंडिया कम्पनी के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया।

बचपन से ही उन्होंने घुड़सवारी, तलवारबाजी और तीरंदाजी सहित युद्ध जीतने के लिए सभी आवश्यक कौशल अर्जित कर लिए थे और बहुत जल्द वे अपनी बहादुरी के लिए जानी जाने लगीं। अंग्रेजों ने राज्य हड़पने की नीति के तहत 1824 में कित्तूर पर कब्जा कर लिया। जब महारानी ने ब्रिटिश कब्जे का विरोध शुरू किया, तो ब्रिटिश सेना ने चार सौ बंदूकों से लैस 20 हजार सैनिकों के साथ 1824 में कित्तूर पर हमला कर दिया। उनका इरादा कित्तूर के आभूषणों और 15 लाख रुपये के खजाने पर कब्जा करके कित्तूर को आर्थिक रूप से कमजोर करना और महारानी को सिंहासन से उतारना था।

अंग्रेजों के मुकाबले में कम सेना के बावजूद चेन्नम्मा ने दुश्मनों को कड़ी टक्कर दी और पहला युद्ध जीता। ब्रिटिश सेना को जबरदस्त नुकसान उठाना पड़ा और दो ब्रिटिश अधिकारी सर वाल्टर इलियट तथा स्टीवैंसन को बंधक बना लिया गया। इससे चेन्नम्मा को संघर्ष विराम के लिए अपनी शर्तें मनवाने में आसानी हुई।

चेन्नम्मा युद्ध समाप्त करने और अपने बेटे को सिंहासन पर बैठाने की शर्त पर ब्रिटिश बंधकों को रिहा करने पर सहमत हो गई।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के कमिश्नर चैप्लिन ने यह शर्त मान ली और बंधक रिहा कर दिए गए।

हालांकि अप्रत्याशित रूप से ब्रिटिश सेना ने दूसरा युद्ध छेड़ दिया। वे एक महिला से अपमानजनक हार को पचा नहीं पा रहे थे। इसलिए उन्होंने मैसूर और सोलापुर में सेना के बीच घुसपैठ की साजिश रची। उन्होंने चेन्नम्मा के दो सैनिकों को तोड़ लिया और बारूद में गोबर और कीचड़ मिलवा दिया।

इस बार चेन्नम्मा को पकड़ लिया गया और बेलहोंगल किले में जीवनभर के लिए कैद कर दिया गया। 21 फरवरी, 1829 को चेन्नम्मा का स्वर्गवास हो गया। रानी चेन्नम्मा का अंतिम संस्कार बेलहोंगल तालुक में किया गया। उनकी विरासत और पहली जीत अब भी कित्तूर में धूम-धाम से याद की जाती है और 22 से 24 अक्तूबर के दौरान कित्तूर उत्सव मनाया जाता है।

****

गणेश घोष

16 अक्टूबर को महान स्वाधीनता सेनानी और राजनेता गणेश घोष की पुण्य तिथि होती है। उनका जन्म बंगाल प्रांत में जेस्सोर जिले के बिंदोपुर गांव में हुआ था।

अंग्रेजों ने माणिक तला बम मामले में घोष को गिरफ्तार कर लिया और 1924 में तीन वर्ष के लिए जेल भेज दिया। जेल से रिहा होने के बाद, घोष चिट्टागोंग जुगांतर पार्टी में शामिल हो गए और वे 18 अप्रैल, 1930 को सूर्यसेन और अन्य क्रांतिकारियों के साथ चिट्टागोंग हथियारों की लूट में भी शामिल थे। बाद में घोष को चंदन नगर में गिरफ्तार कर लिया गया और 1932 में उन्हें आजीवन कारावास की सजा हुई तथा अंडमान की सेलुलर जेल भेज दिया गया।

1946 में उन्हें रिहा कर दिया गया और स्वतंत्रता के बाद वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता बन गए। 16 अक्टूबर, 1994 को 94 वर्ष की उम्र में गणेश घोष का निधन हो गया। राष्ट्र के प्रति प्रेम के लिए महान स्वाधीनता सेनानी को नमन।

*****

वेलिक्काकथु शंकरन अच्युतानंदन

वेलिक्काकथु शंकरन अच्युतानंदन का जन्म 20 अक्टूबर 1923 को पुन्नपरा, अलप्पुझा, त्रावणकोर में शंकरन और अक्कम्मा के घर हुआ था।

चूंकि उन्होंने बहुत छोटी उम्र में ही माता-पिता दोनों को खो दिया था इसलिए उन्हें 7 वीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन और कम्युनिस्ट आंदोलन में भाग लिया।

बाद में वी.एस. अच्युतानंदन ने कुट्टनाडु में कृषि श्रमिकों को संगठित किया और शासकों के खिलाफ आंदोलन किया। 16 साल की उम्र में वह कॉयर फैक्ट्री श्रमिकों के एक समर्पित व्यवस्थापक बन गए। वह अपनी सादगी, समर्पण और गहन अध्ययन के लिए जाने जाते थे। त्रावणकोर के दीवान सी.पी. रामास्वामी अय्यर की नीतियों के खिलाफ पुन्नपरा-वायलार विद्रोह में वी.एस सबसे आगे थे। त्रावणकोर के दीवान त्रावणकोर में अमेरिकी मॉडल की सरकार स्थापित करना चाहते थे। वी.एस. अच्युतानंदन को 28 अक्टूबर 1946 को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन के दौरान साढ़े पांच साल जेलों में बिताए और चार साल भूमिगत रहे।

वी.एस. अच्युतानंदन संसदीय राजनीति में भी सक्रिय रहे हैं। वे सात बार केरल विधानसभा के सदस्य चुने गए।

वह 2006 में 82 साल की उम्र में केरल के 11 वें मुख्यमंत्री बने।

******

निर्मला देशपांडे

19 अक्टूबर 1929 को निर्मला देशपांडे का जन्म नागपुर में विमला और पुरुषोत्तम यशवंत देशपांडे के घर हुआ था। उनके पिता को मराठी अनामिकाची चिंतानिका में उनके काम के लिए 1962 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था।

निर्मला देशपांडे ने नागपुर से राजनीति विज्ञान में एम ए किया था। उन्होंने पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज से भी पढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने नागपुर के मॉरिस कॉलेज में राजनीति विज्ञान में व्याख्याता के रूप में कार्य किया।

देशपांडे 1952 में विनोबा भावे के भूदान आंदोलन में शामिल हुईं। उन्होंने गांधी के ग्राम स्वराज के संदेश के प्रचार के लिए पूरे भारत में चालीस हजार किलोमीटर की पदयात्रा की। उन्होंने माना कि महात्मा गांधी के सिद्धांतों का पालन करना मुश्किल है फिर भी उनका मानना था कि वास्तव में लोकतांत्रिक समाज की दिशा में आगे बढ़ने का यही एकमात्र उपाय है।

पंजाब और कश्मीर में जब हिंसा अपने चरम पर थी तब देशपांडे को इन राज्यों में शांति मार्च की प्रणेता के रूप में जाना जाता था । उन्होंने जून 1983 से लेकर अपनी मृत्यु तक एक ऐतिहासिक संगठन- हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे कई सामाजिक संगठनों और निकायों से जुड़ी थीं। उन्होंने अखिल भारत रचनात्मक समाज की स्थापना की जिसने 2004 में राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भाव पुरस्कार जीता।

निर्मला देशपांडे दो बार राज्यसभा की मनोनीत सदस्य रहीं। उन्हें 2005 में राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार और 2006 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

******

भूलाभाई देसाई

13 अक्तूबर को स्वाधीनता सेनानी और प्रसिद्ध वकील भूलाभाई देसाई की जयंती होती है। वे आज़ाद हिंद फौज के तीन सैनिकों के बचाव के लिए याद किए जाते हैं जिन पर दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान राजद्रोह का आरोप लगाया गया था।

उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन एनीबेसेंट की ऑल इंडिया होम रूल लीग के साथ शुरू किया। वे शुरू में भारतीय मामलों में ब्रिटिश प्रभाव के समर्थक थे लेकिन उन्होंने केवल यूरोपीय लोगों वाले साइमन कमीशन का विरोध किया। 1928 में सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में बारदौली सत्याग्रह के बाद ब्रिटिश सरकार की पूछताछ में उन्होंने गुजरात के किसानों का प्रतिनिधित्व किया। इस संघर्ष में उन्हें महत्वपूर्ण सफलता मिली।

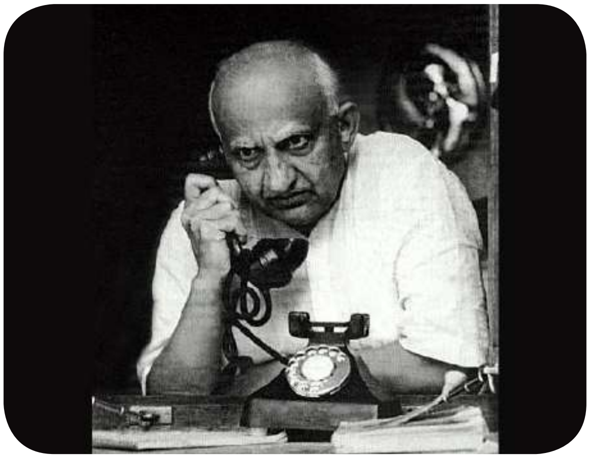

देसाई 1930 में औपचारिक रूप से इंडियन नेशनल कांग्रेस में शामिल हुए। उन्होंने स्वदेशी सभा बनाई और 80 कपड़ा मिलों को इसमें शामिल होने के लिए मनाया। इसका उद्देश्य भारतीय कंपनियों द्वारा विदेशी सामान का बहिष्कार करना था।

अंग्रेजों ने स्वदेशी सभा को अवैध घोषित कर दिया और भूलाभाई की गतिविधियों के कारण1932 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया। जब कांग्रेस कार्यकारिणी का पुनर्गठन हुआ, तो सरदार वल्लभभाई पटेल के कहने पर भूलाभाई को कार्यकारिणी में शामिल किया गया। नवंबर, 1934 में भूलाभाई को गुजरात से केंद्रीय विधानसभा के लिए चुना गया।

भूलाभाई ने मनमाने ढंग से दूसरे विश्वयुद्ध में भारत और भारतीय सैनिकों को शामिल करने का विरोध किया और 19 नवंबर, 1940 को सदन को संबोधन में कहा कि जब तक युद्ध भारतीय न हो तब तक भारत का समर्थन प्राप्त करना असंभव है। उन्होंने महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन में हिस्सा लिया और 10 दिसंबर को उन्हें भारत रक्षा अधिनियम के अंतर्गत गिरफ्तार कर येरवडा केंद्रीय कारागार भेज दिया गया। सितंबर, 1941 में देसाई को खराब स्वास्थ्य के आधार पर जेल से रिहा कर दिया गया और खराब तबियत के कारण ही वो भारत छोड़ों आंदोलन में भी भाग नहीं ले सकें। वे कुछ ऐसे राष्ट्रीय नेताओं में से थे जिन्हें 1942 के आंदोलन के दौरान अंग्रेज गिरफ्तार नहीं कर सके। उस दौरान देसाई ने स्वतंत्र भारत में हिंदुओं और मुसलमानों की संयुक्त पसंद के लिए लियाकत अली खान के साथ बातचीत शुरू की। लेकिन बातचीत असफल रही।

1945 में जब आज़ाद हिंद फौज के तीन अधिकारी – शाहनवाज खान, प्रेम कुमार सहगल और गुरबख्श सिंह ढिल्लों को पकड़ा गया और राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया तो इंडियन नेशनल कांग्रेस ने 17 वकीलों की रक्षा समिति बनाई। भूलाभाई तीनों अधिकारियों के बचाव में लगी उस समिति का नेतृत्व कर रहे थे। खराब स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए देसाई ने आजाद हिंद फौज के अधिकारियों के बचाव में जोरदार तर्क रखे लेकिन ब्रिटिश जजों ने तीनों को दोषी माना और आजीवन कारावास की सजा सुनाई। बाद में भारत सरकार ने उन्हें रिहा किया।

बिगड़ते स्वास्थ्य के बावजूद भूलाभाई जीवनभर स्वाधीनता संघर्ष और राष्ट्रवादी आदर्शों के लिए प्रतिबद्ध रहे। मातृभूमि के लिए प्रेम और अदम्य भावना के लिए भूलाभाई देसाई को शत शत नमन।

******

बद्रीदत्त पांडेय कुर्मांचल केसरी

बद्रीदत्त पांडेय का जन्म कनखल हरिद्वार में हुआ था। बद्रीदत्त पांडेय को एक महान क्रान्तिकारी और स्वाधीनता संग्राम के योद्धा के रूप में याद किया जाता है। 1916 में कुमाऊं परिषद की स्थापना हुई थी। इस परिषद का उद्देश्य प्रदेश में व्याप्त सामाजिक अभिशाप कुली बेगार को समाप्त करना था। उन्होंने इन कुप्रथाओं को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इसीलिए उन्हें कुर्मांचल केसरी की उपाधि और स्वर्ण पदकों से पुरस्कृत किया गया। 1921 सें 1932 के बीच वह तीन मौकों पर जेल गए और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने पुनः जेल जाना स्वीकार किया, लेकिन ब्रिटिश दमनकारियों के सामने कभी भी झुके नहीं।

जेल प्रवास के दौरान ही इन्होंने 'कुमाऊं का इतिहास' नामक पुस्तक भी लिख डाली। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी वे सामाजिक कार्यों में लगे रहे और उन्होंने कभी भी कोई भी स्वतंत्रता सेनानी पेंशन नहीं ली। एक लंबी बीमारी के पश्चात 13 फरवरी,1965 को इस स्वतंत्रता सेनानी ने अंतिम सांस ली।

******

कैप्टन अब्बास अली

11 अक्तूबर को स्वाधीनता सेनानी और आजाद हिंद फौज के कैप्टन अब्बास अली की पुण्य तिथि होती है। उनका निधन 11 अक्टूबर, 2014 को हुआ था। अब्बास अली का जन्म उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के खुर्जा में 3 जनवरी, 1920 को हुआ था। वे स्वाधीनता सेनानियों के परिवार से थे। उनके दादा रुस्तम अली खान को 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में फांसी दी गई थी।

जब 23 मार्च, 1931 को शहीद-ए-आज़म भगत सिंह को फांसी हुई तो अब्बास अली केवल 11 वर्ष के थे लेकिन वे विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। अब्बास अली नौजवान भारत सभा में शामिल हो गए जिसकी स्थापना भगतसिंह और उनके साथियों ने की थी। बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान वे ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन के सदस्य बने। 1939 में वे विद्रोह के इरादे के साथ ब्रिटिश इंडियन आर्मी में भर्ती हो गए।

1945 में जब सुभाष चंद्रबोस ने आजादी का बिगुल बजाया तो अब्बास अली ने ब्रिटिश सेना छोड़ दी और आजाद हिंद फौज में शामिल हो गए। बाद में उन्होंने अराकान यानी म्यांमा के वर्तमान प्रांत रखाइना में ब्रिटिश सेना के साथ लड़ाई लड़ी। जब जापानियों ने मित्र देशों की सेना के समक्ष समर्पण कर दिया तो अब्बास अली के साथ आजाद हिंद फौज के साठ हजार सैनिकों को गिरफ्तार कर लिया गया। अब्बास को उनके तीन साथियों के साथ मुल्तान के किले में रखा गया। उन पर मुकदमा चला, कोर्ट मार्शल किया गया और1946 में फांसी की सजा सुनाई गई। लेकिन 1947 में स्वतंत्रता के बाद अब्बास को रिहा कर दिया गया। वे राजनीतिक रूप से सक्रिय हो गए। कैप्टन अब्बास अली ने एक साक्षात्कार में आजाद हिंद फौज के दौरान और अराकान में ब्रिटिश सेना से युद्ध के समय सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व को याद किया था।

कुछ वर्ष पहले कैप्टन अब्बास अली का निधन हो गया लेकिन मातृभूमि के लिए उनका प्रेम आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। महान राष्ट्रप्रेमी अब्बास अली को नमन।

******

अन्नपूर्णा महाराणा

तीन नवंबर को स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक कार्यकर्ता अन्नपूर्णा महाराणा की जयंती होती है। उनका जन्म 3 नवंबर, 1917 को ओडिशा के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों रमादेवी और गोपबंधु चौधरी के घर हुआ था। अन्नपूर्णा जब केवल 14 साल की ही थीं, स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गई थीं। वह एक उत्साही गांधीवादी थीं और 1934 में पुरी से भद्रक तक गांधीजी की ऐतिहासिक 'हरिजन पदयात्रा' में उनके साथ थीं।

अन्नपूर्णा ने, 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के सभी प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी और कारावास के तुरंत बाद बारी क्षेत्र में 'शांतिसेना' और 'माराना सेना' बनाई। उन्होंने सितंबर 1942 में कटक जिले के कलमटिया में बड़ी संख्या में ग्रामीणों के साथ विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान पुलिस गोलीबारी में चार लोग मारे गए और कई घायल हो गए। उन्होंने कलमटिया गोलीबारी के बाद बारी और तीन अन्य गांवों में दंडात्मक कर लगाने का विरोध किया। उन्हें दो साल के लिए कटक जेल में भेज दिया गया था और 1944 में निर्वासन आदेश का उल्लंघन करने के लिए फिर से गिरफ्तार किया गया और चार महीने के लिए फिर जेल में डाल दिया गया। आजादी के बाद अन्नपूर्णा ने अपना समय समाज सेवा में बिताया और महिलाओं तथा बच्चों के सशक्तिकरण के लिए काम किया। उन्होंने आचार्य विनोबाभावे के भूदान आंदोलन में भी भाग लिया। उन्होंने रायगडा जिले में आदिवासी बच्चों के लिए एक स्कूल की स्थापना की। अन्नपूर्णा महाराणा का 31 दिसंबर 2012 को ओडिशा के कटक में उनके घर पर निधन हो गया। हम इस महान स्वतंत्रता सेनानी के राष्ट्र के प्रति प्रेम को नमन करते हैं।

*****

सागरमल गोपा

महान, लेकिन गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा का जन्म 3 नवंबर, 1900 को राजस्थान की जैसलमेर रियासत में हुआ था।

सागरमल प्रतिबंधित प्रजामंडल के नेता थे और उन्होंने जैसलमेर तथा आसपास के क्षेत्रों के लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। सागरमल 1921 में गांधीजी के असहयोग आंदोलन का भी हिस्सा बने और उन्होंने जैसलमेर के लोगों से आंदोलन में भाग लेने का आह्वान किया।

सागरमल के पिता आख्याराज जैसलमेर के तत्कालीन शासक महारावल जवाहर सिंह के दरबार में काम करते थे। अपनी युवावस्था के दौरान, उन्होंने ब्रिटिश भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति अपने गृह राज्य द्वारा दिखाए गए उदासीन रवैये को महसूस किया। इससे वह बहुत आहत हुए और उनके अंदर धीरे-धीरे विद्रोह के प्रति जोश की ज्वाला जगी। जवाहर सिंह ने रियासत में पत्रिकाओं के मुद्रण और पढ़ने पर प्रतिबंध लगा दिया। महाराजा को धता बताते हुए, सागरमल ने अपनी पुस्तक "जैसलमेर का गुंडाराज" में जवाहर सिंह के अत्याचारों का उल्लेख किया और कई पुस्तकों का प्रकाशन कर जनता को स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

सागरमल ने जैसलमेर राज्य के शासक की जनविरोधी नीतियों का जमकर विरोध किया, जिसके कारण जैसलमेर और हैदराबाद की रियासतों ने अपने क्षेत्र में उनके प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया। सागरमल अपने परिवार के साथ नागपुर चले गए, लेकिन जब उनके पिता की मृत्यु हुई, तो सागरमल 25 मई, 1941 को उनका अंतिम संस्कार करने के लिए जैसलमेर आए। तब उन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और छह साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। उन्हें सालों तक जेल में प्रताड़ित किया गया...कहा जाता है कि उन्हें जेल में जिंदा जला दिया गया। 4 अप्रैल 1946 को उनका निधन हो गया।

1986 में, भारत सरकार ने सागरमल गोपा के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया। भारत उनके जैसे स्वतंत्रता सेनानियों की निस्वार्थ सेवा और बलिदान का सदैव ऋणी रहेगा।

*****

कमला देवी चट्टोपाध्याय

29 अक्टूबर महान स्वाधीनता सेनानी और सामाजिक कार्यकर्ता कमला देवी चट्टोपाध्याय की पुण्यतिथि होती है। उनका निधन 85 वर्ष की उम्र में 29 अक्टूबर, 1988 को मुंबई में हुआ था। लंदन यूनिवर्सिटी से समाज विज्ञान में डिप्लोमा करने के बाद वे भारत आ गईं। गांधीवादी आदर्शों और अहिंसा से अत्यधिक प्रेरित कमलादेवी गांधीवादी संगठन - सेवा दल में शामिल हो गईं। उन्होंने कांग्रेस के सदस्य के रूप में राष्ट्रवादी संघर्ष में नाम लिखाया। कमलादेवी पर नमक कानून के उल्लंघन के आरोप लगाए गए और जेल भेज दिया गया। कमलादेवी ने तब राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया। जब कांग्रेस के ध्वज पर हाथापाई के दौरान उन्होंने झंडे को कसकर पकड़े रखा। इसके साथ ही वे भारत से बाहर भी राजनीतिक संपर्क बना रही थीं। कमलादेवी 1936 में ऑल इंडिया वुमेन्स कान्फ्रेंस की अध्यक्ष बनीं। वे महान लेखिका भी थीं। जिसकी शुरुआत 1929 में भारत में महिलाओं के अधिकारों पर लेखों के माध्यम से हुई थी। उनकी आखिरी पुस्तक स्वाधीनता के लिए भारतीय महिलाओं की जंग 1982 में प्रकाशित हुई थी। कमलादेवी को भारतीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा को पुनर्जीवित करने का श्रेय भी प्राप्त है। उन्होंने हस्तशिल्प एवं सहकारी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके जरिए लोगों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान में मदद की। कमलादेवी को हथकरघा क्षेत्र में कार्य के लिए हथकरघा माँ के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने नाटक, कला, थियेटर, संगीत और कठपुतली को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक राष्ट्रीय संस्थानों को बढ़ावा दिया। कमलादेवी ने 1944 में इंडियन नेशनल थियेटर की स्थापना की जिसे आज राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के नाम से जाना जाता है। 1974 में कमलादेवी को संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप प्रदान की गई जो संगीत नाटक अकादमी द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। उन्हें 1955 में पद्म भूषण और 1987 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

****

जतिंद्र नाथ दास

27 अक्टूबर के क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी जतिंद्र नाथ दास की जयंती होती है। उनका जन्म कोलकाता में 27 अक्टूबर, 1904 को हुआ था। 17 वर्ष की उम्र में ही वे 1921 के असहयोग आंदोलन में शामिल हुए। लाहौर षडयंत्र केस के संबंध में 14 जून, 1929 को उन्हें अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया। उन पर क्रांतिकारियों के साथ ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जॉन सान्डर्स की हत्या का आरोप था। राजनीतिक बंदियों के अधिकारों के धर्म योद्धा के रूप में जतिन ने कैदियों के साथ अंग्रेजों के बुरे बर्ताव के विरोध में लाहौर सेंट्रल जेल में 63 दिनों तक भूख हड़ताल की थी। भूख हड़ताल के दौरान जतिन को तमाम तरह की यातनाएं दी गईं आखिरकार 13 सितंबर, 1929 को जतिन ने मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति दे दी। सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें भारत का युवा दधीचि कहा था।

******

सिस्टर निवेदिता

28 अक्टूबर को क्रांतिकारी और सामाजिक कार्यकर्ता सिस्टर निवेदिता की जयंती होती है। स्वामी विवेकानंद ने उन्हें निवेदिता नाम दिया था। आयरलैंड में 28 अक्टूबर 1867 को जन्मीं निवेदिता का असली नाम मार्ग्रेट एलिज़ाबेथ नोबल था। निवेदिता के दादा जॉन नोबल, पिता सैमुअल रिचमंड और उनके नाना हैमिल्टन आयरिश स्वाधीनता संघर्ष के अग्रणी सेनानी रहे। कॉलेज की पढ़ाई के बाद 1884 से 1894 तक उन्होंने अध्यापन किया। 1895 में लंदन में स्वामी विवेकानंद से मुलाकात ने उनकी सोच और जिंदगी बदल दी। विवेकानंद के प्रभाव में वे 1898 में कलकत्ता पहुंची और ना सिर्फ यहीं की होकर रह गईं। बल्कि भारतीयता की प्रतिमूर्ति बन गईं। 25 मार्च, 1898 को जब उन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया तो विवेकानंद ने उन्हें निवेदिता नाम दिया। जिसका अर्थ होता है। प्रभु के लिए समर्पित।

मई से अक्टूबर, 1898 के दौरान सिस्टर निवेदिता ने स्वामी विवेकानंद के साथ अल्मोड़ा और कश्मीर की यात्रा की। कश्मीर में जब उन्होंने ब्रिटिश सरकार की कारगुजारियां देखीं तो वे इस नतीजे पर पहुंची कि विदेशी शासन के खात्मे के बिना भारत की मुक्ति नहीं है। दरअसल अंग्रेज सरकार ने मठ और संस्कृत कॉलेज के लिए विवेकानंद को जमीन सौंपने की अनुमति कश्मीर के महाराजा को नहीं दी। मार्च 1899 में जब कलकत्ता में प्लेग फैला तो सिस्टर निवेदिता ने नौजवानों का समूह बनाया और राहत कार्यों में जुट गईं। वे बाग बाजार क्षेत्र की हर झुग्गी में गई और गलियों में झाड़ू लगाकर साफ-सफाई की। जून 1899 के मध्य में निवेदिता इंग्लैंड पहुंचीं। बाद में वे अपने स्कूल के लिए फंड जुटाने के लिए लेक्चर टूर पर अमरीका गईं। इस दौरान बोस्टन में उनकी मुलाकात बिपिन चंद्र पाल से हुई। इंग्लैंड में सिस्टर निवेदिता के खिलाफ जमकर दुष्प्रचार हुआ। लेकिन इसने उन्हें और ज्यादा क्रांतिकारी बना दिया। 1902 में भारत लौटने के बाद चेन्नई में उनका भव्य स्वागत किया गया। तब उन्होंने कहा था कि भारत के लोग पूरी तरह सक्षम हैं और किसी भी बाहरी शक्ति को उन्हें सलाह देने या उनके मामलों में हस्तक्षेप का अधिकार नहीं है। उनके भाषण को खूब सराहा गया। लेकिन अंग्रेज सरकार ने उन्हें प्रतिबंधित कर दिया। कलकत्ता में निवेदिता गर्ल्स स्कूल को वे स्वयं संचालित करती थीं जो देशभर के राष्ट्रवादी संस्थानों के लिए शानदार उदाहरण रहा।

सिस्टर निवेदिता ने स्कूल के लिए सरकारी सहायता लेने से मना कर दिया था। उन्होंने स्कूल में दैनिक समाचार पत्रों में बंदे मातरम ऐसे समय शुरू कराया जब सार्वजनिक रूप से देशभक्ति के गीत गाना अपराध था। उन्होंने स्कूल में स्वदेशी और चरखे की शुरुआत भी कराई। 1902 में जब वायसरॉय लॉर्ड कर्जन ने राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में बाधा डालने के लिए यूनिवर्सिटी कमीशन नियुक्त किया तो सिस्टर निवेदिता ने इसके विरोध में लिखा। इस दौरान उन्होंने भारतीय धर्म एवं संस्कृति के बारे में व्याख्यान देने के लिए देशव्यापी यात्रा की। उन्होंने युवाओं से देशहित के लिए निस्वार्थ सेवा करने की अपील की। 1906 से 1907 तक वे पत्रकारिता में व्यस्त रहीं। प्रबुद्ध भारत में संपादकीय लिखने के अलावा उन्होंने संध्या, द डॉन और न्यू इंडिया जैसे प्रकाशनों में भी योगदान दिया। 1907 में वे ब्रिटिश सांसदों के साथ बैठकों और साक्षात्कार के जरिए भारत की स्वतंत्रता के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए इंग्लैंड गई और वहां अंग्रेजी पत्रिकाओं में लेख भी लिखे।

सिस्टर निवेदिता ने भारत के बाहर क्रांतिकारी पत्रिकाओं के प्रकाशन की व्यवस्था की और उनके भारत में वितरण का इंतजाम भी किया। उन्होंने विदेशों में इधर-उधर रह रहे भारतीय क्रांतिकारियों को संगठित भी किया। जब सिस्टर निवेदिता 1909 में भारत लौटीं तो उनके ज्यादातर सहयोगी जेल में थे। 13 अक्टूबर, 1911 को 43 वर्ष की उम्र में दार्जिलिंग में सिस्टर निवेदिता का निधन हो गया। दार्जिलिंग के विक्टोरिया फाल्स में उनके स्मारक पर ये शब्द लिखे हैं - "यहां सिस्टर निवेदिता विराजमान हैं, जिन्होंने भारत के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।"

*****

गणेश शंकर विद्यार्थी

26 अक्तूबर 1890 को महान स्वाधीनता सेनानी और प्रतिष्ठित पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी की जयंती होती है। उनका जन्म, उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले के अतरसुइया गाँव में हुआ था। उनके पिता शिक्षक थे। विद्यार्थी ने स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद कायस्थ पाठशाला कॉलेज में नामांकन कराया, लेकिन आजीविका कमाने में परिवार की सहायता करने के कारण वे स्नातक पूरी नहीं कर सके। उन्होंने क्लर्क की नौकरी कर ली। लेकिन उनका जुनून पत्रकारिता थी। बाद में, वे कर्मयोगी में लिखने लगे, जिसे क्रांतिकारी गदर आंदोलन के नेता पंडित सुंदरलाल निकाल रहे थे। 23 वर्ष की उम्र में विद्यार्थी ने प्रकाशन छोड़ दिया और कानपुर चले गए। वहां उन्होंने 1920 में अपना साप्ताहिक-पत्र प्रताप शुरू कर दिया। उसी वर्ष उन्हें रायबरेली के किसान आंदोलन में भाग लेने के कारण दो वर्ष के सश्रम कारावास की सजा हुई। उन्हें 1922 में रिहा किया गया, लेकिन फतेहगढ़ में राजद्रोही भाषण देने के आरोप में फिर जेल भेज दिया गया। उन्होंने न केवल स्वाधीनता संघर्ष के बारे में खूब लिखा। बल्कि समाज में बराबरी के बारे में भी लेख लिखे। स्वतंत्र रहने के अभियान के लिए उन्होंने एक रजवाड़े का संरक्षण लेने से मना कर दिया। जिन्होंने प्रताप में अपनी आलोचना के बाद विद्यार्थी को प्रताप के लिए आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव किया था। अपने तेवर के चलते प्रताप जल्द ही स्वाधीनता आंदोलन का प्रमुख मंच बन गया। विद्यार्थी ने जनता में रचनात्मक सोच विकसित करने के लिए भी पत्रकारिता का बखूबी उपयोग किया। वे भाईचारे के प्रबल समर्थक थे। गणेश शंकर विद्यार्थी ने हिंदुस्तानी बिरादरी नामक संगठन बनाने में भी प्रमुख भूमिका निभाई। इस संगठन ने साम्प्रदायिक भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए तमाम त्योहारों पर संयुक्त समारोह आयोजित किए। गणेश शंकर विद्यार्थी, कांग्रेस के सदस्य और गांधीजी के सच्चे अनुयायी थे। वे असहयोग आंदोलन के दौरान प्रभावशाली नेता के रूप में भी उभरे।

विद्यार्थी जी ने 1917-18 के होम रुल लीग आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई और कानपुर की कपड़ा मिलों के कामगारों की पहली हड़ताल का नेतृत्व किया। उन्होंने खुले दिल से भारतीय क्रांतिकारियों का समर्थन किया। विद्यार्थी भगत सिंह समेत कई क्रांतिकारियों के बेहद करीबी थे। उन्होंने क्रांतिकारियों के लिखे लेख और पर्चे प्रकाशित किए। विद्यार्थी जी ने क्रांतिकारियों को आर्थिक मदद भी दी और पुलिस से बचने में भी सहायता की। काकोरी ट्रेन डकैती कांड के बाद फरारी के दिनों में विद्यार्थी जी ने अशफाक उल्ला खान को भी आर्थिक मदद दी थी। विद्यार्थी ने ही प्रसिद्ध क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा प्रकाशित की थी। भगत सिंह ने भी प्रताप में काम किया था। वहां वे बलवंत सिंह के नाम से लेख भी लिखते थे। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त से विद्यार्थी जी की मुलाकात जेल में हुई थी। उन्होंने लाहौर षड्यंत्र केस के कैदियों की 63 दिन की ऐतिहासिक भूख हड़ताल की खबर को व्यापक रूप से प्रकाशित किया था। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी के तुरंत बाद कानुपर में दंगे हो गए थे। कानपुर के शेर के रूप से मशहूर विद्यार्थी ने दंगे रोकने और शांति कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दुर्भाग्य से तीनों क्रांतिकारियों की फांसी के तीन दिन बाद 25 मार्च, 1931 को दंगों में विद्यार्थी की भी हत्या कर दी गई।

गणेश शंकर विद्यार्थी के पोते अशोक विद्यार्थी का कहना है कि कानपुर दंगे विद्यार्थी से छुटकारा पाने का ब्रिटिश षड्यंत्र का हिस्सा थे।

40 वर्ष की उम्र में विद्यार्थी की मृत्यु पर दुख व्यक्त करते हुए महात्मा गांधी ने यंग इंडिया में लिखा था कि उनकी मौत से सबको ईर्ष्या होगी। उनका रक्त ऐसा सीमेंट है जो अंततः दोनों समुदायों को एकजुट करेगा। कोई समझौता हमारे दिलों को नहीं बांध सकता। लेकिन गणेश शंकर विद्यार्थी ने जो वीरता दिखाई, वह पत्थर दिल लोगों को पिघलाकर एक कर देगा।

जाने माने इस पत्रकार की स्मृति में भारत सरकार ने हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में असाधारण योगदान को सम्मानित करने के लिए 1989 में गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार की शुरुआत की। भारत के राष्ट्रपति हर साल यह पुरस्कार प्रदान करते हैं।

*****

तेलंगा खड़िया

हम आदिवासी स्वाधीनता सेनानी तेलंगा खड़िया को याद कर रहे हैं। उनका जन्म 9 फरवरी, 1806 को वर्तमान झारखंड में गुमला जिले में हुआ था। तेलंगा को क्रांतिकारी विचारों और समाज सेवा के प्रति समर्पण के लिए जाना जाता है। उन्होंने 1850 से 1860 के दौरान छोटा नागपुर क्षेत्र में अत्याचार और आदिवासियों को भूमि से बेदखल करने के विरोध में अंग्रेजों से लोहा लिया।

छोटा नागपुर क्षेत्र सदियों से पारंपरिक शासन प्रणाली पड़हा का पालन करता रहा है। ये लोग प्रायः किसी भी तरह के बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त थे। लेकिन 1850 के दशक के दौरान बिटिश शासन में लागू किए गए नियमों के कारण पड़हा व्यवस्था बाधित हो गयी। आदिवासियों को अपनी उस जमीन पर राजस्व यानी मालगुजारी का भुगतान करने को विवश किया गया जिस जमीन पर वे सदियों से खेती करते आ रहे थे। तेलंगा ने लोगों को जागरूक कर एकजुट करना शुरू किया। उन्होंने कई गांवों में ज्यूरी पंचायतें बनाईं जो ब्रिटिश शासन के समानांतर स्वशासन करने लगीं। तेलंगा ने करीब डेढ़ हजार लोगों की सेना बनाई जिन्होंने लड़ाई की छापे मार शैली अपनाई। वे अंग्रेजों, उनके बिचौलियों और ब्रिटिश शासन के प्रत्येक ठिकाने पर हमले करने लगे। अंग्रेज इस विद्रोह को किसी भी कीमत पर कुचलना चाहते थे। लेकिन तेलंगा खड़िया अत्यधिक सतर्क रहते थे और जंगलों में रहते हुए सभी गतिविधियों पर नियंत्रण रखते थे। लेकिन एक बार जब तेलंगा ग्राम ज्यूरी पंचायत की बैठक में व्यस्त थे तो जमींदार के एजेंट ने यह सूचना अंग्रेजों तक पहुंचा दी और अंग्रेजों ने तेलंगा को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें लोहरदगा जेल भेजा गया। इसके बाद तेलंगा को कलकत्ता जेल भेज दिया गया जहां उन्होंने 18 वर्ष की सजा काटी।

रिहा होने के बाद तेलंगा ने अंग्रेजों से फिर युद्ध छेड़ दिया। उनकी गतिविधियों की सूचना अंग्रेजों तक पहुंची और उन्होंने तेलंगा को खत्म करने की साजिश रची। 23 अप्रैल, 1880 को जब तेलंगा खड़िया पूजा कर रहे थे तो ब्रिटिश एजेंट बोधन सिंह ने उन्हें गोली मार दी। अंग्रेजों से छिपकर तेलंगा के अनुयायियों ने उनके पार्थिव शरीर को गुमला जिले के सोसोनीमटोली गांव में दफनाया। उनके समाधि स्थल को तेलंगा टोपातांड के नाम से जाना जाता है। इस स्थान को छोटा नागपुर क्षेत्र के लोग पवित्र स्थल मानते हैं। प्रत्येक वर्ष 23 अप्रैल को लोग उनके बलिदान का स्मरण करते हैं और गुमला जिले के ढिढौली गांव में सप्ताह भर का शहीद तेलंगा मेला आयोजित किया जाता है। तेलंगा अपने साहस, त्याग और शहादत से लोगों को प्रेरित करते हैं। इस महान स्वाधीनता सेनानी को शत-शत नमन।

******

अकबर खान

स्वतंत्रता सेनानी अकबर खान का जन्म 7 फरवरी, 1820 को राजस्थान के करौली में हुआ था। अकबर खान, कोटा राज्य सेना में एक अधिकारी थे। उन्होंने 1857 में कोटा राज्य पर ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रभुत्व के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता के पहले युद्ध में सक्रिय रूप से भाग लिया। वह 15 अक्टूबर 1857 को महराब खान के नेतृत्व में कोटा में पोलिटिकल एजेंसी हाउस पर हमले में शामिल हुए। इस हमले में राजनीतिक एजेंट कैप्टन सी ई बर्टन, उनके दो बेटे और कुछ अन्य लोग मारे गए थे। उन्होंने कोटा शासक महाराव और अंग्रेजों की संयुक्त सेना के खिलाफ कई अन्य लड़ाइयां भी लड़ीं। मार्च 1858 में अकबर खान शहीद हुए। हम इस महान शहीद को नमन करते हैं।

******

सचिंद्रनाथ सान्याल

क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी सचिंद्रनाथ सान्याल 7 फरवरी के दिन शहीद हुए थे। सान्याल हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संस्थापक थे। वे चंद्रशेखर आज़ाद और भगतसिंह जैसे क्रांतिकारियों के गुरु थे। वे शायद एकमात्र ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्हें दो बार अंडमान की सेल्युलर जेल- *काला पानी* भेजा गया था।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी में 1893 में जन्में सान्याल, अनुशीलन समिति के एक प्रमुख सदस्य थे। एक युवा के रूप में वह पंजाब और संयुक्त प्रांत में क्रांतिकारी आंदोलन के आयोजन में सक्रिय थे। सचिंद्रनाथ सान्याल ने गदर पार्टी षडयंत्र के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

वह रासबिहारी बोस के प्रमुख सहयोगी थे और बंगाल में आंदोलनकारियों को जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी भी थे। आनंदोलनकारी गतिविधियों के कारण सान्याल को गिरफ्तार किया गया और अंडमान – निकोबार में सेलुलर जेल भेज दिया गया। वहां उन्होंने *बंदी जीवन नाम*क पुस्तक लिखी जो अत्यधिक प्रसिद्ध हुई।

उन्हें 1920 में रॉयल एमनेस्टी के तहत रिहा कर दिया गया था। अपनी रिहाई के बाद, सान्याल ने साहित्य और अखबारों के माध्यम से क्रांतिकारी संगठन को व्यापक आधार पर बढ़ावा देना जारी रखा। वह प्रतुल गांगुली, जोगेशचंद्र चटर्जी, त्रैलक्य चक्रवर्ती, नरेंद्रनाथ सेन और प्रबोध चंद्र दास गुप्ता सहित बंगाल के प्रमुख क्रांतिकारियों के साथ-साथ भारत के सभी हिस्सों में सक्रिय अन्य क्रांतिकारियों के निकट संपर्क में थे। वह नादिया जिला कांग्रेस कमेटी की कार्यकारी समिति के सदस्य थे। वह रासबिहारी बोस और एम एन रॉय के साथ सुदूर पूर्व से भारत में हथियारों और गोला-बारूद की खेप मंगाने में सक्रिय रूप से शामिल थे।

असहयोग आंदोलन के बाद सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल और अन्य क्रांतिकारियों ने अक्तूबर 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन, एचआरए, की स्थापना की। उन्होंने एचआरए घोषणा पत्र तैयार किया, जिसका शीर्षक था- द रिवोल्यूशनरी। इसे 31 दिसंबर 1924 को उत्तर भारत के शहरों में बांटा गया। 1925 में सान्याल को *बांकुरा जिले में क्रांतिकारी* नामक पत्र को लोगों में बांटने के लिए दोषी ठहराया गया और दो साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। बाद में उन्हें लखनऊ में काकोरी षडयंत्र मामले में अप्रैल 1927 में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

उन्हें 1937 में रिहा कर दिया गया लेकिन 1941 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानियों के साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ साजिश रचने के आरोप में फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। 7 फरवरी 1942 को नजरबंदी के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। इस महान शहीद को हमारा नमन।

****

जाकिर हुसैन

8 फरवरी को शिक्षाविद और पूर्व राष्ट्रपति जाकिर हुसैन की जयंती होती है। उनका जन्म 8 फरवरी, 1897 को हैदराबाद में हुआ था। महात्मा गांधी की अपील पर जाकिर हुसैन ने अलीगढ़ में मुस्लिम नेशनल यूनिवर्सिटी की स्थापना में सहायता की जिसे बाद में दिल्ली लाया गया और जामिया मिलिया इस्लामिया नाम रखा गया। वे 1926 से 1948 तक इस के कुलपति रहे। यह संस्थान ब्रिटिश शासन से भारत को स्वाधीन कराने के संघर्ष से जुड़ा रहा। इसने महात्मा गांधी और हकीम अजमल खान के विचारों के अनुरूप मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान की। गांधीजी के निमंत्रण पर जाकिर हुसैन बुनियादी शिक्षा पर राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष भी बने। स्कूलों के लिए गांधीवादी विचारधारा पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए 1937 में यह समिति बनाई गई थी।

स्वतंत्रता के उपरांत जाकिर हुसैन 1948 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति बन गए। उन्हें 1957 में बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया गया। 1962 में वे देश के उपराष्ट्रपति और 1967 में राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। राष्ट्रपति के पद पर रहने के दौरान ही 3 मई 1969 को जाकिर हुसैन का निधन हो गया। जाकिर हुसैन को भावभीनी श्रद्धांजलि।

****

दुर्गा देवी वोहरा

15 अक्टूबर को हम महान मगर गुमनाम क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी दुर्गा देवी वोहरा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उन्हें दुर्गावती देवी के नाम से भी जाना जाता है। दुर्गावती का निधन 15 अक्टूबर, 1999 को हुआ। वे चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह की हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन –एचएसआरए की प्रमुख सदस्य थीं। एसोसिएशन के सदस्य भगवती चरण वोहरा उनके पति थे। इसलिए एसोसिएशन के सदस्य उन्हें भाभी कहते थे और वे भारत के क्रांतिकारियों के बीच दुर्गा भाभी के नाम से लोकप्रिय हो गईं। उस समय दुर्गावती कुछ ऐसी महिला क्रांतिकारियों में शामिल थीं जिन्होंने ब्रिटिश राज के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया।

17 दिसंबर, 1928 को सांड्रस की हत्या के बाद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु सहायता के लिए दुर्गादेवी के पास आए। दुर्गा देवी ने उन्हें पैसे तो दिए ही, लाहौर से निकलने में भी उनकी सहायता के लिए सहमत हो गई। उन्होंने भगतसिंह की पत्नी का भेष बनाया और अपने नवजात पुत्र सचिन को गोद में लेकर उनके साथ चल दी। राजगुरु उनके सेवक के रूप में उनका सामान उठाकर चल रहे थे। पुलिस के पहरे के बीच वे निर्भीकता से निकल गए और लखनऊ के लिए ट्रेन के प्रथम श्रेणी डिब्बे में सवार हो गए। वहां से उन्होंने कलकत्ता की ट्रेन पकड़ी। कोई पहचान न सके, इसके लिए भगत सिंह ने पहले दिन ही दाढ़ी काट ली थी और बाल छोटे कर लिए थे और पश्चिमी पोशाक पहन कर वहां से निकले थे।

कलकत्ता कांग्रेस के कुछ सत्रों में भाग लेने के बाद दुर्गा देवी अपने पुत्र को लेकर लाहौर लौट गई। अप्रैल, 1929 में भगत सिंह और उनके सहयोगी बटुकेश्वरदत्त ने सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में खाली कुर्सियों के बीच कम तीव्रता के दो बम फेंके। लाहौर में जांचकर्ताओं ने कश्मीर हाउस में एचएसआरए की बम फैक्ट्री ढूंढ निकाली जो दुर्गा भाभी के पति भगवतीचरण वोहरा के नाम से किराए पर ली गई थी। सुखदेव, जयगोपाल और किशोरी लाल को गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन भगवती चरण गायब हो गए। इस दौरान दुर्गा देवी ने लाहौर में क्रांतिकारियों के परिवारों का समर्थन किया और फरार क्रांतिकारियों के लिए पत्र भेजने में सहायता की। जेल में 63 दिन की भूख हड़ताल में मृत्यु के बाद लाहौर से कलकत्ता तक क्रांतिकारी जतिन दास के अंतिम जुलूस में दुर्गादेवी भी साथ थीं। वे इस दौरान क्रांतिकारियों के लिए हथियारों की खरीद के कार्य में भी शामिल रहीं।

1929 में भगवती चरण और दुर्गा देवी चंद्रशेखर आजाद, यशपाल और वैशम्पायन के साथ उस योजना में भी शामिल थी जो भगत सिंह को बोर्सटल से लाहौर जेल ले जाने के दौरान पुलिस वैन पर धावा बोल कर भगत सिंह को आजाद कराने के लिए बनाई गई थी। 28 मई, 1930 को जंगल में बम का परीक्षण करते समय भगवतीचरण की मृत्यु हो गई जो उनके हाथ में ही फट गया था। अपने पति की मृत्यु के बाद दुर्गा देवी लगातार यात्रा करती रहीं और पुलिस से एक कदम आगे रहीं। जब भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी की सजा सुनाई गई तो दुर्गा देवी ने पंजाब के पूर्व गवर्नर और क्रांतिकारियों के जानी दुश्मन लॉर्ड हैली को मारने का प्रयास किया। हालांकि हैली बच गया लेकिन उसके कई सहयोगी मारे गए। दुर्गा देवी को ब्रिटिश पुलिस ने पकड़ लिया और तीन वर्ष के लिए जेल भेज दिया।

स्वतंत्रता के बाद दुर्गा देवी गाजियाबाद में गुमनाम रहकर आम नागरिक की तरह रहने लगी। बाद में उन्होंने लखनऊ में गरीब बच्चों के लिए स्कूल खोला। गाजियाबाद में 15 अक्टूबर, 1999 को 92 वर्ष की उम्र में दुर्गा देवी का निधन हो गया। उनका साहस और निर्भीकता निसंदेह मां दुर्गा की तरह था जो अपनी मातृभूमि को विदेशी शासन से मुक्त कराने के लिए ब्रिटिश ताकतों से लड़ी।

******

राममनोहर लोहिया

स्वाधीनता सेनानी, लेखक, चिंतक और राजनेता राममनोहर लोहिया का निधन 12 अक्टूबर, 1967 को हुआ था। लोहिया का जन्म उत्तर प्रदेश में फैज़ाबाद जिले के अकबरपुर गांव में 23 मार्च, 1910 में हुआ था। उनके पिता महात्मा गांधी के अनुयायी थे। राममनोहर लोहिया का झुकाव आरंभिक जीवन से ही गांधीवादी दर्शन की तरफ हो गया था और दस वर्ष की उम्र में वे सत्याग्रही बन गए थे।

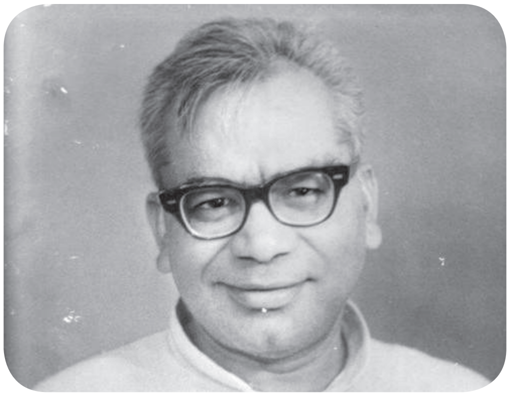

स्कूल के दिनों में लोहिया ने उन पाठ्य पुस्तकों के विरुद्ध अभियान शुरू किया जिनमें शिवाजी को लुटेरा राजा बताया गया था। बाद में लोहिया ने साइमन कमीशन के विरुद्ध आन्दोलन में भाग लिया। कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि लेने के बाद लोहिया आगे की पढ़ाई के लिए यूरोप चले गए। यूरोप में लोहिया ने जिनेवा में राष्ट्रसंघ की सभा में भाग लिया। भारत का प्रतिनिधित्व बीकानेर के महाराजा ने किया जो ब्रिटिश राज के चहेते के रूप में जाने जाते थे। लोहिया ने इसे स्वीकार नहीं किया और आंगतुकों के लिए निर्धारित गैलरी से इसका विरोध किया। उन्होंने अपने विरोध के कारणों को स्पष्ट करते हुए अखबारों और पत्रिकाओं के संपादकों को कई पत्र लिखे। उस पूरी घटना ने लोहिया को रातों-रात भारत में प्रसिद्ध कर दिया। लोहिया ने एसोसिएशन ऑफ यूरोपियन इंडियंस के आयोजन में सहायता की और क्लब के सचिव बन गए। उस संगठन का मुख्य ध्यान भारत के बाहर भारतीय राष्ट्रवाद का संरक्षण और विस्तार पर था। लोहिया ने अपनी पीएचडी थीसिस गांधीजी के सामाजिक-आर्थिक सिद्धांत पर केंद्रित नमक सत्याग्रह के विषय पर लिखी।

लोहिया समाजवाद के प्रति आकर्षित हुए और 1934 में स्थापित कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना में सहायता की। लोहिया ने जब पहली जून, 1940 को गांधीजी के समाचारपत्र हरिजन में 'सत्याग्रह नाउ' लेख लिखा तो उन्हें गिरफ्तार किया गया और दो वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया। जेलरों ने उन्हें मानसिक यातना दी और कड़ी पूछताछ की। अंग्रेजों ने दिसंबर, 1940 में अन्य नेताओं के साथ लोहिया को रिहा कर दिया। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब प्रमुख नेता जेल में थे तो लोहिया ने भूमिगत रहकर आंदोलन चलाया। स्वाधीनता सेनानी उषा मेहरा के साथ लोहिया ने बंबई में सीक्रेट रेडियो स्टेशन से संदेश प्रसारित किए। उसे कांग्रेस रेडियो कहा जाता था और यह प्रसारण पूरे तीन महीने तब तक जारी रहा जब तक अंग्रेजों ने उसका पता नहीं लगा लिया। उन्होंने कलकत्ता में आंदोलन को पुनर्जीवित किया और बाद में अंग्रेजों से बचने के लिए नेपाल चले गए लेकिन मई, 1944 में उन्हें पकड़ लिया गया। लोहिया को लाहौर जेल ले जाया गया लेकिन गांधीजी के दबाव में उन्हें रिहा कर दिया गया।

लोहिया ने अपने भाषणों और लेखों में विभाजन का कड़ा विरोध किया। उन्होंने दंगा प्रभावित क्षेत्रों में समुदायों से एकजुट होने, अपने आसपास हिंसा की अनदेखी करने और अहिंसा के गांधीजी के आदर्श पर अडिग रहने की अपील की। विभाजन के समय उन्होंने गांधीजी को सांत्वना देने का प्रयास भी किया और स्वतंत्रता के बाद संकट की घड़ी में उसी तरह गांधीजी के साथ रहे जैसे कोई पुत्र अपने पिता के साथ रहता है।

डॉ. लोहिया लगभग 650 भारतीय रियासतों के एकीकरण से बड़े राज्य बनाने का विचार देने वाले पहले व्यक्ति थे। यह ऐसा विचार था जिसे बाद में भारत के पहले गृहमंत्री सरदार पटेल ने सफलतापूर्वक लागू किया। स्वतंत्रता के उपरांत लोहिया ने महान चिंतक और सांसद और अल्पसंख्यकों, निचले वर्ग के लोगों और महिलाओं के हितों के लिए लड़ने वाले के रूप में अमिट छाप छोड़ी। जीवन के अंतिम दिनों में राजनीति के अलावा उन्होंने काफी समय भारतीय साहित्य, राजनीति और कला जैसे विषयों पर हजारों युवाओं के साथ चर्चा में बिताया। 12 अक्टूबर, 1967 को नई दिल्ली में लोहिया का निधन हो गया। उन्होंने अपने पीछे कोई संपत्ति या बैंक बैलेंस नहीं छोड़ी लेकिन छोड़ गए तो विवेकपूर्ण चिंतन की लंबी परंपरा।

****

पृथ्वी, पानी, प्रकृति, पर्यावरण अस्तित्व के संरक्षक

रवींद्र कौल 'रवि'

दुनिया बनाने वाले (निर्माता) ने एक ऐसी दुनिया बनाई जो हर प्रकार से पूर्ण और हर नेमत (सुख सुविधा) में समृद्ध है। उस रचनाकार ने दुनिया रूपी एक ऐसी मूरत का निर्माण किया जो अपनी सम्पूर्णता और सुन्दरता पर गर्व करती रही है। सब कुछ अपनी विशेषताओं के अनुसार बनाया गया है। किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रखी। विज्ञान जो कहता है उसका अपना स्थान है, लेकिन इस बात से कोई इंकार नहीं किया जा सकता कि यह दुनिया अपने आप में एक चमत्कार से कम नहीं और जिस ने इस की रचना की वह कितना बलशाली और महान होगा। सुबह सूर्योदय होता है, शाम को अस्त होता है लेकिन अगले दिन फिर उदय होता है और पूरी सृष्टि को प्रकाशमान करता है, यह सिलसिला निरंतर चलता रहता है। इसी तरह दिन ढल जाता है और उसके बाद रात आती है। प्रकृति की व्यवस्था का यह नियम यूँ ही किसी ठहराव के बगैर चलता रहता है।

आसमानों से बातें करने वाले बर्फ़ पौश पहाड़, तेज़ बहते हुए दरिया, गीत गाती, बल खाती नृत्य करती हुई नदियाँ, ऊँचाइयों से गिरते हुए झरनों की झनकार, गुनगुनाते हुए चश्मों की सदा,सीमाब तन झीलें, लहलहाते हुए खेत, सरसब्ज़-ओ-शादाब वादियां, तनावर-ओ-कद्दावर पेड़, पत्तों की सरसराहाट, साया बान आकाश, आकाशगंगा के दमकते चमकते अनमोल हीरे मोती, दिल-फ़रेब-ओ-दिलकश प्राकृतिक दृश्य, नीले-नीले गगन के तले विशाल गहरे और फ़राख़ शांत सागर, फूल बरसाती हुई हवाएं। रंग बिरंगे फूलों की ख़ुशबू, वृक्षों की टहनियों पर बैठ कर सुस्ताने वाले पंछियों की चहचहाहट, सदाबहार चरागाहों की भीनी-भीनी सुगंध, दुल्हन की तरह सजे पौधों की महक, रुतों का इन्द्रधनुषी ख़ुमार, दूर-दूर तक डेरा डाले हुए चुपचाप रेगिस्तानों की सरगुज़श्त, चार सू तरो ताज़गी बख़शने वाली निर्मल मिट्टी की महक और ताज़ा-दम हवाओं के झोंके। इस पृथ्वी की तस्वीरकशी करते हैं।

अरबों साल पहले ज़मीन का वजूद अमल में आया। शायद ज्वालामुखी की वजह से वायुमंडल की संरचना हुई और इस के बाद सागर। प्रारंभिक समय में वायुमंडल लगभग बग़ैर ऑक्सीजन था। तसादमों के कारण ज़मीन का ज़्यादा-तर हिस्सा पिघला हुआ था जब ज़मीन अपने प्रारंभिक मरहले में थी तो ख़्याल किया जाता है कि एक बहुत बड़े तसादुम के असर के नतीजे में चांद बना। वक्त के साथ-साथ ज़मीन ठंडी हो गई जिसके नतीजे में एक ठोस परत बनी और सतह पर तरल पानी का मार्ग प्रशस्त हुआ। धरती पर जीवन से जुड़ी प्रारंभिक शहादत भी अरबों साल पहले की है। ज़मीन की परत भी अपने बनने के बाद से लगातार बदली है और इसी तरह ज़िंदगी भी। प्रजातियां लगातार बदलती रहती हैं। नई सूरतें धारण कर लेती हैं।

क्या पृथ्वी के बग़ैर ज़िंदगी के अस्तित्व की कल्पना की जा सकती है? यह ना सिर्फ रहने की जगह है बल्कि ये एक आधार है, सृष्टि के अस्तित्व का। इस से उत्पन्न होने वाले साधन जहां दुनिया को चलाने में सहायक साबित होते हैं वहीं ये साधन समय-समय पर किसी भी संभावित परिस्थिति से निपटने के लिए अपनी भूमिका ख़ूब निभाने में समर्थ साबित होते हैं। इतना ही नहीं ये कितना दबाव सहती और झेलती है और कभी भी अपने माथे पर मायूसी के शिकन तक ज़ाहिर नहीं करती। ज़मीन सुरक्षित रहे इन्सानी आबादी के साथ-साथ दूसरे साधन भी सुरक्षित रहेंगे। क्या हम हवा और पानी के बग़ैर ज़िंदा रह सकते हैं? क्या हम मिट्टी, पेड़ पौधों और जानवरों के बग़ैर इस पृथ्वी पर जीवन व्यतीत कर सकते हैं क्या पृथ्वी के हृदय में सुरक्षित खनिज पदार्थ को बाहर लाकर उपयोग में लाए बिना अपनी अर्थ व्यवस्था को पूरी तरह से चलाया जा सकता है? ये चंद प्रश्न हैं जो इस सत्य को और भी मज़बूती प्रदान करते हैं कि पृथ्वी जीवित प्राणियों की शहरग है। हवा, पानी, मिट्टी, खनिज, पेड़ पौधे, जानवर आदि पृथ्वी के प्राकृतिक साधन हैं। इन साधनों की

सुरक्षा से ही हमारा आने वाला कल सुरक्षित रह सकता है। सारे जीव-जन्तु और मनुष्य, प्राणी भी इन साधनों से किसी भी समय लाभ उठा सकते हैं। ये भविष्य के ज़मात दार हैं। क़ुदरती वसीलों की आबयारी और हिफ़ाज़त हर मनुष्य, प्राणी का एक अख़लाक़ी फ़र्ज़ है। ये साधन अपने आरंभ से ही लाभ पहुंचाते रहे हैं मगर इन्सानी लोभ ने इन साधनों को अपनी हवस का शिकार बना कर ज़बरदस्त नुकसान पहुंचाया। ये बात भी सही है कि प्राकृतिक आपदाओं पर किसी का वश नहीं होता। जो पृथ्वी के क़ुदरती अमल का एक नतीजा होती हैं। मगर ये भी इतना ही सच है कि यदि इन्सान के बेदर्द हाथों ने इन क़ुदरती साधनों का बे-तहाशा सफ़ाया ना किया होता तो उन प्राकृतिक आपदाओं पर काफ़ी हद तक क़ाबू पाया जा सकता था। समुद्री तूफ़ान, सैलाब, आतिश-फ़िशानी, भूकंप, सुनामी, गर्द ग़ुबार और दूसरी भू-वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को अगरचे रोका नहीं जा सकता है परंतु कम किया जा सकता है। प्राकृतिक आपदाएं ना सिर्फ ज़मीन, जायदाद, वन्य-जीव, पेड़-पौधों, इन्सानों और जानवरों को नुकसान पहुंचाती हैं बल्कि ये आम बुनियादी ढाँचे पर भी अपना असर छोड़ती हैं।

जो हमारी रोज़मर्रा की चीज़ें हैं वो उन क़ुदरती वसीलों से हासिल होती हैं जिनका सम्बंध ख़ुराक, हवा, पानी, पेड़ पौधों वग़ैर से होता है। यहां ये उल्लेख करना ज़रूरी है कि प्रकृति पांच तत्वों से बनी है ये तत्व हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इन पांचों तत्वों की अपनी-अपनी विशेषतायें हैं। भारत ही एक ऐसा देश है जहां पत्थरों, पेड़-पौधों, दरियाओं,चश्मों, पहाड़ों, जानवरों, खेत खलिहानों को पूजा जाता है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी को अर्घ अर्पण किया जाता है। ये जज़बा जहां आस्था का प्रतीक है। वहीं ये जज़बा प्रकृति और मानवता के बीच हम-आहंगी को भी दर्शाता है।

ज़िंदा रहने के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता है वो क़ुदरती वसीलों से आते हैं और ये क़ुदरती वसाइल हैं पानी, हवा, अनाज आदि। क़ुदरती साधनों की जितनी हिफ़ाज़त और देख-रेख की जाये उतना ही इन साधनों से लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है। और ये फ़ायदा कोई आरिज़ी फ़ायदा नहीं, ये देरपा साबित हो सकता है। अपनी आजीविका सुनिश्चित करने के साथ-साथ दूसरों को भी मदद फ़राहम किया जा सकता है। प्राकृतिक साधनों का जितना लायक़ और सोच-समझ कर इस्तेमाल किया जाये उनसे ना सिर्फ अधिक लाभ मिलने की संभावना बनी रहती है बल्कि ये अपने इर्द-गिर्द एक अच्छे माहौल को भी जन्म देने में सहायक सिद्ध होते हैं। ये सितम ज़रीफ़ी है कि हम इन क़ुदरती वसीलों के साथ लापरवाही बरतते हैं। वनों का नाश करने में कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ते। जिसके कारण ये वन बिरहना हो जाते हैं। पेड़ इन पहाड़ों की ज़ीनत होते हैं। ये एक सजी हुई दुल्हन से कम नहीं होते जब ये पहाड़ हरे-भरे पेड़ों से मलबूस होते हैं तो ये हमें काफ़ी मिक़दार में ऑक्सीजन फ़राहम करते हैं। ये सदाबहार पेड़ ऑक्सीजन के साथ-साथ माहौल का संतुलन बनाए रखने में भी सहायक सिद्ध होते हैं। ख़ासकर पत्तेदार दरख़्त ज़्यादा ऑक्सीजन देते हैं। सदाबहार पेड़ों से आबाद हमारे पहाड़, हमारे पर्यावरण को साफ़-ओ-सुथरा और महफ़ूज़ रखते हैं। इनसे जानवरों को चारा ही नहीं मिलता जानवरों की तादाद में भी इज़ाफ़ा होता है और ये अपनी क़ुदरती साधनों से मालामाल अपनी पनाहगाहों में ही रहना पसंद करते हैं।

नेचर के शायर WILLIAM WORDSWORTH कहते हैं कि सदाबहार वनों से आप बहुत कुछ सीख सकते हैं। महान काश्मीरी सूफ़ी संत कवि नुंद ऋषि कहते हैं कि “अन पोषि तेलि येलि वन पोषि” अर्थात जब तक वन हैं तब तक अन्न है।

ये वाणी इस हक़ीक़त को दर्शाती है कि हरे-भरे और घने जंगल इन्सान की बक़ा के लिए कितने ज़रूरी हैं।

पहाड़ हमारे पासबान हैं। तो वन हमें आलमी हरारत से बचने में मदद करते हैं ये ना केवल ज़मीन को बचाते हैं बल्कि इनके पेड़ों से झड़ने वाले पत्तों वग़ैरा से मिट्टी को मुक़व्वी ग़िज़ा मिलती है मिट्टी ज़रख़ेज़ बनती है जिसके नतीजे में पैदावार में भी इज़ाफ़ा होता है। ज़्यादा-ज़्यादा पेड़ों के रहते हुए ज़मीनी कटावों को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। पौधों और जानवरों की अनगिनत प्रजातियां इन वनों में निवास करती हैं। ये वन हयातयाती रंगा-बिरंगी की मिसाल पेश करते हैं। अगरचे वन संरक्षण की बातें हर तरफ़ से सुनने को मिलती हैं। बेदारी मुहिमें चलाई जाती हैं, फिर भी हर साल जंगलों का ज़बरदस्त नुक़्सान हमें उठाना पड़ता है और ये जंगल बड़ी बेरहमी से काटे जाते हैं। इस तरह हम अपने बेशक़ीमती क़ौमी विरसे को बनाने की जगह मिटाने का प्रयास करते हैं और साथ ही अपनी आने वाली नस्ल को एक बड़ी नेमत से महरूम रखने का पहले से ही इंतिज़ाम कर दिया जाता है। हीरे जवाहरातों से भी अनमोल है, अपनी धरती जो हर किसी को अपने गले लगाती है चाहे उस का संबंध किसी भी धरम के साथ क्यों ना हो। हम स्वयं अपनी बर्बादी के

ज़िम्मेदार हैं। नहीं तो प्रकृति ने हमारे लिए क्या कुछ मुहैया नहीं कर रखा है। बारानी जंगल हमें बहुत कुछ फ़राहम करते हैं। इन बेशकीमती मसनूआत में, लकडिय़ों के इक़साम, मेवे, फूल, जड़ी-बूटियां आदि कसरत से मिलती हैं। पहले पहल जड़ी-बूटियां ही बीमार को ठीक किया करती थीं। एक तो ये आसानी से उपलब्ध होती थीं और दूसरा इनसे कारगर ईलाज भी मुमकिन होता था। हकीम या वैद्य भी ऐसी औषधियां देते थे जो जड़ी-बूटियों पर ही आधारित हुआ करती थीं। इन जड़ी-बूटियों की विशेषता ये थी कि उनमें किसी भी प्रकार का कोई साईड इफेक्ट नहीं होता। परंतु हमने अपने लालच के चलते इन वनों का सफ़ाया करने में कोई भी कसर बाक़ी नहीं छोड़ी, नतीजा ये निकला की जंगल भी उजड़ गए और इन्हीं के साथ जड़ी-बूटियां भी नापैद हुईं।

मिट्टी खोराकी पैदावार के लिए एक अहम किरदार अदा करती है। लिहाज़ा जितने अच्छे मेयार की मिट्टी होगी उतनी ही पैदावार भी अच्छी होगी, अच्छी फ़सल होगी तो खाने के लिए भी अच्छी ग़िज़ा मिलेगी। ख़राब मिट्टी से ना ही अच्छे पैदावार की तवक़्क़ो की जा सकती है और ना ही पर्यावरण पर इस का अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। मिट्टी पौष्टिक होनी चाहिये तभी तो ये अच्छी पैदावार कर सकती है। मिट्टी पौष्टिक हो तो पौधे भी उग कर आएँगे। मिट्टी अगर पौष्टिक हो तो जानवरों के लिए भी मुफ़ीद साबित होगी। यहां ये उल्लेख करना ज़रूरी है कि मिट्टी की क्वालिटी में कमी की वजह इस में ऑर्गेनिक पदार्थ का नुकसान होना है। मिट्टी के इन्हितात के कारण हयातयाती रंगा-बिरंगी भी मुतास्सिर होती है। ''यू एन के मुताबिक़ कुर्रा-ए-अर्ज़ पर फ़ी सैकण्ड एक एकड़ ज़मीन का नुक्सान होता है इस के नतीजे में रफ्ता-रफ्ता ज़ेर काशत आने वाला रकबा कम होता जाएगा और जब ये रकबा कम हो जाएगा तो साफ़ ज़ाहिर है ख़ुराकी पैदावार भी कम होगी। ख़ुराकी पैदावार में कमी की जोह से लोग क़हत का शिकार हो सकते हैं। इसके कारण आर्थिक संकट से भी दो-चार होना पड़ सकता है। ज़रूरत है ज़मीन के संरक्षण की और इसमें Organic पदार्थ का होना क्योंकि धरती में तापमान के कारण लगातार हो रही विश्वव्यापी बढ़ोतरी को देखते हुए फ़ौरी इक़दाम करने की अत्यंत आवश्यकता है।

साईंस और पर्यावरण से मुताल्लिक़ मर्कज़ की तरफ़ से जारी किए गए 2022 के ''भारतीय पर्यावरण की स्थिती'' से संबंधित रिपोर्ट में ये भी कहा गया है कि ''भारत के जुग़राफ़ियाई रकबे का क़रीब 30 फ़ीसद हिस्से में गुणवत्ता का ह्रास हुआ है। रिपोर्ट में मज़ीद ये कहा गया है कि इसका मतलब है कि ज़मीन की उत्पादकता में कमी होना। जलवायु परिवर्तन और इंसानी लापरवाही के कारण भी ज़मीनी ख़राबी उत्पन्न हुई। आलमी हरारत और प्रदूषण के कारण ज़मीन पर काफ़ी नकारात्मक असर पड़ा है। एटमोसफ़ेयर यानि कर्राए हवा में ओज़ोन लेयर सूर्य से ताबकारी के एक हिस्से को ज्ज़ब कर लेता है और ये इसे कुर्रा-ए-अर्ज़ की सतह तक पहुंचने से रोक लेता है। ये परत सूर्य से आने वाली अल्ट्रावायलेट रेज़ रोक लेती हैं। इन रेज़ के नतीजे में हानिकारक असरात पड़ सकते हैं। ओज़ोन की मज़बूत परत ज़मीन पर ज़िंदगी की हिफ़ाज़त करती है। ओज़ोन लेयर, जो हमारी ज़मीन और ज़िंदगी की हिफ़ाज़त के लिए इंतिहाई अहमियत रखता है को सुरक्षित रखा जा सकता है। बशर्ते कि हम ग्रीन हाऊस गैसेज़ के इख़राज को रोकें। ये ओज़ोन लेयर के लिए हानिकारक साबित होती हैं इन गैसेज़ में सबसे ख़तरनाक क्लोरो फ्लोरो कार्बनस होती हैं।

ये ग्रीन हाऊस गैसेज़ कुर्रा-ए-अर्ज़ को गर्म करती हैं। गर्मी के नतीजे में हर शोबा असर-अंदाज़ होता है और आब-ओ-हवा की तबदीली वाक्य होती है। प्रदूषण को कम कर के ओज़ोन परत को महफ़ूज़ रखा जा सकता है। पर्यावरण के अनुकूल मसनूआत, जिनमें मुक़ामी मसनूआत शामिल हैं इस्तिमाल कर के हम ओज़ोन लेयर की हिफ़ाज़त यक़ीनी बना सकते हैं। एयर कंडीशनरस की मुनासिब देख-भाल के चलते भी इस परत को सुरक्षित रखा जा सकता है क्योंकि इन एयर कंडीशनरस की ख़राबी के कारण क्लोरो-फ़्लोरो कार्बन गैसेज़ का इख़राज होता है और ये वातावरण को दूषित करती हैं। क़ुदरत ही आख़िर-ए-कार इस पृथ्वी की पालनहार है मगर इंसान का बड़ा योगदान है इस की हिफ़ाज़त और देख-रेख में। ग्लोबल वारमिंग, प्रदूषण, आब-ओ-हवा की तबदीली, पानी की समस्या, सागरों का विस्तार, बाढ़, जंगलों में आग, ख़ुशकसाली जैसी समस्याओं से आज पूरा संसार जूझ रहा है। आलमी हरारत एक बहुत बड़ी समस्या है। फ़ासिल फ़्यूलस के जलने से वातावरण में जो दर्जा हरारत बढ़ता है वो ग्लोबल वारमिंग को जन्म देता है और इसी आलमी तपिश के नतीजे क्लाइमेट चेंज रौनुमा होती है। उद्योगों से निकलने वाली हानिकारक गैस भी वातावरण को मुतास्सिर करती है। यह बात फिर से दोहराई जाती है कि ग्लोबल वार्मिंग पृथ्वी पर ज़िंदगी को संगीन तरीन ख़तरा लाहक़ करती है। ये

पृथ्वी इतनी गर्म हो जाती है जहां कई सारी प्रजातियां इस गर्मी को सहन नहीं कर पाती हैं। इस भू-मंडलीय उष्मीकरण के कारण अन्न उत्पादन के स्रोतों में कमी आ जाती है। इतना ही नहीं पानी के स्रोत भी इस तापमान से असर-अंदाज़ होते हैं । जिसके नतीजे में ख़ुशकसाली वाक्य होती है। जलवायु परिवर्तन पृथ्वी पर हैवानात और नबातात आदि के लिए एक क़हर से कम नहीं। ग्लोबल वार्मिंग जैव-विविधता के नाश का सबब बन सकती हैं। इंसानों पर भी इसका ज़बरदस्त असर पड़ रहा है। हिमनद (ग्लेशियर) पृथ्वी पर ज़िंदगी के लिए एक नेमत से कम नहीं। ये ग्लेशियर पृथ्वी पर मानव जाति के लिए पानी के बहुमूल्य जख़ीरे हैं। इनसे हमें ताजा पानी मिलता है। पृथ्वी पर 97 प्रतिशत खारा पानी है और सिर्फ 3 प्रतिशत ही ताज़ा पानी है। इस में दो तिहाई से थोड़ा ज्यादा ग्लेशियरों में मुंजमिद है। इसी से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि ये ग्लेशियर पृथ्वी पर जीवन के लिए कितने ज़रूरी हैं। यदि यही ग्लेशियर पूरी तरह से पिघल जाऐंगे तो नतीजा कितना भयंकर हो सकता है? ये भी एक सत्य है कि ये ग्लेशियर धीरे-धीरे ग़ायब हो रहे हैं। इस की ज़िम्मेदारी कौन लेगा? जवाब वाज़िह है। ये ना सिर्फ सरकार और मुताल्लिक़ा एजेंसियों की ही ज़िम्मेदारी है बल्कि ये हर शहरी का फ़र्ज़ है कि वो भी इस ज़िम्मेदारी को अपने काँधों पर लें। ये एक इजतिमाई फ़र्ज़ है और इस काम में हम सबने हाथ बटाना है। वक्त पर क़दम ना उठा कर, कल हमें ही पानी की एक-एक बूँद के लिए तरसना पड़ सकता है। क्योंकि जिस रफ्तार से यह क़ुदरती नेमत (ग्लेशियर) नापैद हो रहे हैं इस को देखते हुए ये अनुमान लगाना कोई मुश्किल काम नहीं है कि ग्लेशियर और ज़्यादा वक्त के लिए इस पृथ्वी पर क़ियाम नहीं कर पाएँगे। आज हम जिस ख़ुशक साली, सैलाबों, तूफ़ान, शदीद गर्मी, पिघलने वाले ग्लेशियरों, बढ़ती हुई समुद्री सतह से दो-चार हो रहे हैं इस का कारण है जलवायु परिवर्तन।

सागर गर्म हो रहे हैं और उनकी सतह बढ़ रही है। जलवायु परिवर्तन के नतीजे में इंसानों और जानवरों की ज़िंदगी प्रभावित होने के साथ-साथ दूसरी प्रजातियों पर गहरा असर पड़ सकता है। विकास एक अपरिहार्य प्रक्रिया है। वक्त के साथ-साथ नए घटनाक्रम होते हैं। नए-नए आविष्कार और नई-नई खोज पृथ्वी पर प्रगति की गति में बढ़ोतरी करती हैं। कारख़ानों, इंडस्ट्रीज,फैक्ट्रियों, इमारतों, बिजली-घरों इत्यादि के फैलाव से जहां उत्पाद में बढ़ोतरी होती है वहीं उनसे उत्सर्जन होने वाला प्रदूषण एटमोसफ़ेयर को दूषित करता है। थर्मल पावर प्लांटों से काफ़ी मात्रा में गैस बाहर निकलती हैं जो माहौल के लिए ज़र्र रसां साबित होती हैं। लोकल इंडस्ट्रीज़ से डिस्चार्ज होने वाला पदार्थ भी स्थानीय जल मार्ग में प्रवेश कर जाता है। जिसके कारण जल-प्रदूषण उत्पन्न होता है। वायू-प्रदूषण भी एक बहुत बड़ा मसला है। एयरलाइन्स के कारण जहां ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण बढ़ता है वहीं उनके कारण कार्बन डाईऑक्साइड और दूसरी गैस वातावरण को खराब करती हैं इस तरह से कार्बन, प्रदूषण का एक बहुत बड़ा मसला है। जिसको कम करने की बहुत आवश्यकता है।

जलवायु की तबदीली के ज़र्र रसां प्रभाव को टालने के लिए ज़रूरी है वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में भारी मात्रा में कमी करना। कार्बन डाईऑक्साइड प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारण है और यही प्रदूषण जलवायु परिवर्तन का कारण बनता है। जैव-विविधता हमारे पर्यावरण का संतुलन बरक़रार रखने के साथ-साथ हमारे खुराकी संसाधनों की भी सुरक्षा सुनिश्चित करती है। इस विविधता किसी भी कीमत पर स्थिर रखना भी सभी की जिम्मेदारी है। ये जैव-विविधता हमारे लिए कई प्रकार के भोजन का स्रोत भी सुनिश्चित करती है। प्रकृति जो भी हमें देती है वो जैव-विविधता पर निर्भर करता है। प्रकृति हमें क्या कुछ प्रदान नहीं करती। बस ये सिर्फ एक मनुष्य का कर्तव्य है कि वो प्रकृति की इस बगिया में जैव-विविधता को सजाये रखने में कोई लापरवाही ना बरते। प्रकृति की गोद में अनगिनत स्पिसिज़ पलती हैं। पर्यावरण की दृष्टि से काफ़ी लाभकारी हैं। इन स्पिसिज़ की सुरक्षा, अपने पर्यावरण की सुरक्षा है। पर्यावरण सुरक्षित रहे तो इस का मानव जीवन पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। जलवायु परिवर्तन के मुद्दे ने अब एक शदीद सूरत-ए-हाल इख़तियार कर ली है। दस पंद्रह साल पहले इस मुद्दे ने इतनी शिद्दत इख़तियार नहीं की थी जितनी की अब ये समस्या संगीन हो गई है। इस संकट को देखते हुए विशेषज्ञ और दूसरे ताल्लुक़ दार अब मुस्तैदी से काम करने में मसरूफ़ नज़र आ रहे है। इसी के साथ-साथ सख्तगर्मी, सूखा और तूफ़ान भी इंतिहाई सूरत इख़तियार करने लगे हैं। जलवायु परिर्वतन कहें या वैश्विक तापमान कहें इस समस्या ने तो हर एक को सोचने पर मजबूर किया है। क्योंकि इसका सीधा संबंध अब हमारे अस्तित्व के साथ है। पर्यावरण सुरक्षा और जलवायु कार्यवाही को लेकर बुनियादी सतह से इक़दाम करने की आवश्यकता है। जलवायु

परिवर्तन और वैश्विक तापमान के संबंध में बेदारी पैदा करने के लिए विद्यालयों, शिक्षा-संस्थाओं और दूसरे रिसर्च सेन्टरों आदि की तरफ से एक अहम किरदार अदा किया जा सकता है। किसान भाइयों में कृषि से मुताल्लिक़ बेदारियाँ पैदा कर के एक बहुत बड़ा काम अंजाम दिया जा सकता है क्योंकि वातावरण के अनुकूल खेती एक अच्छे पर्यावरण की ज़ामिन बन सकती है। समय पर छोटे-छोटे ही सही क़दम उठा कर जागरूकता पैदा कर के जलवायु परिवर्तन के मसले से निपटने में किसी हद तक मदद मिल सकती है और आगे चल कर यही पैहम छोटे क़दम बड़े कदमों में तब्दील हो सकते हैं और एक ऐसा समय भी आ सकता है जब हम गर्व से कह सकेंगे कि जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमान का ख़तरा टलने की पूरी संभावना दिख रही है। जंगलों को फिर से आबाद करना होगा। जंगी पैमाने पर पेड़ लगाने के काम आरंम्भ करने होंगे। फ़ैक्ट्रियों, कारख़ानों, इंडस्ट्रीज आदि से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण को जितना संभव हो सके बहुत कम करना होगा। ठोस और अमली क़दम उठाने से ही प्रदूषण पर काफ़ी हद तक क़ाबू पाया जा सकता है। हम अपने खोए हुए को फिर से पुनर्जीवित कर सकते हैं। अक्षय उर्जा जलवायु परिवर्तन पर काफ़ी हद तक क़ाबू पा सकती है और वातावरण के लिए भी उपयुक्त है। इस के फ़ायदे भी हैं कि ये ऊर्जा समाप्त नहीं होती इस को उत्पन्न किया जा सकता है। ये ऊर्जा, प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा उत्पन्न की जा सकती है। सूर्य की रोशनी, बारिश, लहरों आदि जैसे प्राकृतिक संसाधनों से ये उर्जा हासिल की जा सकती है। भारत जैसे बड़े देश में यदि जीवाश्म ईंधन (Fossil Fuel) को कम किया जा सकता है परन्तु उसे समाप्त भी नहीं किया जा सकता है। भारत के पर्यावरण मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव ने कहा है कि "भारत अक्षय ऊर्जा की ओर बढ़ रहा है। हमने 175 गीगा वाट अक्षय ऊर्जा हासिल करने का लक्ष्य रखा था। जिसमें से 150 गीगा वाट अक्षय ऊर्जा पहले ही प्राप्त की गई है। हम कोयला चरणों में ख़त्म नहीं करेंगे बल्कि हम चरणबद्ध तरीक़े से कम करेंगे और अक्षय ऊर्जा की ओर बढ़ेंगे।" जो कुछ भी इस पृथ्वी पर है यह तो प्रकृति का ही अंश है पृथ्वी के ये सभी जीव प्रकृति का ही एक अंग हैं। इस तरह ये प्रकृति हमारी ज़िंदगी के साथ क़रीबी तौर पर जुड़ी हुई है। इस पृथ्वी पर ये पेड़-पौधे जहां पर्यावरण की शान हैं, वहीं इन अनगिनत पेड़-पौधों की अलग-अलग प्रकार की भीनी-भीनी ख़ुशबू हमारे पर्यावरण और प्रकृति को सुगंधित कर देती है। बेशुमार फूलों की बेशुमार भीनी-भीनी सुगंध ताजगी,आनंद, उल्लास प्रदान करती है। हकीकत यह है कि अगर हम अपनी पृथ्वी को हर लिहाज़ से सेहतमंद और तंदरुस्त रखेंगे। हम ख़ुद भी सेहतमंद और तंदरुस्त रहेंगे इस में कोई शक नहीं। इस धरती पर जो भी ईश्वर की रचना है उस की अपनी अहम विशेषता और अपनी पहचान है। प्रकृति की इन रचनाओं में अपनी-अपनी अज़मत का राज़ छिपा है। किसी भी वस्तु का यूँ ही निर्माण नहीं हुआ है। सूक्ष्म जीव (Microbes) तक अपने कर्तव्य का पालन करते हैं और इस पृथ्वी के चलने में एक अहम भूमिका अदा करते हैं। ये मिट्टी को उपजाऊ और उत्पादक बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये Microbes मानव हित में भी महत्वपूर्ण किरदार निभाते हैं। कौन-सी ऐसी चीज़ है जो इस पृथ्वी पर अहमियत ना रखती हो और जो मानव अस्तित्व के लिए सीधे तौर पर या परोक्ष रूप से ज़रूरी ना हो। प्रसिद्ध अध्यात्मिक गुरु सदगुरू जग्गी वासुदेव ने मृदा संरक्षण के लिए क़ानून की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभियान प्रारंभ किया जिसका नाम 'SAVE SOIL' अभियान है। इस मृदा बचाओ आंदोलन का मकसद मृदा स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता पैदा करना है, ताकि पृथ्वी पर मरूस्थल और उसकी गुणवत्ता में आने वाले गिरावट को रोका जा सके। साथ ही इस अभियान का उद्देश्य पर्यावरण के बारे में जागरुकता पैदा करना है। सद्‌गुरू का कहना है ''आप सोयल को एक साधन की दृष्टि से देखते हैं। मगर मैं सोयल को ज़िंदगी के एक साधन की दृष्टि से देखता हूँ। ज़िंदगी के एक साधन के तौर पर इसे ज़िंदा रखना चाहिए क्योंकि ये हमारे अस्तित्व की बुनियाद है।'' ''FLAME'' विश्वविद्यालय में दर्शन एवम् धार्मिक अध्ययन के प्रोफेसर श्री पंकज जैन का कहना है "भारतीय जलवायु आचार शास्त्र, ऊर्जा जरूरतों का समाधान कर सकता है। आप कहते हैं कि पंच तत्व शून्य, वायु, अग्नि, जल, एवम् मिट्टी एक दूसरे से जुड़े हैं और हमें अक्षय ऊर्जा के साधन प्रदान करते हैं जो पृथ्वी पर जीवन जाल को निरंतर मदद कर सकते हैं।"

जैव-विविधता (Biodiversity) हमारे पर्यावरण को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण किरदार निभा सकती है। बशर्ते कि इस विविधता को हर लिहाज़ से बरक़रार रखा जाये। ये जैव-विविधता प्रकृति की सुंदरता में ना सिर्फ इज़ाफ़ा कर सकती है बल्कि जलवायु परिवर्तन का मुक़ाबला करने में भी सहायक सिद्ध हो सकती है और इससे पशु-पक्षियों को भी संरक्षण प्राप्त होगा। इससे प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है। आद्रभूमी

(Wetland) भी जैव-विविधता को बनाए रख सकती है और ज्यादा से ज्यादा पक्षियों को भी आकर्षित कर सकती है। इनमें जलीय पौधों को पनपने का मौक़ा मिलेगा। जैव-विविधता पार्कों में पक्षी भी पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं। ज्यादा से ज्यादा ऐसे पार्कों का निर्माण होना चाहिये, ताकि वहां जाने वाले लोगों में एक नई ऊर्जा उत्पन्न हो और तनाव गायब हो जाये इससे सकारात्मक सोच पैदा होगी और एक नया संकल्प जन्म लेगा। यदि रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ यूँ ही सजती रहेंगी, पेड़ उगते रहेंगे और पर्यावरण एवं प्रकृति से मुताल्लिक़ हमारे व्यवहार में ज़रा सी भी मुसबत तबदीली आए अपने पर्यावरण के बारे में संजीदगी के साथ इक़दाम करें तो जलवायु परिवर्तन की समस्या का हम बहुत हद तक समाधान कर सकते हैं क्योंकि प्रकृति हमारे अस्तित्व को बनाए रखने में एक बहुत बड़ा कारनामा अंजाम देती है। प्रकृति ही हमें दाइमी ख़ुशी फ़राहम कर सकती है, क्योंकि उस के हर कण में एक सकारात्मक ऊर्जा भरी पड़ी है। प्रकृति कभी भी एक इंसान पर संकट नहीं लाती जब तक कि इसे छेड़ा ना जाये। इस बात में कोई संदेह नहीं कि क़ुदरत ने हमें Biodiversity से माला-माल किया है। यही वो देश है जहां इस रंगा-बिरंगे के खज़ाने ही खज़ाने हैं। इस Biodiversity में हर एक जीव का किरदार है चाहे उस की ख़ासियत कैसी भी हो। वो अपना काम बकायदगी और पैहम करता है। कार्बन उत्सर्जन पर लगाम लगाने से शहरकारी को अपनी सीमाओं में रखने से, वनों की बे-तहाशा कटाई को रोकने से और ज़मीन को बंजरों और वीरानों में तब्दील होने से बचाने के उपायों से पृथ्वी, पानी, प्रकृति और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में काफ़ी हद तक मदद मिल सकती है।

पानी को अमृत भी कहते हैं और आब-ए-हयात भी। ये ज़िंदगी का अस्तित्व ही नहीं है बल्कि इसके बग़ैर ज़िंदा रहना नामुमकिन है। हमारा शरीर देखा जाये तो पानी ही है। हमारे शरीर में लगभग 60 प्रतिशत जल ही है और हमारे दिमाग़, दिल, फेफड़े, चमड़ी और गुर्दे में काफी मात्रा में पानी होता है। तनाव दूर करने में पानी का एक बड़ा किरदार है। अपने आपको Hydrate रखना निहायत ही मुफ़ीद है। सोचिए हम यदि इस पानी से महरूम रहें तो क्या ज़िंदगी आगे बढ़ सकती है? पानी को बचाना है अपने भविष्य को सुरक्षित करना है यही हमारा संकल्प होना चाहिए। क़ुदरत की इस नेमत की अगर हम आज क़दर करेंगे तो हमारा आने वाला कल सुरक्षित होगा। पानी का एक-एक क़तरा सागर बना सकता है इसीलिए इसका मुनासिब और सोच-समझ कर इस्तेमाल करना होगा। पानी ना मिलने के कारण आज कितनी ज़मीन ग़ैर आबाद है। बारिश के पानी को Rain Harvest प्रणाली से स्टोर किया जा सकता है ताकि ये वक्त पर काम आ सके। हर साल 22 मार्च को पानी का आलमी दिन मनाया जाता है। इस का उद्देश्य ही यही है कि इस के तहफ़्फ़ुज़ से मुताल्लिक़ बेदारी पैदा की जा सके। ग्रीन हाऊस गैसेज़ ख़ारिज होने के कारण सारी जलवायु व्यवस्था ही बदल जाती है। इन गैसेज़ के कारण आलमी हरारत बढ़ती ही चली जा रही है। हीट वेवज़ से ज़मीनी सतह ज़्यादा तेज़ी से ख़ुशक हो जाती है और इस सोयल में नमी धीरे-धीरे कम होती जाती है। ज़र-ए-ज़मीन पानी के वसीले भी सूख जाते हैं। मैं फिर से ये दोहराना चाहता हूँ कि जागरूकता ही इन समस्याओं का हल तलाश कर सकती है। प्रकृति लचकदार है। ये फिर से उभर सकती है इस में उभरने की शक्ति है। यदि हम नेचर के मुताबिक़ क़दम उठाएं तो हम हालात को जरुर बदल सकते हैं। अगर वक्त पर क़दम ना उठाएं जाएं तो जलवायु परिवर्तन के कारण हमारे कृषि उत्पादन पर भी गहरा असर पड़ेगा। इतना ही नहीं फसलों की पौष्टिकता भी मुतास्सिर होगी। इस ज़िमन में जहां हमने नई राहें इख़तियार करनी होंगी वहीं अपनी प्राचीन धरोहर को भी ध्यान में रखना होगा क्योंकि हमारे पास पहले से ही मौजूद मुफीद और कारगर समाधान को बरुएकार लाकर नए रास्ते खोजे जा सकते हैं। अपनी पृथ्वी पर्यावरण और प्रकृति को सुरक्षित रखने और इस की पुरानी शान फिर से बहाल करने के लिए अनिवार्य अमली क़दम उठाने के साथ-साथ हर सतह पर संजीदगी के साथ Proactively काम करना होगा। विश्व पर्यावरण दिवस से एक दिन पहले तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद ने औद्योगिक क्षेत्र के प्रतिनिधियों से अपील की कि वो कार्बन उत्सर्जन में कमी करने में सरकार की मदद करें। राष्ट्रपति ने कानपुर में मर्चेन्ट्स चैंबर आफ़ उत्तरप्रदेश के 90 साल पूरे होने के कार्यक्रम में संबोधन किया और कहा ‘’कानपुर प्राचीन काल से ही उद्योग व्यापार का प्रमुख केंद्र रहा है,लेकिन यही औद्योगिक विकास कानपुर और गंगा के प्रदूषण का प्रमुख कारण बन गया। उन्होंने कहा कि सरकार “नमामी गंगे प्रोजेक्ट” के तहत गंगा को साफ़ करने का प्रयास कर रही है। राष्ट्रपति ने कहा कि “आज जलवायु परिवर्तन एक विकराल समस्या के रुप में हमारे सामने है अगर इस चुनौती से निपटने के प्रयास हम अभी से नहीं करेंगे तो वर्तमान के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियां

भी अनेक कठिनाइयों का सामना करेंगी।"

तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने भी विश्व पर्यावरण दिवस पर लोगों को ताकीद की कि वो प्रकृति के साथ फिर से जुड़ें और इसे हुए नुकसान को उलटने के लिए कोशिशें करें। उन्होंने कहा कि इस साल का विषय ''सिर्फ एक पृथ्वी'' लोगों को याद दिलाता है कि ये ग्रह हमारा एक मात्र घर है और हमें दोनों वर्तमान और भावी पीढ़ियों के कल्याण के लिए प्रकृति के साथ सदभावना से रहना चाहिए।'' जलवायु परिवर्तन का मुक़ाबला करने के लिए जो प्रयास भारत ने अब तक किए हैं, दुनिया इन प्रयासों की सराहना कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल ''ग्लास्गो संयुक्त राष्ट्र संघ की cop(Conference of parties) 26 के दौरान LIFE'' लाईफ़ का तसव्वुर पेश किया था। इस तसव्वुर का मक़सद पर्यावरण जागरूक जीवन शैली को बढ़ावा देना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसी साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर पर्यावरण के लिए जीवन शैली ''LIFE'' आंदोलन वर्चुअली लॉन्च किया। विश्व पर्यावरण दिवस का उद्देश्य प्रकृति और पृथ्वी की रक्षा करने के लिए पर्यावरण से संबंधित ठोस कार्रवाई करने के लिए विश्व सतह पर बेदारी पैदा करना है इस साल का विषय है (सिर्फ एक पृथ्वी)। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नई दिल्ली में Save Soil movement पर एक कार्यक्रम में संबोधन करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अगरचे जलवायु परिवर्तन में देश की भूमिका ना के बराबर है फिर भी पर्यावरण की हिफ़ाज़त के लिए भारत के प्रयास बहुमुखी रहे हैं। इस वर्ष 5 जून को आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि विकसित पश्चिमी देश पृथ्वी पर ना सिर्फ ज्यादा से ज्यादा संसाधनों का दोहन करते हैं बल्कि सबसे बड़ी मात्रा में कार्बन उत्सर्जन के ज़िम्मेदार हैं। उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन, नमामी गंगे और वन सन, वन ग्रिड समेत कई सरकारी योजनाएं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को आम जनता तक पहुंचा रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने मिट्टी को बचाने के लिए 5 प्रमुख बातों पर फ़ोकस किया है। पहला मिट्टी को कैमीकल फ्री कैसे बनाएँ, दूसरा मिट्टी में जो जीव रहते हैं उन्हें कैसे बचाएं, तीसरा मिट्टी की नमी को कैसे बनाएँ रखें। चौथा भू-जल कम होने की वजह से मिट्टी को जो नुकसान हो रहा है उसे कैसे दूर करें और पांचवां वनों का दायरा कम होने से मिट्टी का जो लगातार क्षरण हो रहा है उसे कैसे रोकें। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर देश को Single Use Plastic से मुक्त करने के लिए पूरे देश में रियासतों और केंद्र शासित प्रदेशों और शहरी स्थानीय निकायों की तरफ़ से अभियान शुरू किया गया है। ये अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मई महीने की 'मन की बात' के बाद शुरू किया गया। इस में उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया था कि वो एक साथ हो जाएं और विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्वच्छता और वृक्षारोपण के लिए प्रयास करें। आवास और शहरी मुआमलों के मंत्रालय ने भी विश्व पर्यावरण दिवस के मौक़े पर स्वच्छ और हरित अभियान शुरू किया। ऐसे ही अभियान, जागरुकता मिशन, बेदारी मुहिमें और अमली इक़दाम यक़ीनी तौर पर अपना असर दिखाएँगे। सिर्फ दृढ़ संकल्प, लगातार क्रिया करते रहने से और सकारात्मक सोच से हम इस खोई हुई शान को फिर से बहाल करने में ज़रूर कामयाब होंगे जो शान हमारी पृथ्वी, पानी, प्रकृति और पर्यावरण को चार चांद लगाया करती थी। अपनी प्रकृति के साथ खिलवाड़ करके हमने अपने ही साथ खिलवाड़ किया है। ज़माना भी तरक्की कर रहा है और लोग भी तरक्की की इस दौड़ में शामिल है। कई तो मंगल ग्रह पर अपने नए Home Address की तैयारी में लगे हैं। ये अच्छी बात है मगर जब तक वहां इंसानी बस्तियां क़ायम होंगी तब तक तो अपनी इसी पृथ्वी को फिर से स्वर्ग बनाएँ क्योंकि ये काम हमारे ही हाथ में है। अभी बहुत देर नहीं हुई है। छोटे-छोटे क़दम ही सही मगर उठाएं तो सही। यक़ीनन हम अपनी धरा को फिर से हरी-भरी और सरसब्ज़-ओ-शादाब देख पाएँगे। हिमालय भी यहीं आसमान से बातें करता है तो गंगा भी यहीं अमृत पान कराती है। प्राकृतिक सौंदर्य की जीती-जागती तस्वीर ''कश्मीर'' का जमाल भी यहीं हैं। अध्यात्मिक संतोष का विश्व केंद्र भी यहीं है। गुनगुनाते हुए चश्मे भी यहीं हैं। गीत गाती हुई बहारें भी यहीं हैं। हर तरफ़ रंग-बिरंगे फूलों की खुशबुओं का डेरा भी यहीं है और मेरे महान भारत की पाक मिट्टी की महक भी यहीं है। धरती अपना सब्र कभी खोती नहीं। प्रकृति हर परिस्थिति से जूझना जानती है। पानी कभी प्यासा नहीं रखता और पर्यावरण हर मुश्किल समय में अपना संतुलन क़ायम रखना जानता है। तो फिर चूक कहाँ है? इस पर गम्भीरता एवं नेक नीयत से विचार करके व्यावहारिक कदम उठाने होंगे।

****

गौरव पटवाल, पोर्ट ब्लेयर

डिजिटल इंडिया

अंडमान निकोबार में डिजिटल इंडिया के सपने को साकार किया जा रहा है। द्वीपसमूह मे शासन-प्रशासन से लेकर आम जनता तक हर कोई डिजिटल सेवाओं का लाभ उठा रहे है। एक ओर जहां प्रशासन ने कई नागरिक सेवाओं को डिजिटल कर दिया है, तो दूसरी ओर लोग भी अपने रोजमर्रा के कार्य ऑनलाइन ही निपटा रहे हैं।

अगस्त दो हजार बीस में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चेन्नई-पोर्ट ब्लेयर के बीच समुद्र के भीतर बारह सौ किमी. लम्बी ऑप्टिकल फाइबर परियोजना का शुभारम्भ किया था, जिससे द्वीपों में धीमे इंटरनेट के युग का अंत हुआ और बेहतर कनेक्टिविटी मिलने के साथ ही आज अंडमान निकोबार डिजिटल इंडिया के राह पर आगे बढ़ रहा है। बेहतर कनेक्टिविटी मिलने से लोगों के बीच इंटरनेट सेवाओं का प्रचलन बढ़ने लगा। आज व्हाट्सप्प और फेसबुक जैसे प्लेटफार्म दैनिक संवाद के जरिये बन चुके हैं। इसी क्रम में डिजिटल पेमेंट्स ने एक नई नज़ीर पेश की है। आज पोर्ट ब्लेयर में लोग भीम-यूपीआई और अन्य ई-भुगतान ऐप का इस्तेमाल कर लेन-देन कर रहे हैं। दुकानदारों और होटल मालिकों ने भी इन एप्स को दिल खोलकर अपनाया है। आज शहर की छोटी-बड़ी दुकानों पर ई-भुगतान करने की सुविधा मिल जाएगी, जो आज से कुछ समय पहले प्रचलन मे नहीं था।

पोर्ट ब्लेयर, स्वराज द्वीप आदि स्थानों पर हजारों पर्यटक रोज दस्तक देते हैं, हर रोज ई-भुगतान के जरिये लाखों का कारोबार चल रहा है। इससे नकदी रहित लेन-देन के साथ ही फॉर्मल इकॉनोमी को भी बल मिला है।

वक्त के साथ नागरिक सेवाओं को भी घर तक पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। घर बैठे बिजली के बिलों की अदायगी के लिए ऊर्जा पे नामक पोर्टल बनाया गया है। इस पोर्टल के माध्यम से लोग कतारों में खड़े हुए बिना अपने बिजली के बिलों का आसानी से भुगतान कर सकते हैं। अभी हाल ही में परिवहन विभाग ने भी ए. टी. आर. एक्सप्रेस बसों के टिकट बुक करने के लिए ऑनलाइन पोर्टल की शुरुआत की है। एन. आई. सी उत्तराखण्ड के सहयोग से इस पोर्टल को विकसित किया गया है। इसके अलावा ड्राइविंग लाइसेंस टेस्ट के लिए स्लॉट बुक करने, वाहनों के पंजीकरण तथा नवीनीकरण शुल्क अदा करने के लिए भी विभाग की सेवाओं को वाहन पोर्टल से जोड़ा गया है। नगरपालिका परिषद में भी विभिन्न करों का भुगतान ऑनलाइन किया जा सकता है तथा ज़िला स्तर पर भी राजस्व से जुड़ी कई सेवाओं को ऑनलाइन किया गया है। प्रशासन के विभिन्न विभागों की वेबसाइट को बनाने और रखरखाव के लिए सोसाइटी फॉर प्रमोशन ऑफ वोकेशनल एंड टेक्निकल एजुकेशन-सॉवटैक का गठन किया गया है, जिसकी आम सभा के अध्यक्ष उप-राज्यपाल है और मुख्य सचिव को कार्यकारी परिषद का अध्यक्ष बनाया गया है। यह द्वीपसमूह में सूचना प्रौद्योगिकी परियोजनाओं को अमल में लाने के लिए एक राज्य एजेंसी के रूप में काम करती है।

सोशल मीडिया के प्रभाव और पहुंच को देखते हुए प्रशासन द्वारा अब सूचनाओं के प्रवाह को सुचारू बनाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। कई विभाग वेबसाइट के अलावा ट्विटर और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म का इस्तेमाल कर जन-उपयोगी सूचनाओं का आदान-प्रदान कर रहे हैं। आज ट्विटर खबरों का एक अहम स्रोत बन गया है। वेबसाइट के अलावा विभागों के ट्वीटर हैंडल्स पर फॉलोवर्स की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। आकाशवाणी समाचार पोर्ट ब्लयेर के फॉलोवर्स की संख्या भी 11 हज़ार को पार कर चुकी है। ट्विटर और व्हाट्सप्प का प्रयोग कर लोगों तक रोज़ाना समाचार पहुचाये जा रहे हैं। कोरोना काल में गूगल मीट और यूट्यूब चैनल के

माध्यम से बच्चों को शिक्षित किया गया।

द्वीपसमूह के कई इलाके विशेष तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या पेश आ रही है। दूर-संचार विभाग ने ऐसे क्षेत्रों में सार्वभौम सेवा दायित्व निधि परियोजना के अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग -चार के आसपास कवरेज क्षेत्र से बाहर पचासी चिन्हित गांव में एक सौ अट्ठाईस टॉवर लगाए जाएंगे, ताकि इन क्षेत्रों में फोर-जी (4G) मोबाइल सेवा मिल सके। इस वित्त वर्ष में मध्योत्तर अण्डमान ज़िले में बेहतर कनेक्टिविटी के लिए लगभग तिरप्पन गांव को कवरेज के दायरे में लाने और अतिरिक्त चौंतीस टॉवर लगाने की योजना है। इसके साथ ही द्वीपसमूह के सभी सात खंडों और सत्तर ग्राम पंचायतों में ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी देने के लिए भारत नेट परियोजना का भी क्रियान्वयन किया जा रहा है। मध्योत्तर अंडमान ज़िले में मायाबंदर और रंगत विकास खंड तथा आठ ग्राम पंचायत क्षेत्रों में कार्य पूरा कर लिया गया है और शेष लक्ष्य को इस वर्ष जून तक पूरा कर लिया जाएगा। इसके अलावा द्वीपसमूह में भी पी. एम. वानी परियोजना के अंतर्गत जन-वाईफाई हॉट स्पॉट केन्द्र स्थापित कर इंटरनेट सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है। द्वीपसमूह में पिछले वर्ष दिसंबर में पी. एम. वानी परियोजना की शुरुआत की गई है, जिसके तहत पहला पब्लिक डेटा ऑफिस-पी. डी. ओ. चिड़ियाटापू में बनाया गया। आज कुल तीस पी. डी. ओ एवं जन-वाईफाई हॉट स्पॉट कार्य कर रहे हैं और भविष्य में इनके कई गुणा बढ़ने की उम्मीद है। आने वाले समय में द्वीपसमूह में दूर-संचार व्यवस्था के ढ़ांचे को और मजबूत बनाया जाएगा और शहर के साथ ही ग्रामीण इलाकों में भी कनेक्टिविटी बेहतर होगी। इससे लोगों को अधिक से अधिक सेवाएं घर बैठे ऑनलाइन प्राप्त होगीं और जीवन की कठिनाई कम होंगी।

****

'भाषा विश्वं योजयति' अर्थात भाषा विश्व को जोड़ती है। हमारी गौरवशाली संस्कृति व संस्कारों को तकनीक के इस दौर में विभिन्न माध्यमों से दुनिया के हर हिस्से में पहुंचाने में हिंदी का बड़ा योगदान रहा है।

आज़ादी के अमृतकाल में देश पंच प्राणों में शामिल, 'विरासत पर गर्व' और 'गुलामी की मानसिकता से मुक्ति' के भाव के साथ विकास के पथ पर अग्रसर है। हमारा देश अनेक भाषाओं व संस्कृतियों की जननी है और यह समृद्ध विरासत हमें सतत प्रेरणा देती है। इसी प्रकार, औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति के लिए आपसी संवाद और परस्पर समन्वय को सशक्त करने में अमृतकाल में भारतीय भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रहने वाली है।

-श्री नरेन्द्र मोदी

प्राकृतिक खेती में अग्रसर हिमाचल प्रदेश

संजीव सुन्द्रियाल, शिमला

हिमाचल प्रदेश जहां अपने नैसर्गिक सौंदर्य के लिए देश-विदेश में विख्यात है। वहीं राज्य प्राकृतिक खेती में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाता जा रहा है। प्राकृतिक खेती की ओर राज्य के तेजी से बढ़ते कदम की शुरुआत चार साल पहले कर दी गई थी। जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। राज्य के किसान खेती की लागत कम करने और आय के स्रोत बढ़ाने के लिए प्राकृतिक खेती को अपना रहे हैं और रसायनों के प्रयोग को हतोत्साहित कर रहे हैं।

वर्तमान राज्य सरकार ने कृषि-बागवानी में रसायनों के प्रयोग को कम करने के लिए इस योजना के तहत 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती'की विधि को अपनाया है। 25 करोड़ रुपये के वित्तीय प्रावधान के साथ शुरू की गई इस योजना ने किसानों व बागवानों के व्यापक कल्याण एवं समृद्धि के लिए खेती की लागत को कम करने, आय को बढ़ाने, मानव एवं पर्यावरण पर रासायनिक खेती के पड़ने वाले दुष्प्रभावों से बचाने एवं पर्यावरण व बदलते जलवायु परिवेश के समरूप कृषि का मार्ग प्रशस्त किया है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना'की निगरानी राज्य परियोजना कार्यान्वयन द्वारा की जा रही है। जिला स्तर पर आत्मा परियोजना द्वारा इस योजना को लागू किया जा रहा है। हिमाचल सरकार की ओर से चलाई गई यह पहली ऐसी योजना है जो तेजी से प्रदेश भर में सफल साबित हो रही है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस विधि से किसानों को प्रेरित करने एवं जोड़ने के लक्ष्य समय से पहले ही पूरे किए जा रहे हैं।

वर्तमान आंकड़ों के अनुसार प्रदेश भर की 3 हजार 590 पंचायतों में 1 लाख 74 हजार 394 किसान इस विधि का प्रशिक्षण ले चुके हैं। इनमें से 1 लाख 71 हजार 63 किसान 9,421 हैक्टेयर भूमि पर विविध फसलों एवं फलों की खेती इस विधि से कर रहे हैं।

प्राकृतिक खेती को लेकर राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई ने विभिन्न अध्ययन किए हैं जो इस विधि की प्रासंगिकता एवं व्यवहारिकता को इंगित करते हैं। ऐसे ही एक अध्ययन के अनुसार प्राकृतिक खेती अपनाने के बाद किसानों की खेती लागत जहां 46 प्रतिशत कम हुई है वहीं उनका शुद्ध लाभ 22 प्रतिशत तक बढ़ा है। सेब-बागवानी में बीमारियों के प्रकोप पर किए गए शोध में पाया गया कि प्राकृतिक खेती से सेब पर बीमारियों का प्रकोप अन्य तकनीकों की तुलना में कम रहा। प्राकृतिक खेती से जहां सेब के पौधों और पत्तियों पर स्कैब का प्रकोप क्रमशः 9.2 एवं 2.1 प्रतिशत रहा वहीं यह रासायनिक खेती में 14.2 एवं 9.2 प्रतिशत रहा। इसी तरह प्राकृतिक खेती बागीचों में आकस्मिक पतझड़ 12.2 रहा जबकि रासायनिक खेती वाले बागीचों में इस रोग का प्रकोप 18.4 प्रतिशत हुआ। प्राकृतिक खेती के नतीजों से प्रभावित होकर बागवान बड़ी संख्या में इस विधि की ओर आकर्षित हुए हैं।

लाहौल-स्पीति के शांशा गांव के किसान रामलाल ने बताया कि प्राकृतिक खेती से उनका सब्जी उत्पादन पहले से बेहतर हुआ है। पालमपुर में इस खेती का प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने गोभी, आइसबर्ग, ब्रोक्ली, मटर, आलू, टमाटर और राजमाश की खेती में प्राकृतिक विधि का प्रयोग किया। प्राकृतिक खेती से उन्हें सब्जियों के भार में बढ़ोतरी देखने को मिली। जहां पहले आइसबर्ग की चार पेटियों का भार 60 किलोग्राम होता था वहीं यह बढ़कर 70-75 किलो तक हो गया। साथ ही सब्जियों की ''शेल्फलाइफ''(Shelf life) और स्वाद भी पहले की तुलना में बढ़ा हुआ पाया गया। इस खेती के परिणामों से खुश होकर रामलाल लीज पर जमीन लेकर इस खेती का दायरा बढ़ा रहे हैं। पहले वह साल भर में 5 बीघा भूमि पर 17 हजार खर्च कर साढ़े 3 लाख कमाते थे। प्राकृतिक खेती से अब वह 1 हजार खर्च कर 4 लाख की आय कमा रहे हैं।

प्राकृतिक खेती से फल उत्पादन में भी अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं। शिमला जिले के चौपाल क्षेत्र के बागवान जीतराम इस बात की तसदीक करते हैं। 6 बीघा में प्राकृतिक खेती कर रहे जीतराम की आय पहले की अपेक्षा में दोगुनी से ज्यादा हो गई है। पहले वह 2 लाख कमा रहे थे जबकि अब उनकी आय साढ़े 4 लाख हो गई है। रासायनिक विधि से सेब-बागवानी में जहां पहले 70 हजार की खाद व कीट-फफूंद नाशकों का इस्तेमाल होता था अब उन्होंने उसे बंद कर दिया है। प्राकृतिक खेती अपनाने के बाद उनकी लागत 5 हजार रह गई है। जीतराम ने बताया कि पहले सेब की औसतन 150 पेटियां होती थीं, लेकिन अब वह 300 से ज्यादा पेटी सेब का उत्पादन कर रहे हैं।

कृषि और संबद्ध क्षेत्र राज्य के कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में 13.6 प्रतिशत योगदान करता है। यह क्षेत्र राज्य की 69 फीसदी आबादी को प्रत्यक्ष तौर पर रोजगार मुहैया करवाता है। हिमाचल सहित देशभर में किसानों की वर्तमान सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं है। उत्पादन और मूल्य प्राप्ति दोनों में अनिश्चितता की वजह से किसान उच्च लागत वाली कृषि के दुष्चक्र में फंस गया है। लगातार गिरता उत्पादन और बढ़ती बीमारियां कृषि क्षेत्र की जटिलताओं को और अधिक बढ़ा रही हैं। इस परिस्थिति से किसानों को निकालने और उनके दीर्घकालिक कल्याण हेतु हिमाचल सरकार ने वर्ष 2018 से प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना की शुरुआत की है। इस योजना के माध्यम से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' की अवधारणा को मूर्त रूप दिया जा रहा है।

खेती की इस अवधारणा के अनुसार फसल और पौधों के लिए आवश्यक सभी जरूरी और सूक्ष्म पोषक तत्व मिट्टी में ही मौजूद हैं। पौधे मिट्टी में मौजूद खनिजों से पोषक तत्व लेते हैं और इस कार्य के लिए मिट्टी में अरबों सूक्ष्म जीव हैं। लेकिन रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के निरंतर उपयोग से इन सूक्ष्मजीवों की संख्या कम हो गई है। इन सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ाकर इन्हें जीवंत करने की आश्यकता है। इसके लिए यह विधि भारतीय नस्ल की गायों के गोबर, मूत्र और स्थानीय पौधों पर आधारित विभिन्न आदानों के इस्तेमाल का अनुमोदन करती है। प्राकृतिक खेती के लिए सरकार किसानों को अनुदान दे रही है।

- प्राकृतिक खेती का आधार भारतीय नस्ल की गाय की खरीद पर 50 फीसदी अनुदान और 5 हजार रुपये यातायात शुल्क के तौर पर दिया जा रहा है।
- गौशाला के फर्श को पक्का कर गोमूत्र एकत्रीकरण के लिए गड्ढ़ा बनाने पर 8 हजार रुपये।
- आदान बनाने के लिए ड्रम लेने पर 2,250 रुपये।
- संसाधन भंडार खोलने के लिए 10,000 रुपये प्रति परिवार दिए जा रहे हैं।

युवाओं को खेती की तरफ मोड़ने और संपोषणीय खेती के लिए प्रेरित करने के लिए सरकार ने प्राकृतिक खेती प्रशिक्षु और प्राकृतिक खेती फैलो कार्यक्रमों की पहल भी की है। प्राकृतिक खेती प्रशिक्षु इस विधि में पारंगत किसान के पास रहकर उससे यह विधि सीख रहा है और वहीं पर खेतों में इसका प्रयोग कर रहा है। 6 महीने के इस कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती की बारीकियां सीखकर वह अन्य युवाओं को भी खेती की तरफ मोड़ने का काम करेगा। वर्तमान में 62 प्रशिक्षु प्रदेशभर में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण ले रहे हैं। यह कार्यक्रम आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में भी सहायक होगा।

इस योजना के तहत प्राकृतिक खेती आधारित सतत् खाद्य प्रणाली, राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई की ओर से भविष्य की मांग एवं मूल्य की श्रंखला को देखते हुए एक नवोन्वेषी सतत् खाद्य प्रणाली का निर्माण किया जा रहा है। यह प्रणाली किसान एवं उपभोक्ता के बीच परस्पर विश्वास को कायम रखते हुए पारदर्शिता एवं उचित मूल्य के सिद्धांत का भी पालन करेगी। जबकि नवोन्वेषी स्व प्रमाणीकरण प्रणाली-योजना के तहत दुनिया भर में मान्य राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करने वाली एक अनूठी स्व-प्रमाणीकरण प्रणाली तैयार की जा रही है जो किसान एवं उपभोक्ता के बीच पारदर्शिता एवं ट्रेसेबिलिटी सुनिश्चित करेगी। वहीं पारंपरिक प्राकृतिक खेती की सफलता को देखते हुए फसलों के बीज उत्पादन की भी मांग बढ़ी है। किसानों को उच्च गुणवत्ता का बीज सुनिश्चित करने के लिए राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई एक विस्तृत कार्ययोजना बनाकर काम कर रही है।

प्राकृतिक खेती उत्पाद की मार्केटिंग की समस्या को हल करने की दिशा में कार्य करते हुए राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई द्वारा प्राकृतिक खेती उत्पाद की अलग पहचान बनाने के लिए हिम प्राकृतिक नाम से ब्रांड बनाया गया है जिसके अधीन प्राकृतिक खेती उत्पाद बेचे जाएंगे। योजना के तहत प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों के लिए किसान उत्पाद कंपनियां बनाने का काम किया जा रहा है। किसानों का समूह बनाकर छोटे-छोटे किसान उत्पाद संघ बनाकर इन्हें तकनीक, विपणन, खाद्य प्रसंस्करण और आदान निर्माण के लिए सहायता करने के साथ इन कंपनियों को एक राज्य स्तरीय फेडरेशन के तहत लाया जा रहा है।

वहीं इस वर्ष के बजट में हिमाचल सरकार ने प्राकृतिक खेती योजना के तहत 50 हजार एकड़ भूमि को लाने का लक्ष्य रखा है। प्रदेश की सभी 3615 पंचायतों में प्राकृतिक खेती के मॉडल विकसित करने के साथ 100 गांवों को प्राकृतिक खेती गांव के रूप में परिवर्तित करने की दिशा में काम किया जा रहा है। इस साल योजना के अधीन 50 हजार प्राकृतिक खेती किसानों का प्रमाणीकरण किया जाना भी प्रस्तावित है। इसके लिए एक ऑनलाइन पोर्टल भी विकसित किया जा रहा है जिस पर किसानों का डेटा मौजूद रहेगा। प्राकृतिक खेती उत्पाद की बिक्री के लिए दिल्ली सहित प्रदेशभर में 10 बिक्री केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं।

किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम करते हुए राज्य सरकार ने प्रदेश भर में 10 नए प्राकृतिक खेती पर आधारित एफपीओ स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। हिमाचल प्रदेश के सभी 9 लाख 61 हजार किसानों को (सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि) से जोड़कर हिमाचल को प्राकृतिक खेती राज्य बनाने की दिशा में तेज गति से काम किया जा रहा है।

******

गीत रामायण : आकाशवाणी की कालजयी प्रस्तुति

सुनील डबीर

मर्यादा पुरुषोत्तम राम हमारे भारतीय समाज तथा संस्कृति का मूलाधार हैं। यद्यपि रामायण और महाभारत हमारे संस्कृति के विरद कोष है किंतु इनमें रामायण का सम्मान सामान्य लोगों में इसलिए अधिक है कि उसके नायक का जीवन चरित्र व्यक्ति और समाज के लिए जीवन मूल्य की दृष्टि से अनुकरणीय है। आदि कवि वाल्मीकि ने संपूर्ण रामकथा में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिपादित कर एक महान सांस्कृतिक आधार प्रतिष्ठित किया था और उसके बाद अनेक प्रकार से रामकथा का स्वरूप विकसित होता गया। जैसे कहा जाता है,'हरिअनंत, हरिकथा अनंता', इसी आधार पर राम की कथा को उसके मूल्य की रक्षा करते हुए उसके पश्चात् आने वाले विभिन्न रचनाकारों ने अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया। गोस्वामी तुलसीदास ने राम कथा को भक्ति का व्यावहारिक केंद्र-बिंदु बना दिया। उसके राम भक्ति के आधार हैं और उनका जीवन ही अनुकरणीय है।

गोस्वामी तुलसीदास के बाद भी रामकथा को विभिन्न रूपों में अनुभव किया जाता रहा और जहाँ-जहाँ इस विराट भावभूमि में कवियों की दृष्टि से जो स्थल मानवीय दृष्टि से उपेक्षित रह गये, उन्हें केंद्र बना कर राम की कथा में अन्य आयाम जोड़ने का उपक्रम भी जारी रहा। राम कथा जहां हमारे सामने भक्ति का बहुत बड़ा मूल्य प्रस्तुत करती है, वहाँ कुछ ऐसे प्रश्न भी छोड़ देती है जिनका कोई तर्क पूर्ण समाधान नहीं मिल पाता और जब मन किसी बात को मानने से मना कर दे और उसका तर्कपूर्ण समाधान ना हो, तब गहरे रचनात्मक द्वन्द्व की रचना होती है। अनेक रचनाकारों द्वारा रामकथा के विभिन्न पात्रों को उस कथा के मूल आदर्श को केंद्र में रख कर मनन और अनुसंधान से साहित्य विधा के विभिन्न रुपों में चित्रित करने का प्रयास किया गया है, क्योंकि राम कथा में प्रत्येक पात्र किसी न किसी जीवन दृष्टि या मूल्य को भी प्रतिपादित करता है। राम गाथा के विशिष्ट पात्रों पर उनका दृष्टिकोण रहा है कि उस विराट को अपनी दृष्टि से अपने लिए किस रूप में सार्थक कर सकते हैं। पुरा कथा की दृष्टि से जो सच हो सकता है और आधुनिक दृष्टि से जो स्वीकार भी हो, ऐसे तंत्रों को कल्पनाशीलता से रचते हुए प्रायःध्यान रखा गया कि मनुष्य के अंतर का उदात्त भाव भी मुखर हो सके। रामायण की महान कालजयी कथा का देश-विदेशों में विशेष लोकप्रिय सांगितिक संस्करण 1950 के दशक में आकाशवाणी के पुणे केंद्र के माध्यम से प्रस्तुत किया गया, जिसे विभिन्न भारतीय भाषा-भाषी लोगों से भी अपार सराहना मिली। 'गीतरामायण' के नाम से प्रसारित ऐतिहासिक तथा अभूतपूर्व कार्यक्रम की प्रस्तुति से लोकप्रियता के कई कीर्तिमान स्थापित हुए।

'गीतरामायण'रामायण के प्रसंगों पर आधारित 56 मराठी गीतों का संग्रह है। यह आकाशवाणी के पुणे केंद्र से सन् 1955-56 में प्रसारित किया गया। इसकी रचना प्रसिद्ध साहित्यकार गजानन दिगंबर माडगूलकर ने की तथा इसे संगीतकार- गायक सुधीर फड़के ने संगीतबद्ध किया। यह अत्यंत लोकप्रिय हुआ और बाद में इसके पाँच हिन्दी अनुवाद एवं एक-एक बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, असमिया, कोंकणी, संस्कृत, सिन्धी तथा तेलुगू अनुवाद भी आए। यह ब्रेल लिपि में भी लिप्यान्तरित किया गया।

संकल्पना

भारत में टेलीविजन की शुरुआत के चार साल पहले 'गीत रामायण' की अवधारणा 1955 में हुई। ऑल इंडिया रेडियो के शुरुआती दिनों में, पुणे केंद्र के निदेशक सीताकांत लाड एक रेडियो कार्यक्रम शुरू करना चाहते थे जो मनोरंजन के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी प्रदान करे। उन्होंने इस संबंध में विख्यात कवि एवं लेखक गजानन दिगंबर माडगूलकर (जिन्हें 'ग-दि-मा' के रूप में जाना जाता है) के साथ अपनी योजना को रेखांकित किया। चूंकि वाल्मीकि रामायण एक प्रमुख भारतीय महाकाव्य है, लाड और माडगूलकर ने उसे गीतों में पेश करने का विचार किया। मराठी एवं हिंदी साहित्य, चित्रपट तथा सामाजिक क्षेत्र में अपनी अलौकिक प्रतिभा से दशकों तक विशिष्ट योगदान देने वाले बहुमुखी व्यक्तित्त्व के धनी माडगूलकर ने अपने मित्र और उस समय के जाने माने संगीत निर्देशक तथा गायक सुधीर फड़के (जिन्हें 'बाबूजी' के नाम से भी जाना जाता है) के साथ यह चुनौती स्वीकार कर ली। वाल्मीकि रामायण में महर्षि वाल्मीकि द्वारा लगभग 28 हजार श्लोकों के माध्यम से निरूपित की गई राम कथा को माडगूलकर और फड़के ने केवल 56 गीतों में प्रस्तुत करने तथा हर सप्ताह एक साल तक एक नया गीत पेश करने की योजना बनाई। हर गाना पहले शुक्रवार की सुबह और फिर शनिवार और रविवार की सुबह 8.45 से 9.00 बजे के बीच प्रसारित किया जाता। कार्यक्रम की शुरुआत में एक वर्ष की कालावधि(52 गीतों के साथ) तथा आखिरी गीत 'त्रिवार जयजयकार, रामा' की योजना थी, जहां राम राजा बन जाते हैं। लेकिन 1955 के हिंदू कैलेंडर में अधिक मास था। इसलिए इस श्रंखला को कुल 56 तक बढ़ाने के लिए चार गाने जोड़े गए थे। आखिरी गीत 'गा बाळांनो, श्रीरामायण' बना और राम के राज्याभिषेक के बाद की कहानी भी जोड़ी गई। गीतों की संख्या के अलावा संगीत, वादक तथा गायकों का चुनाव बाबूजी की पसंद पर छोड़ दिया गया और माडगूलकर को कलात्मक स्वतंत्रता दी गई, जिससे वो कहानी के चुनिंदा प्रसंगों के माध्यम से निहित संदेश व्यक्त कर सके।

'गीतरामायण' का यह कार्यक्रम पहले वर्ष प्रतिपदा अर्थात् गुढ़ीपाड़वा के अवसर पर शुरू होने वाला था, लेकिन बाद में राम नवमी के दिन प्रारम्भ हुआ। दिनांक 1 अप्रैल 1955 की सुबह आठ बजकर 45 मिनट पर इस कार्यक्रम का पहला गीत 'कुश लव रामायण गाती' प्रसारित किया गया। इस संबंध में यह बताया जाता है कि माडगूलकर ने पहला गीत लिख कर रिकॉर्डिंग के एक दिन पहले फड़के को दिया था; हालांकि, वह गीत कहीं खो गया। प्रसारण से कुछ समय पूर्व माडगूलकर ने पंद्रह मिनट में फिर से उस गीत को याद किया और लिखा ताकि फड़के संगीत का निर्माण कर सकें। यद्यपि वाल्मीकि 'गीत रामायण' के लिए मुख्य प्रेरणा थे, लेकिन माडगूलकर ने एक अलग कथा प्रारूप चुना। उन्होंने छंदों की लचीली संख्या (पाँच से ग्यारह छंदों में, अलग-अलग लंबाई की तीन या चार पंक्तियों के साथ) के साथ एक सरल गेय प्रारूप का उपयोग किया । गाने का मीटर भावगीत के समान था, प्रत्येक पंक्ति में लगभग समान संख्या में मात्राएं थी। मीटर भी कथन और गाने को गाने वाले पात्रों के अनुकूल था। माडगूलकर ने कथा, वर्णनात्मक और सांप्रदायिक गीतों सहित विभिन्न स्वरूपों का उपयोग किया। उनके गीतों के लिए उनकी प्रशंसा की गई और उन्हें 'आधुनिक वाल्मीकि' कहा गया और 'गीत रामायण' को माडगूलकर की साहित्यिक श्रेष्ठता का उत्कर्ष बिंदु माना गया।

माडगूलकर का कथा प्रारूप वाल्मीकि की कहानी से अलग था, जहां उन्होंने राम और सीता के राज्याभिषेक के साथ श्रंखला को समाप्त नहीं किया। उन्होंने इसमें राम द्वारा सीता का परित्याग और जुड़वां राजकुमार, लव और कुश को जन्म देना भी शामिल किया। हालांकि, उन्होंने राम के दरबार में सीता के अंतिम टकराव और उन्हें पृथ्वी में प्रवेश करने के अंतिम प्रकरण को शामिल नहीं किया। माडगूलकर ने श्रंखला को 'गा बाळांनो, श्रीरामायण' गीत के साथ समाप्त किया, जिसे वाल्मीकि ने आवाज दी थी, जहां वह अपने शिष्यों, लव और कुश से कहते हैं कि उन्हें राम के सामने रामायण का पाठ कैसे करना चाहिए। जाहिर है, यह उन गीतों के चक्र को भी पूरा करता है, जहां इसकी शुरुआत हुई थी, जिसमें लव और कुश राम के दरबार में गा रहे थे।

माडगूलकर ने रामायण को नई व्याख्या या अर्थ प्रदान करने का कोई प्रयास नहीं किया, लेकिन सरल और काव्यात्मक प्रारूप में एक ही कहानी को बताया। अहिल्या और शबरी जैसे पात्रों को शामिल करने के साथ, उन्होंने भक्ति की भावनाओं को शामिल किया और सीता और राम के विवाह के प्रसंग को माया और ब्रह्म के मिलन के रूप में वर्णन करते हुए कहानी को दिव्य स्पर्श दिया। उन्होंने रामायण के सभी सात अध्यायों या काल के गीतों की रचना की। 56 गीतों में से, कवि ने बालकांड पर बारह गीत, अयोध्या कांड पर सात, अरण्य कांड पर चौदह, किष्किंधा कांड पर तीन, सुंदर कांड पर चार, युद्धकांड पर बारह और उत्तर कांड पर तीन गीत लिखे।

जैसे ही यह श्रंखला लोकप्रिय हुई, पुणे में दैनिक समाचार पत्रों ने पहले प्रसारण के बाद हर हफ्ते नए गीत के पाठ को छापना शुरू किया। इन छप्पन कविताओं के पाठ का पहला आधिकारिक संस्करण और उनके गद्य कथन को विजयादशमी के अवसर पर 3 अक्तूबर 1957 को प्रकाशन प्रभाग,नई दिल्ली के निदेशक द्वारा पॉकेट साइज़ में आकाशवाणी के लिए प्रकाशित किया गया।

संगीत और गायन

संगीत निर्देशक सुधीरफडके ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के रागों पर आधारित गीतों की रचना की, जिनमें भूप, भीमपलासी और

मधुवंती शामिल हैं। प्रत्येक गाने की राग और ताल को घटना के समय और कथा के मूड के अनुसार चुना गया था। उदाहरण के लिए,'चला,राघवाचला' गीत को एक बिभास (सुबह) राग के रूप में बनाया गया है और गीत सुबह में होने वाली एक घटना का वर्णन करता है। "आजमीशापमुक्तझाले" और 'याचका, थांबूनकोदारात' यह गीत किसी विशिष्ट राग पर आधारित नहीं हैं, लेकिन प्रत्येक गीत में कई रागों को शामिल किया गया है।

इन गीतों के गायक, जिनमें वसंतराव देशपांडे, माणिक वर्मा, सुरेश हलदनकर, राम फाटक और लता मंगेशकर शामिल थे, भारतीय शास्त्रीय संगीत की मुखर शैली से परिचित थे। फड़के ने राम के लिए सभी गीतों को आवाज दी और जाने-माने किराना घराने की गायिका माणिक वर्मा ने सीता के चरित्र को आवाज दी। लता मंगेशकर ने सीता के लिए एक गीत गाया, "मजसांग लक्ष्मणा", जिसमें सीता ने राम से उनके परित्याग के बारे में सवाल किया, लेकिन उनका प्रश्न अनुत्तरित रहा।

बाबूजी ने भावानुरूप शब्द प्रधान गीत-संगीत तथा गायन की अपनी परिपाटी को 'गीतरामायण 'में विशिष्टता के साथ चरितार्थ किया। इसमें रामकथा के विभिन्न प्रसंग तथा उसके पात्रों के भावों की समुचित अभिव्यक्ति के लिए अनुरूप शास्त्रीय रागों को बाबूजी ने चुना। गीतों के शब्दों के प्रवाह तथा प्रभाव को कायम रखते हुए प्रयुक्त इन रागों के माध्यम से सामान्य रसिक जनों के लिए सुलभ रागमाला के रूप में 'गीतरामायण' निखरकर उभर आया। इसके गीत-संगीत का परमोच्च बिंदु माने जाने वाले "पराधीन आहे जगती पुत्र मानवाचा" इस गीत के बारे में यह बताया जाता है, कि बाबूजी ने पहले इस गीत के लिए राग दरबारी कानडा का चुनाव किया था। किंतु इस गीत के मूल प्रसंग में निहित तत्व चिंतन की व्याप्ति, वैश्विक मूल्य और शब्द सामर्थ्य की अभिव्यक्ति इस गीत में नहीं हो पा रही थी, यह जान कर उन्होंने ध्वनि मुद्रण के आधे घंटे पहले उसे बदल कर यमन कल्याण राग की योजना की। उन्होंने अपने वादकों को केवल ध्रुपद की संगीत रचना समझा कर दस छंदों के इस गीत को सीधे ध्वनि मुद्रित किया और साथ ही इसे तत्काल प्रसारित भी किया गया। शास्त्रीय संगीत की महफिल में इस प्रकार की रस निष्पत्ति निष्णात गायकों द्वारा की जाती है, किंतु सुगम संगीत के क्षेत्र में इस प्रकार से समय पर गीत का संगीत बनाकर प्रयुक्त करना यह प्रायः भारतीय संगीत में एकमेव उदाहरण होगा। इसके पश्चात् अन्य महापुरुष एवं देवी-देवताओं के चरित्र कथन के लिए अनेक सांगितिक कार्यक्रमों की रचना की गई, किंतु 'गीतरामायण' जैसी अपार लोकप्रियता किसी भी संगीत-काव्य-शिल्प को नहीं मिली।

'गीत रामायण' में रामायण के कुल 32 पात्रों को आवाज़ दी गई माडगूलकर ने राम, सीता, हनुमान-वानरभगवान और राम के

भक्त - और लक्ष्मण (राम के भाई) जैसे पात्रों की भावनाओं को व्यक्त किया; उन्होंने महाकाव्य में अन्य सहयोगी पात्रों को आवाज देने का भी प्रयास किया। वानरों को एक गीत दिया गया ('सेतूबांधा रे सागरी') जिसमें समुद्र पर एक पुल का वर्णन किया गया था जिसके माध्यम से राम और उनकी सेना समुद्र को पार कर लंका पहुँच सके। कवि ने इस गीत में संयुक्त श्रम की महत्ता का वर्णन किया और यह उस सिद्धांत का एक उदाहरण था, 'संगठन में शक्ति है'। निषादराज गुहा (केवती के राजा, गंगा नदी के किनारे स्थित राज्य) और गंगा नदी को पार करने में राम की मदद करने वाले नाविकों ने खुद को 'नकोस नौके परत फिरु' में व्यक्त किया। रामायण के रचयिता वाल्मीकि को भी राम के पुत्रों कुश और लव के साथ एक गीत (अंतिम गीत, 'गा बाळांनो, श्रीरामायण') दिया गया, जो राम के सामने आने से पहले उनका मार्ग दर्शन कर रहे थे।

'गीत रामायण' के नायक होने के नाते, माडगूलकर ने राम के विभिन्न भावों और मनोदशाओं को व्यक्त किया; वे 'गीत रामायण' में दस गीतों के साथ सबसे अधिक आवाज वाले पात्र थे, उसके बाद सीता आठ गीतों के साथ थीं। उन्होंने राम को भावनाओं से भरे एक जटिल चरित्र के रूप में चित्रित किया, फिर भी पारंपरिक गुण और एक वचन की पवित्रता से बंधे।

माडगूलकर ने राम के व्यक्तिगत नैतिक दुविधाओं ("वालिवध ना, खलनिर्दालन" और "लीनते,चारुते,सीते") में उनके साहस ("नभाभेदुनि नादचालले")को आवाज दी। उन्हें अपने भाइयों और माताओं के साथ धैर्य रखने के लिए धीर-गंभीर दिखाया गया ("पराधीन आहे जगती पुत्र मानवाचा") में, पिता और ऋषियों के आज्ञाकारी ("चला, राघवा चला" में), युद्ध के मैदान पर वीर और वानर राजा के साथ काम करते समय राजनयिक("वालिवध ना, खलनिर्दालन") में माडगूलकर के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपनी मानवीय कमजोरियों के साथ राम की दिव्यता को सफलतापूर्वक दिखाया। उन्हें सीता विरह में ("कोठे सीता जनकनंदिनी") विचलित दिखाया गया और लक्ष्मण की मौजूदगी में शोकविव्हल("हीतिच्यावेणीतीलफुले") में। एक अन्य स्थिति में, उन्होंने अपनी सेना के सामने सीता से कुछ दिल दहला देने वाले शब्द बोले, जिसमें उन्होंने सभी घटनाओं के लिए उन्हें दोषी

ठहराया ("लीनते, चारुते, सीते" में)और फिर उन्हें शपथ के साथ अपने व्यवहार की व्याख्या करते हुए भी दिखाया गया, सीता के प्रति निष्ठा की स्वीकारोक्ति ("लोकसाक्षशुद्धीझाली") में। राम की माँ कौशल्या ने तीन गीत गाए; उनके भाई भरत,पिता दशरथ, हनुमान, लक्ष्मण, राक्षस शूर्पनखा (रावण की बहन), राम के गुरु-ऋषि विश्वामित्र और कुश-लव के दो-दो गीत हैं। रामायण के केंद्रीय विरोधी, राक्षस-राज रावण को एक भी गीत नहीं दिया गया; उनकी दमनकारी उपस्थिति को अन्य वर्णों (जैसे रावण के दैत्य भाई कुंभकर्ण ने "लंके वरकाळ कठीणआला" में गाया) में गद्य कथन, काव्यात्मक विवरण और गीतों में व्यक्त किया गया। 1956 के मार्च में 'गीत रामायण' का मूल प्रसारण समाप्त होने के बाद, पुनः प्रसारण के अनुरोध रेडियो स्टेशन पर लगातार पहुँचने लगे। ऑल इंडिया रेडियो ने श्रोताओं की भारी मांग के कारण यह साप्ताहिक गीतों की पूरी श्रृंखला दोहराई। प्रसारण के बाद, फड़के ने चयनित गीतों के सार्वजनिक संगीत कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये। पहला सार्वजनिक कार्यक्रम दिनांक 28मई 1958 को पुणे के वाकडेवाडी परिसर में स्थित "पंचवटी नामक माडगूलकर बंगले में आयोजित किया गया था। देश-विदेशों में विभिन्न स्थानों पर बाबूजी ने इन गीतों के एक हजार आठ सौ से अधिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया। 1979 में पुणे के न्यू इंग्लिश स्कूल में आठ रातों के लिए 'गीतरामायण' का रजत जयंती समारोह हुआ। तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, भारत के तत्कालीन उप-प्रधान मंत्री यशवंतराव चव्हाण, फिल्म निर्देशक बासु भट्टाचार्य, अभिनेता दादा कोंडके और विख्यात शास्त्रीय गायक भीमसेन जोशी तथा किशोरी आमोणकर के साथ अन्य गण्यमान्य व्यक्ति भी समारोह में शामिल हुए। इस में विविध भारतीय भाषाओं के गीतों को एक के बाद एक प्रस्तुत किया गया, जिन्हें लोगों से काफी सराहना प्राप्त हुई। पहले बाबूजी एक हिंदी गीत पेश करते थे उसके बाद बांग्ला या संस्कृत का वही गीत प्रस्तुत किया जाता था इससे इस कार्यक्रम की लोकप्रियता में चार चांद लगे।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तत्कालीन केंद्रीय मंत्री तथा राष्ट्रवादी कांग्रेस के प्रमुख शरद पवार और शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के साथ स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लिया। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता कला निर्देशक नितिन चंद्रकांत देसाई ने रामायण के दृश्यों को चित्रित करते हुए मंच तैयार किया। इस कार्यक्रम में मूल 'गीत रामायण' के सभी गीतों को प्रस्तुत किया गया, जो माडगूलकर के पुत्र आनंद माडगूलकर, श्रीधर फड़के, सुरेश वाडकर, उपेंद्र भट्ट, पद्मजा फेणाणी जोगलेकर और अन्य द्वारा प्रस्तुत किए गए।

जैसे ही रेडियो कार्यक्रम लोकप्रिय हुआ, पुणे में दैनिक समाचार पत्रों ने प्रत्येक सप्ताह नए गीतों के बोल छापने शुरू कर दिए। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत प्रकाशन विभाग ने एक पुस्तक के रूप में परिचयात्मक टिप्पणियों के साथ गीत और अंश भी संकलित किए। 179 पृष्ठ की यह पुस्तिका, जिसकी कीमत दो रुपये थी, दिनांक 3 अक्तूबर 1957 को विजयादशमी के अवसर पर प्रकाशित की गई । 1965 में, एच.एम.वी. ने सुधीर फड़के की आवाज की विशेषता वाले दस एलपी जारी किए। 1968 में ग्रामोफोन कंपनी ऑफ इंडिया ने 10-कैसेटों का सेट जारी किया, जिसमें बाबूजी की आवाज थी। माडगूलकर के बेटे, आनंद ने एक निजी चैनल पर गीत रामायण के अट्ठाईस एपिसोड का प्रदर्शन करते हुए एक टेलीविजन संस्करण तैयार किया। उन्होंने रेडियो कार्यक्रम बनाने का वर्णन करते हुए 'गीत रामायणाचे रामायण' नामक एक पुस्तक भी लिखी। 'गीत रामायण' के लाइव शो अभी भी रामनवमी के अवसर पर निर्मित होते हैं।

'गीतरामायण' के प्रसारण के पश्चात साढ़े छह दशकों के बाद आज भी देश-विदेशों में रहने वाले भारतीय लोगों में इस महान रचना के प्रति आकर्षण कायम है। रेडियो के साथ-साथ ग्रामोफोन, टेलीविजन, कम्प्यूटर, कोम्पैक्ट डिस्क, मोबाइल एप, इंटरनेट, फेसबुक तथा अन्य सामाजिक माध्यमों द्वारा प्रसारित होने वाला यह प्रायः अपनी तरह का एकमेव कलाविष्कार होगा। माडगूलकर और फडके के अलावा आकाशवाणी प्रस्तुतकर्ता सीताकांत लाड, संगीत संयोजक प्रभाकर जोग के साथ गायक-गायिकाओं में माणिक वर्मा, लता मंगेशकर, ललिता फडके, मालती पांडे, वसंत राव देशपांडे, गजानन वाटवे, रामफाटक, सुरेश हलदण कर, बबन रावनावडीकर,चंद्रकांत गोखले, वी. एल. इनामदार, प्रमोदिनी जोशी, मंदाकिनी पांडे, योगिनी जोगळेकर, कुमुदिनी पेडणेकर, सुमनमाटे और जानकी अय्यर को भी इसकी लोकप्रियता का श्रेय जाता है।

बाबूजी के पुत्र श्रीधर फड़के ने अपने पिता की इस विरासत को आगे बढ़ाया है। देश-विदेश में विभिन्न स्थानों पर वह 'गीतरामायण' के कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं।

आज भी श्रीधर फड़के और आनंद माडगूलकर युवापीढ़ी को 'गीतरामायण' की अद्भुत रचना से रूबरू करवाने के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं। नई पीढ़ी से सीधे संपर्क स्थापित करने के लिए कम्प्यूटर तथा संवाद की आधुनिक प्रौद्योगिकी का सुव्यवस्थित ढंग से उपयोग किया जा रहा है। इस के साथ-माडगूलकर के साहित्यिक योगदान को विशेष रूप से परिलक्षित करने वाली स्वतंत्र वेबसाइट के माध्यम से उनके चुनिंदा गीतों का संकलन भी उपलब्ध कराया गया है। यह माना जा रहा है कि आज की युवा पीढ़ी, जो 'गीतरामायण' के संस्कारों के साथ बड़ी नहीं हुई, वह भी इस महाकाव्य के रचना की बारीकियों को समझेगी और आज के अलग माहौल में भी उन्हें उतना ही प्रस्तुत और समयोचित पायेगी।

*****

भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम : वो शुरुआती दिन

राधाकांत अंथवाल, प्रधान संपादक
विज्ञान परिचर्चा

देशभर में स्वतंत्रता प्राप्ति का 75वां वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। इस 15 अगस्त को इस महोत्सव के समापन के 5 दिन पहले भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहा होगा, तब देश में एक नए महोत्सव का शुभारंभ होगा। भारत सरकार द्वारा 10 अगस्त 1948 को परमाणु ऊर्जा आयोग (एटॉमिक एनर्जी कमीशन) की स्थापना के साथ ही सरकारी स्तर पर देश में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। होमी जहांगीर भाभा परमाणु ऊर्जा आयोग के संस्थापक अध्यक्ष बने।

दरअसल भाभा ने 1943 से ही देश में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम प्रारंभ करने के प्रयास शुरू कर दिए थे। वह उस समय बंगलौर (अब बेंगलुरू) स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत थे(उसी दौरान इस संस्थान से भौतिकी के नोबेल पुरस्कार विजेता (1930) चंद्रशेखर वेंकटरामन भी संबद्ध थे)। भाभा ने महसूस किया कि भारत में नाभिकीय भौतिकी (न्यूक्लियर फिजिक्स), ब्रह्मांड किरणों, ऊर्जा भौतिकी, आदि विषयों पर मौलिक अनुसंधान के लिए आवश्यक सुविधाओं की कमी है। इस सिलसिले में उन्होंने जेआरडी टाटा से विचार-विमर्श किया। भाभा ने सुझाव दिया कि सर दोराब जी टाटा ट्रस्ट को इस मामले में पहल करनी चाहिए। इस संदर्भ में आगे उन्होंने 12 मार्च, 1944 को ट्रस्ट को एक पत्र सौंपा। पत्र में लिखा थाः "आज से कुछ दशकों बाद विद्युत ऊर्जा उत्पादन के लिए जब नाभिकीय ऊर्जा सफलता पूर्वक प्रयुक्त होने लगेगी तो भारत को (उस समय) विशेषज्ञों के लिए विदेशों की ओर नहीं देखना होगा, अपितु वे यहीं आसानी से उपलब्ध होंगे"। यही ऐतिहासिक पत्र भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का पहला दस्तावेज बना। सर दोराब जी टाटा ट्रस्ट के ट्रस्टियों ने भाभा के सुझाव को स्वीकार करते हुए इस प्रयोजन के लिए एक संस्थान प्रारंभ करने और उसकी आर्थिक जिम्मेदारी उठाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। तत्कालीन मुंबई सरकार भी इस में संयुक्त संस्थापक बनने को तैयार हुई और दोनों की साझेदारी से 1 जून 1945 को टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफआर) की स्थापना हुई। भाभा इस संस्थान के संस्थापक निदेशक बने। इस संस्थान का संचालन शुरू के कुछ महीनों में तो इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलौर के परिसर से किया और फिर उसी वर्ष इसे इसके निर्धारित स्थान मुंबई स्थानांतरित कर दिया गया।

दरअसल टीआईएफआर में ही देश के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की शुरुआत हुई, इसीलिए इस संस्थान को भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का पालना कहा जाता है। भारत में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की शुरुआत द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हिरोशिमा और नागासाकी में क्रमशः 6 अगस्त और 9 अगस्त 1945 में गिराए गए परमाणु बमों से भी पहले हो चुकी थी। हम सबके लिए विशेष गौरव की बात यह है कि हमारे देश ने परमाणु के मंथन का शुभारंभ ऊर्जा जैसे अमृत के लिए किया, बम जैसे विष के लिए नहीं। 1938 में जर्मनी के वैज्ञानिक ओटोहान और फ्रिट्जस्ट्रास मैन एवं ऑस्ट्रेयाई मूल की स्वीडिश महिला वैज्ञानिक लीजमाइटनर और उनके भतीजे ऑटोफ्रिश ने न्यूट्रॉन कणों से यूरेनियम के परमाणु को दो भागों में विखंडित करने में सफलता प्राप्त करके नाभिकीय विखंडन की खोज करने में सफलता प्राप्त की। इसके बाद दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान दिसम्बर 1942 में शिकागो, अमेरिका में स्वनिर्भर नाभिकीय विखंडन श्रृंखला अभिक्रिया (सेल्फ सस्टेनिंग न्यूक्लियर चेन रिएक्शन) का प्रयोग सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसके मात्र 16 महीने के अंतर में भाभा ने परमाणु ऊर्जा के संदर्भ में नाभिकीय विखंडन के भावी उपयोगों की संभाव्यता के सामयिक और सटीक आकलन करके अतिगोपनीयता से चल रहे परमाणु कार्यक्रमों को जानकर-समझ कर अपने देश के लिए, देश के औद्योगिक विकास के लिए ऊर्जा आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगाते हुए भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की आधारशिला रखी और उसे काफी आगे तक ले गए। इसीलिए इस दूरदर्शी भौतिक विज्ञानी को भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का जनक माना जाता है।

किसी संस्थान को शुरू करने से पहले उसके लिए आवश्यक मानव संसाधन की व्यवस्था करना भी महत्वपूर्ण पक्ष है। भाभा

ने न केवल तात्कालिक आवश्यकता के अनुसार टीआईएफआर में काम करने के लिए वैज्ञानिकों को जुटाया, बल्कि भावी आवश्यकताओं के अनुसार भी वैज्ञानिकों को तैयार किया। इसका एक उदाहरण हैं राजा रामण्णा। बात 1944 की है,टीआईएफआर की स्थापना से पहले की। भाभा मैसूर राज्य के अतिथि गृह में अपनी माताजी के साथ ठहरे हुए थे। वहां उनसे मिलने एक स्थानीय तरुण राजारामण्णा आया। वह मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, तांबरम में भौतिकी-बीएससी ऑनर्स के अंतिम वर्ष का छात्र था। भाभा को पता चला कि वह पियानो भी बजाता है और मैसूर के राजदरबार में भी उसके संगीत कार्यक्रम होते हैं। संगीत प्रेमी भाभा और उनकी माताजी ने उसका पियानो वादन सुना और उसकी खूब प्रशंसा की। पढ़ाई-लिखाई की बात आई तो भाभा ने रामण्णा को बी.एस. सी. ऑनर्स के बाद नाभिकीय भौतिकी में उच्चशिक्षा प्राप्त करने का सुझाव दिया। भाभा ने उसे जे एन टाटा स्कॉलरशिप दिलाने में भी मदद की, जिससे उसे किंग्स कॉलेज लंदन में नाभिकीय भौतिकी के अंतर्गत नाभिकीय विखंडन (न्यूक्लियरफिशन) पर पी.एच.डी. करने का अवसर मिला। अभी उसकी पीएच.डी. पूरी भी नहीं हुई थी कि 1947 में लंदन दौरे के दौरान भाभा पुनः रामण्णा से मिले और उसके सम्मुख पी. एच.डी. के बाद टीआईएफआर में काम करने का प्रस्ताव रखा, जिसे उसने तुरंत स्वीकार कर लिया। 1948 में रामण्णा को पीएचडी की डिग्री प्राप्त हुई। इस बीच परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना हो चुकी थी और भाभा ने रामण्णा को इस आयोग की छात्रवृत्ति के अंतर्गत नाभिकीय विखंडन पर और विस्तृत अध्ययन के लिए लंदन में ही रुकने को कहा। रामण्णा 1949 में भारत वापस आए और यहां टीआईएफआर में नाभिकीय भौतिकी में अपनी अनुसंधान यात्रा शुरू की। यही राजा रामण्णा आगे चलकर भारतीय परमाणु कार्यक्रम के एक प्रमुख वास्तुकार बने।

परमाणु ऊर्जा आयोग द्वारा 3 जनवरी 1954 को परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान, ट्रॉम्बे की स्थापना की गई। 1948 से 1954 तक परमाणु ऊर्जा आयोग भारत सरकार के प्राकृतिक संसाधन और वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय के अंतर्गत कार्य कर रहा था। 4 अगस्त 1954 को परमाणु ऊर्जा विभाग बनाया गया और आयोग के अधीनस्थ कार्य कर रही सभी एजेंसियां-संस्थाएं आदि परमाणु ऊर्जा विभाग को स्थानांतरित कर दी गईं। इस विभाग को सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय के अधीन कर दिया गया। परमाणु ऊर्जा विभाग परमाणु और इससे जुड़े अनुसंधान के लिए अन्य संस्थानों को वित्तीय सहायता भी प्रदान करता है। विभाग के कार्यों में परमाणु अनुसंधान और विकास, विद्युत उत्पादन तथा उद्योग एवं खनिज अनुसंधान आदि सम्मिलित हैं। यह विभाग देश के विभिन्न संस्थानों में चल रहे अनुसंधान कार्यों की देखरेख एवं समन्वय का कार्य भी करता है।

भारत न्यूक्लियर रिएक्टर अनुसंधान से लेकर उनके निर्माण एवं संचालन में पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर है। अप्सरा भारत का पहला रिएक्टर था। एक मेगावाट क्षमता के इस रिएक्टर को भारत में ही डिजाइन किया गया था और इसे देश में ही बने कल-पुर्जों से तैयार किया गया था। यह स्विमिंगपूल किस्म का था, इसलिए इसे स्विमिंगपूल रिएक्टर भी कहा जाता है। 1955 में यूनाइटेड किंगडम एटॉमिक एनर्जी अथॉरिटी और भारत के परमाणु ऊर्जा विभाग के बीच हुए एक समझौते के अंतर्गत ब्रिटेन द्वारा अप्सरा रिएक्टर के लिए यूरेनियम ईंधन की आपूर्ति की गई। पूर्णतया स्वदेशी अप्सरा रिएक्टर को एक साल से भी कम अवधि में तैयार करके 4 अगस्त 1956 को चालू यानी क्रांतिक (क्रिटिकल) कर दिया गया। यह एशिया में भी पहला रिएक्टर था। इसके बाद 1960 में साइरस(CIRUS—Canada-India Reactor Utility Services) और 1961 में जरलीना रिएक्टर चालू हुए।

भाभा के नेतृत्व में भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम तेजी से प्रगति कर रहा था कि अचानक 24 जनवरी 1966 को एक हवाई दुर्घटना में उनका निधन हो गया। देश और विज्ञान जगत के लिए यह एक बहुत बड़ा आघात था। ऐसे समय में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की जिम्मेदारियों को संभाल रहे विक्रम साराभाई को भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की बागडोर भी सौंपी गई। भाभा की मृत्यु के बाद उनके सम्मान में परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान को भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर – बार्क) नाम दिया गया।

साराभाई ने परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष के रूप में कुशल नेतृत्व प्रदान करते हुए भाभा के कार्यों को आगे बढ़ाया। देश में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम और अंतरिक्ष कार्यक्रम तेजी से आगे बढ़ ही रहे थे कि 30 दिसम्बर 1971 को साराभाई का भी आकस्मिक निधन हो गया। देश ने बहुत ही कम अवधि में दो महान वैज्ञानिकों को खो दिया, जो कि अपूरणीय क्षति थी।

शेष पृष्ठ 78 पर

कहाँ से लाते हो इतना तेज़, सौंदर्य और अहसास...अमलतास!!

संजीव शर्मा, भोपाल

गर्मियों, लॉक डाउन और कोरोना संक्रमण के सर्वव्यापी भय के बीच घर से ऑफिस आकाशवाणी भोपाल की चंद कदमों की दूरी भी कार से करने के दरम्यान एक पेड़ ने बार बार अपनी ओर खिंचने पर मजबूर किया और फिर क्या था उसकी मुहब्बत में अपन पैदल चलने को विवश हो गए वैसे इश्क़ भी तो यही करता है। मैंने पहले कभी इतने ध्यान से इस पेड़ को फूलते नहीं देखा क्योंकि प्रकृति से थोड़ा सा भी प्यार करने वाले हर शहर/इलाक़े में चटक केसरिया-लाल फूलों से लदे गुलमोहर और रंग बिरंगे तितलियों से फूलों से भरे बोगनबेलिया आपको कुछ और देखने ही नहीं देते लेकिन जब तपती दोपहर में सूरज से निडर होकर नैन मटक्का करते इन फूलों को देखा तो फिर न मन माना और

“पीले झूमरों से सजा
महल सा लगता है
मई की गर्मी में
दिल को सुकून बाँटता
बस यूँ ही मुड़ जाते कदम
उस रमणीय वृक्ष के पास
कौतूहल से भरा
यह मन चिल्लाया था
कौन है यह मनमोहन
कौन है यह वृक्षों में
उगलता स्वर्ण?
अमलतास!!”

न ही मोबाइल का कैमरा।..आख़िर सूरज की तपिश से उसका रंग लेकर मनमोहक नजारों वाले अमलतास में कुछ तो अलग है,जो इसे खास और बहुत खास बनाता है। तभी तो कवियत्री काव्या ने अपने पेज पर लिखा हैः

..जैसे बृहस्पतिवार/गुरुवार को पीले कपड़ों में दफ्तरों-बाजारों में सौंदर्य बिखरा रहता है वैसे ही जब आँखें सड़कों पर बिखरे अमलतास के खिलखिलाते पीले फूलों पर ठहरी तो हाथ इंटरनेट पर इसका पता-ठिकाना(तथ्य) जानने के लिए मचल उठे। फिर

गूगल गुरु ने बताया कि अपन तो इसके नए-नए आशिक़ हैं और हमसे पहले तमाम बड़े कवि-लेखक अमलतास से इश्क़ लड़ा चुके हैं। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' ने अपनी कविता में पूछा हैः

इतराते,यौवन पर इठलाते और क्षण भर सड़कों की झोली को अपनी चपलता से भर देने वाले अमलतास में कुछ तो खास है वरना अप्रैल-मई में किस की मज़ाल है जो सूरज को चुनौती दे सके।

"धरती तपती लोहे जैसी

गरम थपेड़े लू भी मारे ।

अमलतास तुम किसके बल पर

खिल- खिल करते बाँह पसारे ।

पीले फूलों के गजरे तुम

भरी दुपहरी में लटकाए ।

चुप हैं राहें, सन्नाटा है

फिर भी तुम हो आस लगाए ।"

वाकई झूमर से लटकते खिले खिले फूल,अपने रंग पर

अमलतास के बारे में कहा जाता है कि इस पर फूल तभी लगना शुरू होते हैं जब इसकी जड़ें मजबूती से जम जाती हैं अर्थात परिपक्व होने के बाद...बिल्कुल वैसे ही जैसे चालीस साल बाद का इश्क़ गम्भीर /परिपक्व/ स्थायी और हर पल गुदगुदाने वाला। तभी तो शायद कवियत्री मनप्रीत कौर 'मन' को लिखना पड़ा हैः

"अमलतास की तरह महकता है,

मुरझाए से प्राणों में संगीत बुनता है ।

तुम्हारा प्रेम।।"

अमलतास आशिक़ों की ही पसंद नहीं बल्कि औषधि के जानकारों के लिए भी उतना ही खास है। आयुर्वेद के अनुसार, अमलतास के इस्तेमाल से बुखार, पेट की बीमारियां, त्वचा रोग, खांसी, टीबी और

हृदय रोग आदि में लाभ लिया जा सकता है। इसके अलावा, मधुमेह, पीलिया,गठिया,छाले सहित तमाम रोगों के उपचार में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। अब तक मेरी तरह अनजान लोगों के लिए- इसे इंग्लिश में गोल्डन शॉवर और संस्कृत में राजवृक्ष भी कहा गया है। यह मूल रूप से स्वदेशी यानि हमारा अपना है जो म्यामांर से लेकर थाईलैंड तक अपनी मौजूदगी दर्ज कराता है। मजे की बात यह है कि थाईलैंड का यह राष्ट्रीय वृक्ष और फूल दोनों है। अब तो हम अमलतास की मादकता का बैंकाक कनेक्शन स्थापित कर ही सकते हैं। वैसे केरल में भी इसे राजकीय फूल का दर्जा हासिल है। अब फिर बात, इस पर मर मिटने की क्योंकि इन दिनों जब भी आप इसके क़रीब से गुजरते हैं तो यह हौले से आप पर मुट्ठी भर पीले जगमग सितारे बिखेर देता है और बस आप भी 'काव्या' की तरह कह उठते हैंः

"रोक दे राहों में,

ऐसा तुम्हारा मोहपाश।

तुम कैसे इतना खिलखिलाते हो,

कह दो न सुंदर अमलतास।।"

..वैसे तो अंगुलियां भी उतावली हैं और मन भी मचल रहा है कि आज बस अमलतास के नाम कर दिया जाए लेकिन बुद्धि कहती है कल के लिए भी कुछ पल बचाकर रखे जाएं इसलिए समापन रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की इन पंक्तियों के साथ,जो सब कुछ कह देती हैंः

"तुझे देखकर तो लगता है,

जो जितना तप जाता है ।

इन सोने के झूमर –जैसी,

खरी चमक वही पाता है ।

जीवन की कठिन दुपहरी में,

तुझसे सब मुस्काना सीखें ।

घूँट –घूँट पी रंग धूप का,

सब कुन्दन बन जाना सीखें ।"

******

पृष्ठ 75 का शेष

साराभाई की मृत्यु के बाद 1972 में होमी नौशेरवान जी सेठना को परमाणु ऊर्जा आयोग का अध्यक्ष बनाया गया। साथ ही रामण्णा भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के निदेशक बनाए गए। ये दोनों वैज्ञानिक भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को नई ऊंचाइयों की ओर ले गए।

रामण्णा ने देश में अनुसंधान रिएक्टरों के निर्माण से लेकर उनके संचालन के सभी चरणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रिएक्टरों के क्रम में 1972 में पूर्णिमा रिएक्टर चालू हुआ।

अब आया वह ऐतिहासिक दिन–18 मई 1974, आज से ठीक 48 साल पहले जब भारत ने राजस्थान के पोकरण क्षेत्र में अपना पहला भूमिगत परमाणु परीक्षण संपन्न किया। रामण्णा को इस शांतिपूर्ण नाभिकीय विस्फोट परियोजना का दायित्व सौंपा गया था। इस परीक्षण की पूर्ण सफलता ने पूरे विश्व को चकित कर दिया। एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की इस संयुक्त परियोजना को अंतिम समय तक पूर्णतः गोपनीय रखने में भी पूरी कामयाबी मिली। निश्चय ही परमाणु परीक्षण की इस उपलब्धि के साथ भारत का नाम परमाणु शक्ति संपन्न पांच देशों के साथ जुड़ गया। देश और देशवासियों के लिए यह एक गौरवशाली दिन था। तो यह था टीआईएफआर की स्थापना से परमाणु शक्ति बनने तक भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का सफरनामा। **साभार**

******

उत्तराखंड के बढ़ते कदम

ललिता जोशी

हमारे प्रधानमंत्री जी हमेशा आत्मनिर्भर बनने की बात करते हैं। उनका स्वप्न है भारत को आत्मनिर्भर बनाना। माननीय प्रधानमंत्री जी के इस वक्तव्य से बहुत से युवा प्रेरित हुए और वे अपने-अपने छोटे उद्योग लगा रहे हैं या स्टार्टअप्स की ओर बढ़ रहे हैं ताकि वे खुद को आत्मनिर्भर बना सकें और कुछ अन्य लोगों को रोजगार भी प्रदान कर सकें। इसी दिशा में विदेश में रहने वाले उत्तराखंडी युवकों ने उद्यमशीलता की ओर रूचि दिखाते हुए एक कंपनी शुरू की जिसकी अवधारणा पहाड़ी गुड़ियों का उत्पादन था जो विदेशी ब्रांड की गुड़ियों के टक्कर में हो अपनी इस संकल्पना को मूर्त रूप से देने के लिए सबसे पहले उन्होंने अपनी इस गुड़िया का नाम ज्युनाली डॉल रखा। दुबई में रहने वाले दीप नेगी का कहना था कि दुबई में अपनी नौकरी के दौरान जब हम बच्चों का जन्मदिन मनाते थे तो उसमें हम बच्चों को विभिन्न प्रकार के उपहार देते थे जिसमें प्रायः बार्बी डॉल भी शामिल होती थी। ऐसे अवसरों पर मैं हमेशा सोचता था कि क्यूं ना हम पहाड़ी गुड़िया बनाएं जो हमारी संस्कृति, रिवाज़, आभूषण, गीत और संगीत के मिश्रण का प्रतीक हो और एक विचार उत्पन्न हुआ पहाड़ी गुड़िया ज्युनाली के उत्पादन का। श्री नेगी बताते हैं कि टिहरी गांव के विभिन्न स्थानों पर उन्होंने प्रवास किया। उनका मन और हृदय हमेशा पहाड़ों में ही रमा रहा। पलायन पहाड़ों की सबसे बड़ी समस्या है इसी को ध्यान में रखते हुए वो पुनः अपनी जड़ों की तरफ लौटे और उन्होंने अपने दो दोस्तों के साथ मिलकर कंपनी गठित की और इन्होंने इस गुड़िया को बनाने से पहले इस पर काफी शोध किया कि वे अपने डिज़ाईन, कच्चा माल, उत्पादन किस प्रकार एकत्र करेगे, लेकिन उन्हें ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं मिल पा रहा था जो उन्हें अच्छी किस्म का माल दे सके, लेकिन इतने पर भी इन युवाओं ने हार नहीं मानी और अपनी रणनीति की सफलता के लिये उन्होंने विदेश से ही गुड़िया बनाने का बेहतरीन किस्म कच्चा का माल हांगकांग से लेने का निश्चय किया। इन तीनों युवाओं ने रात-दिन एक कर इस गुड़िया पर काम करना शुरू दिया। अब अगली चुनौती थी कि ज्युनाली को किस प्रकार सजाया जाये ताकि वो एकदम पहाड़ी राजकुमारी लगे। उत्तराखंड के कारीगरों से संपर्क कर उन्हें कुमाउंनी,गढ़वाली और जौनसारी वस्त्रों और आभूषणों को बनाने की ट्रेनिंग उनकी निपुणता के अनुसार दी गई।

साथ ही उन्होंने इस गुड़िया में एक मिनट की अवधि का गीत डालने पर भी कार्य शुरू कर दिया और वे इसमें सफल भी हुए। पहाड़ी गुड़िया ज्यूनाली बहुत लचीली है और आधुनिक माता-पिता की ख्वाईशों के अनुसार यह एक नॉन टॉक्सिक खिलौना है। जिसके कारण बच्चों की सेहत पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।

इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए जिक्र करते हैं देहरादून की मशरूम गर्ल नाम से प्रसिद्ध सुश्री दिव्या रावत का। दिव्या रावत

को उत्तराखंड की मशरूम लेडी के नाम से ही जाना जाता है। उनकी प्रसिद्धि विदेशों तक में है।

दिव्या रावत के मानस पटल पर भी उत्तराखंड का पलायन अंकित था। इसीलिये वे भी आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित हुई और उन्होंने अपनी जमी जमाई नौकरी छोड़ी और वापस देहरादून आकर मशरूम की खेती आरंभ की और इसी काम के जरिये

उन्होंने बहुत से लोगों को काम भी दिया। दिव्या रावत ने तीन लाख रुपये के निवेश से यह कार्य वर्ष 2015 में आरंभ किया और आज उनकी आय करोड़ों में है वे लोगों को मशरूम की खेती की जानकारी प्रदान करती हैं। उत्तराखंड में ही आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हुए कदम हैं-एपण गर्ल मीनाक्षी खाती के। बेरोजगारी और पलायन से जूझ रहे उत्तराखंड के युवाओं को मैदानी क्षेत्रों में पलायन से रोकने के लिये पहाड़ की इस बेटी ने खुद ही गांव का रूख किया और इन्होंने अपनी उपस्थिति डिजिटल प्लेटफार्म पर भी दर्ज कराई है। मीनाक्षी खाती ने लुप्त प्रायः होती उत्तराखंड की अनोखी लोक विधा एपण को फिर से सुर्खियों में स्थान दिलाया है। आज एपण चौखटों और पूजा स्थल से विस्तार लेकर पेंटिंग, स्टीकर्स और विभिन्न परिधानों और वस्तुओं में डिज़ाईन के तौर पर प्रयुक्त किए जा रहे हैं जिनकी देश-विदेश में खासी मांग है। मीनाक्षी के इस कार्य से स्थानीय महिलाओं को भी रोजगार उपलब्ध हुआ है। ऐसे बहुत से युवा उद्यमी हैं जिन्होंने कोरोना में रोजगार गंवा दिया और उन्हें अपने घरों को वापस लौटना पड़ा। कोरोना त्रासादी से भी युवाओं को नौकरी से हट कर कुछ प्रेरणा मिली और प्रधानमंत्री का स्वप्न अब मूर्त रूप लेने लगा है।

ऐसे ना जाने कितने ही युवा हैं जो अपने छोटे-छोटे कदमों से आत्मनिर्भर भारत के उद्देश्य को मजबूती प्रदान कर रहे हैं और अपने क्षेत्रों से पलायन को रोकने में भी कारगर सिद्ध हो रहे हैं।

****

> "आत्मनिर्भरता हमें सुख और संतोष देने के साथ-साथ सशक्त भी करती है।
>
> 21वीं सदी, भारत की सदी बनाने का हमारा दायित्व, आत्मनिर्भर भारत के प्रण से ही पूरा होगा ।
>
> इस दायित्व को 130 करोड़ देशवासियों की प्राणशक्ति से ही ऊर्जा मिलेगी।"
>
> -श्री नरेन्द्र मोदी

मन की बात

DELHIN-2012-43376

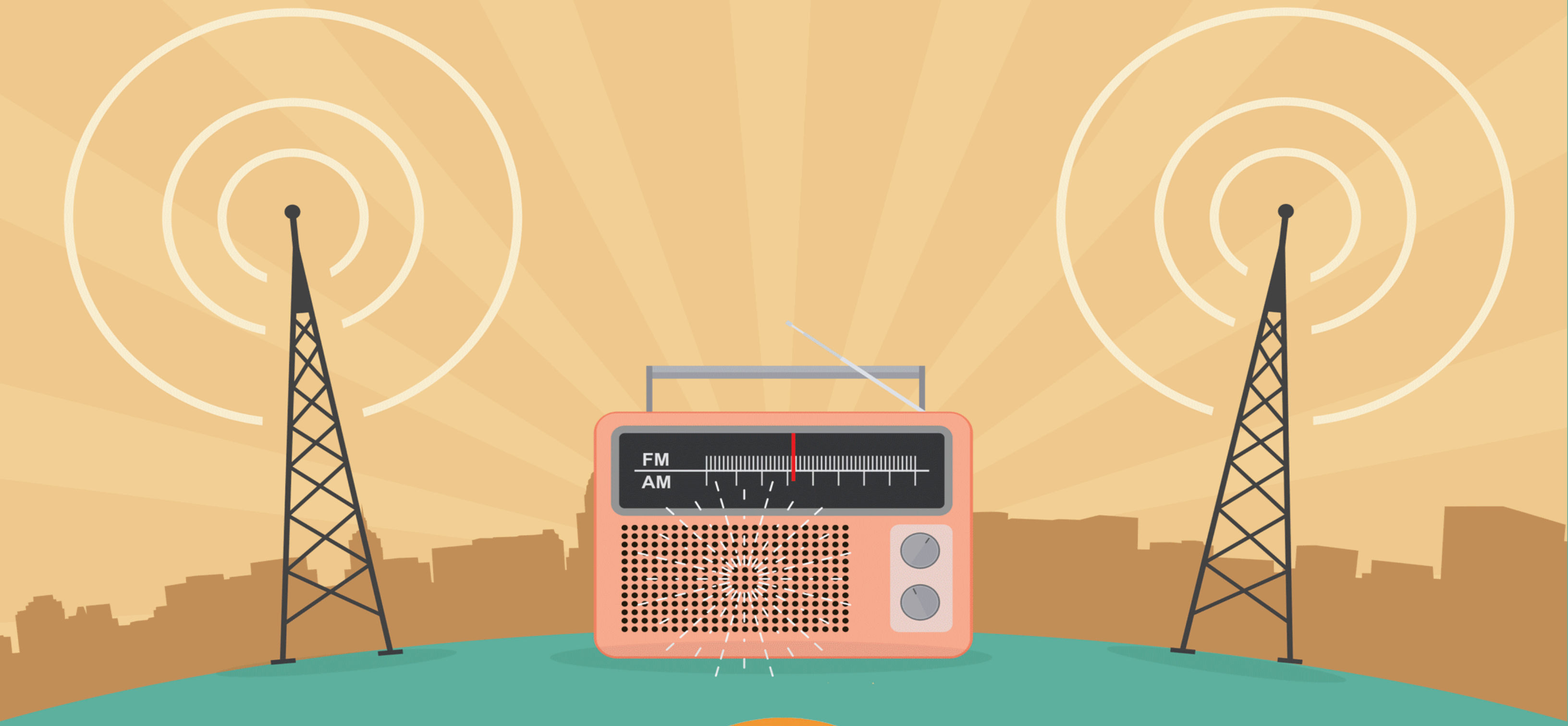

आकाशवाणी समाचार
ALL INDIA RADIO NEWS

आकाशवाणी समाचार

संसद मार्ग, नई दिल्ली - 110001

www.newsonair.gov.in

समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी नव प्रसारण भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001
की ओर से सहायक निदेशक द्वारा प्रकाशित एंव मुद्रित तथा सोनु प्रिंटिंग प्रेस प्रा० लि०
एस–217, मुनिरका, नई दिल्ली–110067 से मुद्रित